KAPIL TAILOR

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल द्वारा जारी, प्रश्न बैंक उत्तर सहित

GPH

प्रश्न बैंक

विषय – हिन्दी : कक्षा–12वीं

य : 3 घण्टे] प्रश्न पत्र : ब्लू प्रिन्ट (Blue Print of Question Paper) [पूर्णांक : 80

क्र.	इकाई एवं विषय–वस्तु	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल प्रश्न
			1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक	
1.	**आरोह भाग – 2 काव्य खण्ड** • पद्य साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ • कवि परिचय • भावार्थ – (संदर्भ, प्रसंग, भावार्थ, काव्य सौन्दर्य) • सौन्दर्य बोध, भाव एवं विषय वस्तु आधारित प्रश्न।	17	06	2	1	1	–	04
2.	**काव्य बोध** • काव्य के भेद (प्रबंध एवं मुक्तक काव्य के भेद एवं उदाहरण) • रस : परिचय (परिभाषा, अंग, प्रकार एवं उदाहरण) • अलंकार : परिचय एवं प्रकार (संदेह, सांगरूपक, भ्रांतिमान, विरोधाभास एवं व्यतिरेक) • छंद– परिचय एवं प्रकार (सोरठा, कवित्त सवैया एवं रूबाइयाँ) • शब्द शक्ति : परिचय एवं प्रकार • शब्द गुण : परिचय एवं प्रकार • बिम्ब विधान	09	05	02	–	–	–	02
3.	**आरोह भाग – 2, गद्य खण्ड** • गद्य साहित्य का इतिहास विकासक्रम प्रवृत्तियाँ एवं गद्य की विधाएँ • लेखक परिचय • व्याख्या (सन्दर्भ, प्रसंग, व्याख्या विशेष) • विषयवस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न।	17	06	02	01	01	–	04
4.	**भाषा बोध** • शब्द (क्षेत्रीय, तकनीकी एवं निपात शब्द) • शब्द युग्म एवं उनके प्रकार • वाक्य परिचय एवं प्रकार (अर्थ एवं रचना के आधार पर) • वाक्य शुद्धिकरण एवं वाक्य परिवर्तन • मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ • राजभाषा, राष्ट्रभाषा • भाव पल्लवन, सार संक्षेपण, विज्ञापन लेखन संवाद लेखन एवं अनुच्छेद लेखन।	12	05	02	01	–	–	03

@MP_BOARD_25 (Telegram)

5.	वितान भाग – 2 पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न	07	05	01	–	–	–	01
6.	अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न	07	05	01	–	–	–	01
7.	अपठित बोध (गद्यांश/काव्यांश) पर आधारित प्रश्न	03	–	–	01	–	–	01
8.	पत्र लेखन–औपचारिक/अनौपचारिक संबंधित पत्र लेखन	04	–	–	–	01	–	01
9.	निबंध लेखन– (रूपरेखा सहित)	04	–	–	–	01	–	01
	कुल योग	**80**	**32**	**20**	**12**	**16**	–	**18+1 = 2**

प्रश्न–पत्र निर्माण हेतु विशेष निर्देश–

- 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 40% विषयपरक प्रश्न, 20% विश्लेषणात्मक प्रश्न होंगे।

(1) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक 32 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। सही विकल्प 6 अंक, रिक्त स्थान 07 अंक, सही जोड़ी 06 अंक, ए वाक्य में उत्तर 07 अंक, सत्य–असत्य 06 अंक संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 01 अंक निर्धारित है।

(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान इकाई/उप इकाई तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे। इन प्रश्नो की उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी–

- अति लघु उत्तरीय प्रश्न 2 अंक, लगभग 30 शब्द
- लघु उत्तरीय प्रश्न 3 अंक, लगभग 75 शब्द
- विश्लेषणात्मक प्रश्न 4 अंक, लगभग 120 शब्द

(3) कठिनाई स्तर – 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न।

	हिन्दी–12वीं (पाठ्यक्रम में से हटाई गई विषयवस्तु)	
आरोह भाग–2	काव्य खण्ड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फिराक गोरखपुरी – गजल
	गद्य खण्ड	• विष्णु खरे – चार्ली चैपलिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रजिया सज्जाद जहीर – नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग–2		• एन फ्रैंक – डायरी के पन्ने

@MP_BOARD_25 (Telegram)

हिन्दी–12वीं

काव्य खण्ड

काई–1 आरोह–भाग–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

श्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

) हालावाद के प्रवर्तक कवि हैं–
) जयशंकर प्रसाद (b) अज्ञेय
) हरिवंश राय बच्चन (d) महादेवी वर्मा

) 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है' – गीत बच्चन के किस ाव्य संग्रह से लिया गया है ?
) मधुशाला (b) मिलनयामिनी
) निशा निमंत्रण (d) मधुकलश

) हरिवंश राय बच्चन का जन्म कब हुआ था?
) 1905 ई. (b) 1907 ई.
) 1909 ई. (d) 1911 ई.

) हरिवंश राय बच्चन का जन्म कहाँ हुआ था?
) फैजाबाद (b) इलाहाबाद
) हैदराबाद (d) मुरादाबाद

) 'आत्मपरिचय' कविता में कवि किसका भार लिए रता है?
) कार्यालय का (b) परिश्रम का
) जग–जीवन का (d) असफलता का

) 'आत्म परिचय' कविता में कवि जीवन में क्या लिए रता है?
) स्नेह (b) करूणा
) प्यार (d) दया

) 'आत्म परिचय' कविता में कवि बच्चन किसका पान या करते हैं?–
) जल का (b) स्नेह–सुरा का
) साँसों का (d) सत्य का

) 'आत्म–परिचय' कविता में कवि अपने रोदन में क्या ए फिरता है?
) राग (b) रास
) राज (d) राम

) आत्म परिचय कविता में कवि स्वयं को दुनिया का एक ा क्या मानता है?
) प्रेमी (b) दीवाना
) परवाना (d) रक्षक

(10) आत्म परिचय कविता में कवि कैसा संसार लिए फिरता है?
(a) यथार्थ का (b) आदर्श का
(c) स्वप्नों का (d) सत्य का

(11) 'हो न जाए पथ में रात कहीं' सोच–सोच कर जल्दी–जल्दी कौन चलता है?
(a) कुत्ता (b) पंथी
(c) कवि (d) बाज

(12) किसका ध्यान करके चिड़ियों के परों में चंचलता आ जाती है ?
(a) बाज का (b) साँप का
(c) कौवे का (d) अपने बच्चों का

(13) बच्चों की याद आने पर चिड़ियाँ क्या करती है?
(a) रोती है (b) सोती है
(c) तेजी से उड़ती है (d) इनमें से कोई नहीं

(14) 'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता में कवि हताश व दुःखी क्यों है?
(a) आर्थिक हानि के कारण (b) अपराध के कारण
(c) परिवार से बिछुड़ने के कारण (d) इनमें से कोई नहीं

(15) कवि आलोक धन्वा किस दशक के कवि हैं ?
(a) तीसरे–चौथे दशक के (b) चौथे–पाँचवे दशक के
(c) छठवें–सातवें दशक के (d) सातवें–आठवें दशक के

(16) कवि आलोक धन्वा की पहली कविता है–
(a) भीगी हुई लड़कियाँ (b) जनता का आदमी
(c) ब्रूनों की बेटियाँ (d) इनमें से कोई नहीं

(17) कवि आलोक धन्वा का एकमात्र कविता संग्रह है–
(a) भीगी हुई लड़कियाँ (b) जनता का आदमी
(c) ब्रूनों की बेटियाँ (d) दुनिया रोज बनती है

(18) छत से गिरने और बचने के बाद बच्चे बन जाते हैं–
(a) डरपोक (b) निडर
(c) ईमानदार (d) क्रोधी

(19) पतंग कविता किसके लिए प्रसिद्ध है–
(a) प्रतीकों के लिए (b) चित्र विधान के लिए
(c) बिम्ब विधान के लिए (d) व्यंग्यार्थ के लिए

(20) पतंग उड़ाते बच्चे किसके सहारे स्वयं भी उड़ते से हैं ?
(a) फेफड़ों के (b) रंध्रों के
(c) साहस के (d) शक्ति

(21) 'सुनहले सूरज में कौन–सा अलंकार है?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) अनुप्रास (d) श्लेष

(22) 'खरगोश की आँखों जैसा लाल' में कौन–सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) उपमा
(c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

(23) सबसे तेज बौछारों का माह होता है–
(a) आषाढ़ (b) श्रावण
(c) भादौ (d) कार्तिक

(24) सबेरे की तुलना की गई है–
(a) खरगोश की आँख से (b) शेर की आँख से
(c) बिल्ली की आँख से (d) कुत्ते की आँख से

(25) शरद क्या चलाता हुआ आया?
(a) हाथ (b) पैर
(c) जीभ (d) साइकिल

(26) चिड़िया अपने पंखों के सहारे उड़ती है और कविता किसके सहारे उड़ती है?
(a) शब्द के (b) कल्पना के
(c) हवा के (d) पंख के

(27) कविता के पंख लगा उड़ने से क्या तात्पर्य है?
(a) उड़ना (b) कल्पना करना
(c) चलना (d) हँसना

(28) 'कविता बिना मुरझाए सदियों तक महकती रहती है'– इसका आशय क्या है?
(a) कविता कालजयी है
(b) कविता का प्रभाव सदियों तक बना रहता है।
(c) कविता का सौन्दर्य कभी समाप्त नहीं होता
(d) उपरोक्त सभी

(29) 'कविता के बहाने' कविता में किनके साथ समानता व असमानता दर्शाई गई है?
(a) बच्चे और फूल (b) बच्चे, फूल और चिड़िया
(c) फूल और चिड़िया (d) चिड़िया और बच्चे

(30) किसकी चूड़ी मर गई ?
(a) पेंच की (b) कील की
(c) भाषा की (d) बात की

(31) रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' उनके किस काव्य संग्रह से ली गई है?
(a) सीढ़ियों पर धूप में (b) आत्महत्या के विरूद्ध
(c) हँसो–हँसो जल्दी हँसो (d) लोग भूल गए हैं

(32) कैमरे के सामने लाया जाता है–
(a) एक भिखारी को (b) एक नेता को
(c) एक अपाहिज को (d) एक किसान को

(33) 'हम समर्थ शक्तिवान हैं', ये कहाँ बोलेंगे ?
(a) दूरदर्शन पर (b) रेडियो पर
(c) मंच पर (d) सभा में

(34) कवि के अनुसार प्रात:कालीन आकाश किसके जैसा लग रहा था?
(a) काले बादलों जैसा (b) नीले शंख जैसा
(c) घोड़े जैसा (d) इनमें से कोई नहीं

(35) उषा का जादू कब समाप्त होता है?
(a) सूर्योदय होने पर (b) वर्षा होने पर
(c) बादल छा जाने पर (d) हवा चलने पर

(36) कवि ने नीले जल में झिलमिलाती देह की तुलना किससे की है?
(a) कविता (b) भोर के नभ से
(c) बादलों (d) वर्षा से

(37) शंख का रंग होता है–
(a) नीला (b) सफेद
(c) पीला (d) काला

(38) 'चौका' लीपा जाता है–
(a) मिट्टी से (b) रंग से
(c) राख से (d) चूने से

(39) कवि निराला की कविता 'बादल राग' उनके किस संग्रह में संकलित है?
(a) परिमल (b) गीतिका
(c) बेला (d) अनामिका

(40) बादल राग कविता में कुल खण्ड हैं–
(a) चार (b) छः
(c) आठ (d) दस

(41) बादल राग कविता में 'गगन स्पर्शी स्पर्धा धीर' कहा गया है–
(a) आकाश को (b) श्वेत बगुलों को
(c) बादलों को (d) गरीबों को

(42) संसार के सभी लोग मुख्य रूप से किसलिए काम करते हैं?
(a) मनोरंजन के लिए (b) पेट भरने के लिए
(c) धन संग्रह के लिए (d) दान के लिए

(43) तुलसीदास के अनुसार पेट की आग को कौन बुझा सकता है?
(a) बनिया (b) किसान
(c) मजदूर (d) राम

(44) तुलसीदास के अनुसार समाज में सभी को किसका अभाव है?
(a) मकान का (b) बच्चों का
(c) रुपए का (d) आजीविका का

(45) आँगन में गोद में माँ किसको लिए खड़ी है?
(a) फूल के गुलदस्ते को (b) पड़ोस के बच्चे को
(c) अपने बच्चे को (d) पालतू कुत्ते को

(46) घुटनों में लेकर माँ बच्चे को क्या करती है?
(a) नहलाती है (b) बाल में कंघी करती है
(c) कपड़े पहनाती है (d) प्यार से देखती है

(47) 'छोटा मेरा खेत' कविता का हिन्दी में रूपान्तरण किसने किया है?
(a) भोला भाई पटेल (b) उमाशंकर जोशी
(c) आलोक धन्वा (d) केशूभाई पटेल

(48) आकाश में कौन उड़ रहे हैं?
(a) कौए (b) कबूतर
(c) बगुले (d) गिद्ध

(49) किसके अंकुर फूटते हैं ?
(a) शब्द के (b) विचार के
(c) काव्य–कृति के (d) कल्पना के

(50) समन्वयवादी कवि कहा जाता है–
(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) कबीरदास (d) केशवदास

(51) फिराक गोरखपुरी का वास्तविक नाम है–
(a) रघुवीर सहाय (b) शिवपूजन सहाय
(c) रघुपति सहाय (d) रमापति सहाय

(52) फिराक गोरखपुरी को किस कृति के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है ?
(a) रंगे–शायरी (b) गुले–नग्मा
(c) बज्मे जिन्दगी (d) उर्द गजलगोई

(53) 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' में कपास शब्द से क्या अभिप्राय है?
(a) चंचलता (b) कोमलता
(c) कायरता (d) रूई

(54) कवि कुँवर नारायण की कविता ''बात सीधी थी पर'' उनके किस काव्य संग्रह से ली गई है?
(a) कोई दूसरा नहीं (b) इन दिनों
(c) अपने सामने (d) परिवेश: हम तुम

(55) रीतिकालीन कवि हैं–
(a) दिनकर (b) पन्त
(c) भूषण (d) हरिऔध

(56) हिंदी पद्य साहित्य को बाँटा गया है–
(a) चार कालों में (b) पाँच कालों में
(c) तीन कालों में (d) छः कालों में

उत्तर– (1) (c) (2) (c) (3) (b) (4) (b) (5) (c) (6) (c) (7) (b) (8) (a) (9) (b) (10) (c) (11) (b) (12) (d) (13) (d) (14) (d) (15) (d) (16) (b) (17) (d) (18) (b) (19) (c) (20) (b) (21) (c) (22) (b) (23) (c) (24) (a) (25) (d) (26) (b) (27) (b) (28) (d) (29) (b) (30) (d) (31) (d) (32) (c) (33) (a) (34) (b) (35) (a) (36) (b) (37) (a) (38) (c) (39) (d) (40) (b) (41) (c) (42) (b) (43) (d) (44) (d) (45) (c) (46) (c) (47) (a) (48) (c) (49) (a) (50) (b) (51) (c) (52) (b) (53) (b) (54) (a) (55) (c) (56) (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) मैं ..... मौजों पर मस्त बहा करता हूँ। (भव/भय)
(2) मैं मादकता ..... लिए फिरता हूँ। (नि:शेष/विशेष)
(3) मैं बना–बना कितने जग रोज मिटाता हूँ में ..... अलंकार है। (यमक/पुनरूक्ति प्रकाश)
(4) कवि बच्चन ..... का ध्यान नहीं करते। (जग/पग)
(5) संसार कवि के ..... को गाना कहता है। (हँसने/रोने)
(6) दुनिया की सबसे रंगीन और हल्की चीज ..... है। (स्वप्न/पतंग)
(7) पतंग की पतली कमानी ..... की बनी होती है। (लोहे की/बाँस की)
(8) बच्चे ..... को नरम बनाते हुए दौड़ते हैं। (छतों को/सड़क को)
(9) कविता के पंख लगा उड़ने के माने ..... क्या जाने। (चिड़िया/बच्चे)
(10) बिना मुरझाए महकने के माने ..... क्या जाने। (फूल/कविता)
(11) तुमने ..... को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा। (भाषा/व्यवहार)
(12) आपको ..... होकर कैसा लगता है। (अपाहिज/भिखारी)
(13) परदे पर दिखलाई जाएगी अपाहिज की ..... की बड़ी तस्वीर। (रोता हुआ चेहरा/फूली हुई आँख)
(14) परदे पर ..... की कीमत है। (वक्त/चित्र)
(15) प्रात: नभ नीले ..... जैसा था। (शंख/मोती)
(16) लीपा हुआ चौका अभी ..... पड़ा है। (गीला/नीला)
(17) सिल पर लाल ..... पीसी गई थी। (मिर्च/केसर)
(18) 'बादल राग' कविता में सुखों को ..... बताया गया है। (स्थिर/अस्थिर)
(19) ..... होने पर निम्न वर्ग को सदैव लाभ होता है। (क्रांति/सभा)
(20) क्रान्ति रूपी बादलों का आह्वान ..... अधीरता के साथ करता है। (कृषक/धनिक)
(21) वेदों और पुराणों में कहा गया है कि संकट के समय ..... सभी पर कृपा करते हैं। (प्रभु राम/मजदूर)
(22) तुलसीदास ने ..... में सोने की बात कही है। (मंदिर/मस्जिद)
(23) लक्ष्मण ..... द्वारा छोड़ी गई शक्ति से मूर्छित हो गए थे। (मेघनाद/रावण)

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(24) माँ बच्चे को हवा में .... देती है। (लोका/लिटा)

(25) बच्चा .... को पाने की जिद कर रहा है। (चाँद/पतंग)

(26) कवि उमाशंकर जोशी ने कवि-कर्म को .... के समान बताया है। (पूजा कर्म/कृषि कर्म)

(27) खेत की तुलना .... से की गई है। (कागज का पन्ना/पीपल के पत्ते)

(28) आकाश में .... पंक्तिबद्ध होकर उड़ रहे हैं। (हंस/बगुले)

(29) भक्तिकाल की प्रेममार्गी शाखा के प्रमुख कवि .... हैं। (जायसी/कबीर)

(30) नागार्जुन ...... के कवि हैं। (भक्तिकाल/आधुनिक काल)

उत्तर- (1) भव (2) निःशेष (3) पुनरुक्ति प्रकाश (4) जग (5) रोने (6) पतंग (7) बाँस की (8) छतों की (9) चिड़िया (10) फूल (11) भाषा (12) अपाहिज (13) रोता हुआ चेहरा (14) वक्त (15) शंख (16) गोला (17) केसर (18) स्थिर (19) क्रांति (20) कृषक (21) प्रभु राम (22) मस्जिद (23) मेघनाद (24) लोका (25) चाँद (26) कृषि कर्म (27) कागज का पन्ना (28) बगुले (29) जायसी (30) आधुनिक काल।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए-

(1)

'अ'	'ब'
(1) मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ	(a) अनुप्रास अलंकार
(2) शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ	(b) रूपक अलंकार
(3) जिसको सुनकर जग झूम झुके लहराए	(c) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
(4) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।	(d) मानवीकरण अलंकार
(5) फूल हँसे, कलियाँ मुसकाईं	(e) विरोधाभास अलंकार

उत्तर- (1) (b) (2) (e) (3) (a) (4) (c) (5) (d).

(2)

'अ'	'ब'
(1) आत्म परिचय	(a) आलोक धन्वा
(2) पतंग	(b) कुँवर नारायण
(3) कविता के बहाने	(c) रघुवीर सहाय
(4) कैमरे में बंद अपाहिज	(d) रीतिकाल
(5) शृंगार काल	(e) हरिवंशराय बच्चन

उत्तर- (1) (e) (2) (a) (3) (b) (4) (c) (5) (d).

(3)

'अ'	'ब'
(1) बादल राग	(a) हरिवंश राय बच्चन
(2) मधुशाला	(b) शमशेर बहादुर सिंह
(3) कवितावली	(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
(4) रुबाइयाँ	(d) तुलसीदास
(5) उषा	(e) फिराक गोरखपुरी
(6) हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग	(f) भक्तिकाल

उत्तर- (1) (c) (2) (a) (3) (d) (4) (e) (5) (b) (6) (f).

(4)

'अ'	'ब'
(1) मस्ती का संदेश	(a) चिड़िया के बहाने
(2) दिन का पंथी	(b) हरिवंशराय बच्चन
(3) दिशाएँ	(c) अपाहिज
(4) कैमरे के सामने	(d) जल्दी-जल्दी चलता है
(5) कविता एक उड़ान है	(e) मृदंग

उत्तर- (1) (b) (2) (d) (3) (e) (4) (c) (5) (a).

(5)

'अ'	'ब'
(1) गिरने से बचाता है	(a) बच्चों के बहाने
(2) पेंच को खोलने की बजाए	(b) दूरदर्शन पर
(3) कविता एक खेल है	(c) रोमांचित शरीर
(4) अपाहिज की बेबसी का चित्रण	(d) राख से लीपा हुआ चौका
(5) भोर का नभ	(e) बेतरह कसना

उत्तर- (1) (c) (2) (e) (3) (a) (4) (b) (5) (d).

(6)

'अ'	'ब'
(1) सिल का रंग	(a) घोंसला
(2) विप्लव-रव से	(b) उमाशंकर जोशी
(3) दसकंधर	(c) छोटे ही शोभा पाते हैं
(4) नीड़	(d) रावण
(5) बगुलों के पंख	(e) काला

उत्तर- (1) (e) (2) (c) (3) (d) (4) (a) (5) (b).

(7)

'अ'	'ब'
(1) जीर्ण-शीर्ण शरीर	(a) कटाई अनंतता की
(2) रोपाई क्षण की	(b) कृषक
(3) झिलमिल देह	(c) बिजली की चमक
(4) राम को चिंता थी	(d) नील जल में
(5) राखी के लच्छे	(e) अपयश की

उत्तर- (1) (b) (2) (a) (3) (d) (4) (e) (5) (c).

(8)

'अ'	'ब'
(1) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	(a) भक्तिकाल
(2) हरिवंश राय बच्चन	(b) छायावाद
(3) तुलसीदास	(c) नई कविता
(4) आलोक धन्वा	(d) हालावाद

उत्तर- (1) (b) (2) (d) (3) (a) (4) (c).

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिये।

(1) बच्चे किसकी प्रत्याशा में होंगे?

(2) कवि किसका पान करता है?

(3) 'भव-सागर' में कौन-सा अलंकार है?

(4) कवि किसका उन्माद लिए फिरता है?

(5) कपास कौन लाता है?

(6) बच्चे निडरता के साथ किसके सामने आते हैं?

(7) पतंगों के साथ-साथ कौन उड़ रहा है?

(8) कविता का खिलना कौन नहीं जानता?

(9) कविता का उड़ना कौन नहीं जानता?

(10) बात बाहर निकलने के बजाए कैसी हो गई?

(11) परदे पर किसकी कीमत है?

(12) अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा?

(13) दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने बैठे अपाहिज से बार-बार प्रश्न क्यों पूछते हैं?

(14) स्लेट पर क्या मलने की बात कही गई है?

(15) उषा का जादू कब टूटता है?

(16) कवि ने नीले जल में झिलमिलाते देह की तुलना किससे की है?

(17) धनी वर्ग के लोग किसकी आशंका से भयभीत रहते हैं?

(18) विप्लव का वीर किसे कहा गया है?

(19) जल सदैव किसमें से छलकता है?

(20) लोग पेट की आग बुझाने के लिए किन-किन तक को बेच देते हैं?

(21) तुलसीदास स्वयं को क्या कहलवाना पसंद करते हैं?

(22) रावण ने किसके समक्ष हनुमान एवं अन्य वानरादि की वीरता का वर्णन किया है?

(23) कवि ने दरिद्रता की तुलना किससे की है?

(24) निर्मल जल में नहलाने के बाद माँ बच्चे का क्या करती है?

(25) रक्षाबंधन की सुबह आसमान कैसा है?

(26) छोटा मेरा खेत कविता में कवि ने किस खेत की बात की है?

(27) कवि ने अपने खेत में कौन-सा बीज बोया?

(28) रघुवीर सहाय अज्ञेय द्वारा संपादित किस 'सप्तक' के कवि हैं?

(29) 'चाँद का मुंह टेढ़ा' है किस कवि की रचना है?

(30) 'आत्मजयी' किसकी रचना है?

(31) 'राम की शक्तिपूजा' कविता के रचनाकार कौन है?

(32) 'बादलराग' कविता में अट्टालिका को क्या कहा गया है?

(33) तुलसीदास कृत 'कवितावली' किस भाषा में लिखी गई है?

(34) कुँवर नारायण की रचना 'कविता के बहाने' उनके किस काव्य संग्रह से ली गई है?

(35) तुलसी अपने किस रूप पर गर्व करते हैं?

(36) तुलसीदास जी ने रावण की तुलना किससे की है?

(37) बच्चा माँ की गोद में कैसी प्रतिक्रिया करता है?

(38) दीवाली के दिन माता बच्चे के लिए क्या लेकर आती है?

(39) 'रस की पुतली' किसे कहा गया है?

(40) हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के जनक का नाम लिखिए।

(41) कठिन गद्य का प्रेत किसे कहा गया है?

उत्तर- (1) बच्चों को प्रत्याशा यह जानने की है कि चिड़िया पंखों में चंचलता कैसे भरती है।

(2) कवि प्रेमरूपी (मदिरा) का पान करता है।

(3) भवसागर में रूपक अलंकार है।

(4) कवि दीवानों के वेश लिये, मस्ती का संदेश लिये फिरता है।

(5) कपास बच्चे लाते हैं।

(6) बच्चे निडरता के साथ सुनहरे सूरज के सामने आते हैं।

(7) जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती है।

(8) कविता का खिलना फूल नहीं जानते।

(9) कवि के अनुसार कविता की उड़ान चिड़िया नहीं जान सकती है।

(10) कवि के अनुसार बात बिल्कूल साधारण सी थी किन्तु भाषा के चक्कर में फंसकर कठिन बन गई।

(11) परदे पर वक्त की कीमत है।

(12) अपाहिज अपना दुख नहीं बता पायेगा।

(13) दूरदर्शन वाले अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए अपाहिज व्यक्तियों के सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं कि अपाहिज व्यक्ति रो-रो कर तथा भावुक होकर अपाहिज होने के दुःखों को न चाहते हुए भी बताने को विवश हो जाते हैं।

(14) स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी के बने हुए चाक को रगड़ दिया हो।

(15) उषा का जादू सूर्योदय के समय पर टूट जाता है, क्योंकि इस समय सूर्य की किरणों के प्रभाव से आसमान में छायी लालिमा समाप्त हो जाती है।

(16) कवि ने नीले जल में झिलमिलाते हुए गौर वर्ण शरीर की तुलना भोर (प्रातःकाल) के आकाश से की है।

(17) धन की चोरी होने की आशंका से भयभीत रहते हैं।

(18) विप्लव का वीर बादल को कहा गया है। बादल वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है।

(19) कीचड़ में भी छोटे-छोटे प्रसन्न कमल से हमेशा पानी गिरता रहता है।

(20) पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊंचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते हैं। मजबूरियों के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं।

(21) तुलसीदास स्वयं को भगवान श्रीराम का दास, गुलाम, सेवक कहलाना पसंद करते हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(22) रावण ने अपने भाई कुंभकर्ण के समक्ष हनुमान और अन्य वानरादि की वीरता का वर्णन किया।
(23) तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। दरिद्रता रूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबोच लिया है।
(24) निर्मल जल से नहलाने के बाद माँ बच्चे के उलझे हुए बालों में कंघी करती है। उसके बाद अपने घुटनों पर बिठाकर कपड़े पहनाती है।
(25) रक्षाबंधन की सुबह खुशी छायी हुई है किंतु उसी समय आसमान में हल्की-हल्की घटाएं छायी हुई है। आसमान में बिजली चमक रही है।
(26) कवि कहता है कि उसे कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है।
(27) कवि ने अपने खेत में विचार का बीज बोया था।
(28) रघुवीर सहाय अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरा सप्तक 1951 के कवि हैं।
(29) गजानन माधव मुक्तिबोध।
(30) आत्मजयी कुँअर नारायण की रचना है।
(31) "राम की शक्ति पूजा" के रचनाकार निराला जी हैं।
(32) बादल राग कविता में अट्टालिका को आतंक पैदा करने वाले भवन कहा गया है।
(33) ब्रजभाषा में।
(34) कुँअर नारायण की रचना 'कविता के बहाने' उनके "इन दिनों" काव्य संग्रह से ली गई है।
(35) कवि स्वयं को रामभक्त कहने में गर्व का अनुभव करता है। वह स्वयं को उनका गुलाम कहता है तथा समाज की हँसी का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(36) तुलसीदास ने रावण की तुलना दरिद्रता से की है।
(37) माँ बच्चे को अपनी गोद में लेकर हाथों पर रखकर झुलाती है। इस क्रिया से बच्चा खिलखिलाकर हँसने लगता है।
(38) दीवाली के दिन माता बच्चे को लिये चीनी मिट्टी के जगमगाते खिलौने लाकर दे देती है।
(39) रस की पुतली राखी बांधने वाली बहन को कहा गया है। क्योंकि बहन का अपने भाई के प्रति अत्यधिक स्नेह होता है।
(40) हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को माना जाता है।
(41) कठिन गद्य का प्रेत केशवदास को कहा गया है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा दो खंडों में है।
(2) हरिवंश राय बच्चन का निधन मुम्बई में 2003 में हुआ।
(3) 'प्रवासी की डायरी' बच्चन की आत्मकथा है।
(4) 'मधुशाला' बच्चन की प्रसिद्ध कृति है।
(5) बच्चे प्रत्याशा में नीड़ों से झांक रहे होंगे।
(6) कवि बच्चन मंत्री का वेश लिए फिरते हैं।
(7) शरद ऋतु पुलों को पार करती हुई आई।
(8) बच्चे जन्म से ही अपने साथ कपास लेकर आते हैं।
(9) बच्चे दिशाओं को ढपली की तरह बजाते हैं।
(10) कविता एक खिलना है बच्चों के बहाने।
(11) सीधी बात भाषा के चक्कर में टेढ़ी फँस गई।
(12) कवि ने हारकर बात को कील की तरह ठोंक दिया।
(13) एक बंद कमरे में एक भिखारी को लाया जाएगा।
(14) कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए कैमरे के [illegible] अपाहिज को रोने के लिए विवश किया जाता है।
(15) रघुवीर सहाय दूसरे सप्तक के कवि हैं।
(16) कैमरे के सामने बैठे अपाहिज के साथ-साथ दर्शकों भी रूलाने की कोशिश होती है।
(17) प्रात:काल का आकाश नीले पानी जैसा था।
(18) चौके को राख से लीपा गया था।
(19) सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूटता है।
(20) अस्थिर सुख पर सदैव दु:ख की छाया छायी रहती है।
(21) शैशव का सुकुमार शरीर रोग-शोक में भी हँसता रह[illegible]
(22) दु:ख रूपी रावण धनिकों को दबोचता है।
(23) पेट भरने के लिए लोग ऊँचे-नीचे और नैतिक-अ[illegible] काम तक करने से नहीं हिचकते।
(24) लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए [illegible] गए थे।
(25) तुलसीदास को 'लोकनायक कवि' कहा जाता है।
(26) दीवाली पर गुड़ के खिलौने खरीदे जाते हैं।
(27) बालक चाँद के लिए ललचा रहा है।
(28) कविता सृजन के लिए शब्द रूपी बीज को कल्प[illegible] खाद की आवश्यकता होती है।
(29) बगुलों के पंख के लिए कविता में नभ में पतंगे छायी।
(30) आसमान में उड़ते बगुलों की पंक्ति कवि की आँखें [illegible] लिए जा रही है।
(31) बच्चन प्रेम व मस्ती के कवि हैं।
(32) कुँवर नारायण प्रगतिवादी रचनाकार हैं।
(33) तुलसीदास भक्तिकालीन सगुणकाव्य धारा के कवि [illegible]
(34) रामचरितमानस की रचना ब्रजभाषा में की गई है।
(35) जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि है?
(36) लौकिक साहित्य आदिकाल की विशेष उपलब्धि [illegible]

उत्तर- (1) असत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5[illegible] (6) असत्य (7) सत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) असत्य (11[illegible] (12) असत्य (13) असत्य (14) सत्य (15) सत्य (16[illegible] (17) असत्य (18) असत्य (19) सत्य (20) सत्य (21[illegible] (22) असत्य (23) सत्य (24) असत्य (25) सत्य (26)[illegible] (27) सत्य (28) सत्य (29) असत्य (30) सत्य (31[illegible] (32) सत्य (33) सत्य (34) असत्य (35) सत्य (36) सत्[illegible]

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. स्नेह सुरा से क्या आशय है?
उत्तर- कवि स्नेहरूपी मदिरा को पीता रहता है अर्थात् वह लोगों के प्रति प्रेम रूपी मदिरा को पीकर मदमस्त रहता है।

प्रश्न 2. जग-जीवन के भार से कवि का क्या आशय है?
उत्तर- कवि स्वयं के जीवन को महत्वहीन मानते हुए कहता है कि वह संसार में अपने जीवन को भार के समान लेकर जीवन व्यतीत करता है।

प्रश्न 3. कवि संसार को अपूर्ण क्यों मानता है?
उत्तर- कवि की दृष्टि में संसार अपूर्ण है, जो उसे अच्छा नहीं लगता है। उसके साथ तो केवल स्वप्न रूपी संसार ही है, जिसे वह अपने साथ लिए घूमता रहता है। उसका हृदय जला हुआ है, जिसमें निरन्तर अग्नि जलती रहती है। किंतु फिर भी वह सुख और दु:ख की चिंता नहीं करता, बल्कि वह तो लीन ही रहता है।

प्रश्न 4. स्वप्नों के संसार से कवि का क्या आशय है?
उत्तर- कवि के अनुसार उसे अपूर्ण संसार अच्छा नहीं लगता है। इसके उपाय में वह अपने हृदय में स्वप्नों का संसार लिए घूमता रहता है।

प्रश्न 5. कवि उर का उद्‌गार व उपहार क्या है?
उत्तर- कवि अपने आप को परिचित करता हुआ कहता है कि वह अपने हृदय के विचारों को साथ लेकर घूमता रहता है। उसके पास अपने स्वयं के हृदय में भेंट स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ विचार हैं, जिन्हें वह अपने साथ लिए घूमता है।

प्रश्न 6. कवि जग का ध्यान क्यों नहीं करना चाहता है?
उत्तर- कवि के अनुसार, वह स्नेह रूपी मदिरा को पीता रहता है अर्थात् वह लोगों के प्रति प्रेम रूपी मदिरा को पीकर मदमस्त रहता है फिर भी वह संसार के लोगों का ध्यान नहीं करता है। इसी कारण संसार भी उसको कोई महत्व नहीं देता क्योंकि वह उन्हें ही महत्व देता है जो अन्य लोगों को भी महत्व देते हैं। अन्त में कवि कहता है कि वह तो केवल अपने मन के अनुसार स्वयं के लिए ही गीत गाता रहता है।

प्रश्न 7. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ो से झाँक रहे होंगे?
उत्तर- बच्चे घोंसलों से यह जानने के लिए झाँक रहे होंगे कि चिड़िया के पंखों में चंचलता कितनी है।

प्रश्न 8. कवि किस कारण अवसाद से ग्रस्त है?
उत्तर- कवि विरह व्यथा के कारण अवसाद ग्रस्त है।

प्रश्न 9. कवि किस प्रकार के ज्ञान को भूलना चाह रहा है?
उत्तर- कवि सांसारिकता के ज्ञान को भुलाना चाहता है। आज तक उसने दुनिया के छल-कपट, स्वार्थ, मोह और धन कमाने की कला सीखी है। आज कवि को लगता है कि ऐसा ज्ञान व्यर्थ है। अत: वह इस दुनियादारी को भूलना चाहता है।

प्रश्न 10. बड़े-बड़े राजा किस पर न्यौछावर होते हैं?
उत्तर- कवि के पास प्रेम महल के खंडहर का अवशेष है संसार के बड़े-बड़े राजा प्रेम के आवेग में राजगद्दी भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रश्न 11. थका हुआ पंथी किस कारण जल्दी-जल्दी चलता है?
उत्तर- कविता के आधार पर दिन का पंथी जल्दी-जल्दी इसलिए चलता है, क्योंकि वह सोचता है कि कहीं उसके मंजिल तक पहुँचने से पहले ही रात्रि नहीं हो जाए। इसके साथ ही वह अपनी मंजिल को भी समीप ही मानता है। यह सोचकर ही दिन का पंथी जल्दी-जल्दी चलता है।

प्रश्न 12. कवि के मन में किस चीज की आशंका है?
उत्तर- कवि के मन में यह डर भी होता है कि कहीं रात न हो जाए, यह डर भी उसके कदमों की गति को तेज कर देता है।

प्रश्न 13. चिड़ियों के परों में चंचलता किस कारण आ जाती है?
उत्तर- चिड़ियों के परों में तब चंचलता आ जाती है जब उन्हें अपने बच्चों की प्रत्याशा का स्मरण हो जाता है तब वे उनके पास शीघ्र पहुँच जाना चाहती है।

प्रश्न 14. कवि के उर में कैसी विहलता जन्म लेती है?
उत्तर- कवि प्रेम की वियोगावस्था में होने के कारण कथित है कवि अपने हृदय की भावनाओं को व्यक्त करता है। निज उर के उपहार से तात्पर्य कवि की खुशियों से है जिसे वह संसार में बाँटना चाहता है।

प्रश्न 15. कवि किसलिए चंचलता त्याग देता है?
उत्तर- कवि अपनी चंचलता त्याग देता है क्योंकि किसी को उसकी प्रतीक्षा नहीं है।

प्रश्न 16. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने से क्या तात्पर्य है?
उत्तर- दिशाओं को ढोलक (मृदंग) की तरह बजाने से तात्पर्य बच्चों का दौड़-दौड़कर शोर मचाने से है। बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं तो वे बेफिक्र होकर छतों पर भी दौड़-दौड़कर शोर मचाते हैं।

प्रश्न 17. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?
उत्तर- कवि कविता की रचना करते समय कल्पना का सहारा लेता है। इसका मन प्रकृति की प्रत्येक वस्तु तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार वह कल्पना की उड़ान भरता है। इसी प्रकार कवि के खिलने से अर्थ कविता की रचना के समय उसका प्रसन्नचित्त रहना आवश्यक है वह 'खिलकर' अर्थात् प्रसन्नचित्त रहकर ही अपनी कविता के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति ठीक प्रकार से कर सकता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 18. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

उत्तर- कवि का मानना है कि कविता कभी मुरझाती नहीं है। यह अमर होती है तथा युग-युगान्तर तक मानव समाज को प्रभावित करती रहती है। अपनी जीवंतता की वजह से इसकी महक बरकरार रहती है। कविता के माध्यम से जीवन-मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते रहते हैं।

प्रश्न 19. 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- कवि कहता है कि मानव मन में भावों का उदय होता है। यदि वह भाषा के चमत्कार में उलझ जाता है तो वह अपने भावों को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाता। वह तभी उन्हें प्रकट कर सकता है जब भाषा को वह साधन बनाए, साध्य नहीं। साधन बनाने पर भाषा सहजता से इस्तेमाल हो सकती है। वह लोगों तक अपनी बात कह सकता है।

प्रश्न 20. हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने यही व्यंग्य किया है कि मीडिया वाले समर्थ और शक्तिशाली होते हैं। इतने शक्तिशाली कि वे किसी की करुणा को परदे पर दिखाकर पैसा कमा सकते हैं। वे दुर्बल अर्थात् अपाहिज को लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। ताकि लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके प्रसिद्धि पाई जा सके।

प्रश्न 21. उषा का जादू क्या है, और क्यों टूट रहा है?

उत्तर- सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य किरणें जादू के समान लगती हैं इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते हैं।

प्रश्न 22. कवि ने प्रात:कालीन वातावरण की समानता नीले शंख से क्यों की है?

उत्तर- सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीता प्रतीत होता है।

प्रश्न 23. 'काली सिल' और 'स्लेट' किस दृश्य को चित्रित करते हैं?

उत्तर- सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगता है मानो काली सिल पर थोड़ी लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो।

सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नी
स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला
हो।

**प्रश्न 24. कवि ने बादलों को 'विप्लव के बादल' क
कहा है?**

उत्तर- 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर।' बादल
हा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गि
है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बा
क्रांति का प्रतीक है। क्रांति आने से बुराई स्रूपी कीचड़ स
हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती

**प्रश्न 25. रणतरी किसे कहा गया है? यह कि
आकांक्षाओं से भरी है?**

उत्तर- कवि ने रणतरी बादलों को कहा है उसकी यह आकां
है कि धरती पर सूर्य की गर्मी और ताप से पीड़ित व्याकूल
प्यासे धरतीवासियों की प्यास बुझाऊं।

**प्रश्न 26. अस्थिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख
छाया किसे कहा गया है और क्यों?**

उत्तर- कवि ने 'दु:ख की छाया' मानव-जीवन में आने व
दुखों, कष्टों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सु
कभी स्थायी नहीं होता। उसके साथ-साथ दुख का प्रभाव रह
है। धनी शोषण करके बहुत संपत्ति जमा करता है, परंतु
सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सब कुछ छिनने के डर
भयभीत रहता है।

**प्रश्न 27. 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत व
पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?**

उत्तर- इस पंक्ति में कवि ने पूँजीगत या शोषक या धनिक व
की ओर संकेत किया है। 'बिजली गिरना' का तात्पर्य क्रांति
है। क्रांति से जो विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग है, उसकी प्रभुस
समाप्त हो जाती है और वह उन्नति के शिखर से गिर जाता
उसका गर्व चूर-चूर हो जाता है।

**प्रश्न 28. शोकग्रस्त माहौल में हनुमानजी के अवतरण व
करूण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा ग
है?**

उत्तर- हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी ल
हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी। इधर र
बहुत व्याकुल हो रहे थे। उनके विलाप से वानर सेना में शो
की लहर थी। चारों तरफ शोक का माहौल था। इसी बी
हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आ गए। सुषेण वैद्य ने तु
संजीवनी बूटी से दवा तैयार कर के लक्ष्मण को पिलाई त
लक्ष्मण ठीक हो गए। लक्ष्मण के उठने से राम का शोक सम
हो गयाऔर सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई। लक्ष्मण स
उत्साही वीर थे। उनके आ जाने से सेना का खोया पराक्र

प्रगाढ़ होकर वापस आ गया। इस तरह हनुमान द्वारा पर्वत उठाकर लाने से शोक-ग्रस्त माहौल में वीर रस का आविर्भाव हो गया था।

प्रश्न 29. हनुमान ने भरत के किन गुणों की प्रशंसा की है?

उत्तर- हनुमान ने भरत के बाहुबल, सुशील स्वभाव तथा प्रभु राम के चरणों में अपार भक्ति की प्रशंसा की है।

प्रश्न 30. राम ने मातृ-प्रेम की तुलना में किसको हीन माना है?

उत्तर- राम ने मातृ प्रेम की तुलना में पत्नी को हीन माना है।

प्रश्न 31. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर- रक्षाबंधन एक मीठा और पवित्र बंधन है रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। वास्तव में सावन का संबंध घटा से होता है। घटाका जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है। शायर यही भाव व्यक्त करना चाहता है कि यह बंधन पवित्र और बिजली की तरह चमकता रहे।

प्रश्न 32. छोटे चौकोर खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- छोटे चौकोर खेत को कागज का पन्ना कहने में यही अर्थ निहित है कि कवि ने कवि कर्म को खेत में बीज बोने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि कविता रचना सरल कार्य नहीं है। जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फसल काटने तक काफी मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार कविता रचने के लिए अनेक प्रकार के कर्म करने पड़ते हैं।

प्रश्न 33. मेरा छोटा खेत कविता के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है?

उत्तर- रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है- भावना का आवेग और बीज की व्याख्या- विचार व अभिव्यक्ति भावना के आवेग से कवि के मन में विचार का उदय होता है तथा रचना प्रकट होती है।

प्रश्न 34. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

उत्तर- भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ-

(1) भक्ति भावना का प्राधान्य।
(2) राज्याश्रय का त्याग और स्वान्त:सुखाय काव्य साधना।
(3) लोक मंगल तथा समन्वय का उद्देश्य।
(4) भावपक्ष तथा कलापक्ष का सुंदर संयोजन।

प्रश्न 35. छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- विशेषताएँ- (1) छायावादी सौन्दर्य और प्रेम का चित्रण अमूर्त तथा भाव प्रवण है।
(2) प्रणय की अनुभूति प्रकृति के माध्यम से व्यक्त है।
(3) मानवीय गुणों एवं नारी का सम्मान।
(4) प्रकृति का सजीव चित्रण और उसमें सूक्ष्म मानवीय भावनाओं का आरोप।
(5) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग और भाषा में मधुरता।

उदाहरण- मैं नीर भरी दु:ख की बदरी।

प्रश्न 36. प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (1) इस काव्य में रूढ़ि एवं बंधनों का विरोध एवं उनके उन्मूलन का प्रयास है।
(2) इसमें पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं असंतोष के स्वर हैं।
(3) प्रगतिवादी कवियों का मूल स्वर बौद्धिक है। उनमें भावुकता का अभाव है।
(4) काव्य की भाषा सरल और सुबोध तथा अलंकारमयी है।

क्र.	कवि	रचनाएँ
(1)	रामधारीसिंह दिनकर	हुंकार, कुरूक्षेत्र
(2)	भवानीप्रसाद मिश्र	गीत-फरोश
(3)	शिवमंगल सिंह सुमन	प्रलय-सृजन

प्रश्न 37. प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (1) प्रयोगवादी सारी कविताएँ एक तरह से आत्म विज्ञापन है।
(2) इनके दूषित प्रवृत्तियों का नग्न रूप में चित्रण किया गया है।
(3) इसमें भाव-विचार, छंद-विधान, प्रतीक विधान, अलंकार आदि में परिवर्तन एवं नवीनता पाई जाती है।

प्रयोगवादी कवियों के नाम निम्नलिखित हैं-

(1) अज्ञेय - रचनाएँ - इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर इत्यादि।
(2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रचनाएँ- काठ की घंटियां, बाँस के फल।
(3) धर्मवीर भारती, रचनाएँ- ठण्डा लोहा, अंधायुग।

प्रश्न 38. नई कविता की दो विशेषताएँ एवं दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर- नइ कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. क्षण का महत्व- नई कविता में क्षणवाद का विशेष महत्व।
2. शिल्पगत नवीनता- नई कविता के कवि नए प्रतीक व नए उपमानों को ढूँढते हैं।
3. आधुनिकता की अभिव्यक्ति- आधुनिकता कविता के केन्द्र में प्रतिष्ठित है।
4. बिम्ब योजना की अधिकता- नई कविता में बिम्ब योजना अधिक मिलती है। ये बिम्ब प्रतीकात्मक और सांकेतिक है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रमुख कवि	रचनाएँ
नरेश मेहता	सराय की एक रात।
मुक्तिबोध	चाँद का मुँह टेढ़ा है।
धर्मवीर भारती	अंधायुग, कनुप्रिया।
दुष्यंत कुमार	एक कंठ विषपायी।

प्रश्न 39. रीतिकाल के दो कवियों के नाम एवं उनकी दो-दो रचनाएँ लिखिए।

उत्तर- रीतिकाल के दो कवि एवं उनकी रचनाएँ -

1. बिहारी	बिहारी सतसई
2. भूषण	शिवराज भूषण, शिवाबावनी
3. केशवदास	रामचंद्रिका, कविप्रिया
4. मतिराम	रसराज, ललित ललाम

निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कर लिखिए

1. 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।'

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'आरोह भाग 2' पाठ्यपुस्तक से उद्धृत 'आत्म परिचय' नामक कविता से लिया गया है। 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि अपना परिचय समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार, अपने आपको जानना समाज को जानने से अधिक कठिन है।

व्याख्या- कवि स्वयं के जीवन को महत्वहीन मानते हुए कहता है कि वह संसार में अपने जीवन को भार के समान लेकर जीवन व्यतीत करता है। किंतु फिर भी अपने जीवन में दूसरों के लिए प्यार लिए रहता है। उसका जीवन दूसरों से प्रेम करने के लिए ही है। उसके पास साँसों रूपी वीणा के दो तार हैं, जिन्हें किसी ने स्पर्श करके झंकार युक्त कर दिया है अर्थात् जिस प्रकार वीणा के तारों को स्पर्श करने से वह झंकृत हो उठती ह, उसी प्रकार कवि की साँस भी लोगों से आत्मीयता के कारण झंकार करने लग गई है।

2. 'मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ;
हो जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।'

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'आरोह भाग-2' पाठ्यपुस्तक से उद्धृत 'आत्म परिचय' नामक कविता से लिया गया है। 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि अपना परिचय समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार, अपने आपको जानना समाज को जानने अधिक कठिन है।

व्याख्या- कवि स्वयं के विषय में कहता है कि वह तो स्वयं ... का राग अलापता रहता है। वह किसी अन्य के बारे में कुछ न सोचता। उसकी वाणी में भी अग्नि ही है। उसके पास तो खंड... का एक ऐसा भाग है, जिस पर राजाओं के महलों को न्यौछावर किया जा सकता है।

3. 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ;
जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किए करता हूँ।'

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'आरोह भाग-... पाठ्यपुस्तक से उद्धृत 'आत्म परिचय' नामक कविता से लि... गया है। 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित प्रस्तुत काव्यांश ... माध्यम से कवि अपना परिचय समाज के सामने प्रस्तुत क... है। उनके अनुसार अपने आपको जानना समाज को जानने ... अधिक कठिन है।

व्याख्या- कवि के अनुसार, वह स्नेह रूपी मदिरा को पी... रहता है अर्थात् वह लोगों के प्रति प्रेम रूपी मदिरा को पी... मदमस्त रहता है फिर भी वह संसार के लोगों का ध्यान न... करता है। इसी कारण संसार भी उसको कोई महत्व नहीं दे... क्योंकि वह उन्हें ही महत्व देता है जो अन्य लोगों को भी मह... देते हैं। अन्त में कवि कहता है कि वह तो केवल अपने मन ... अनुसार स्वयं के लिए ही गीत गाता रहता है।

4. 'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुःख की छाया
जग के हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया।

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आ... भाग-2' में संकलित 'बादल-राग' कविता से लिया है। इस... कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' है। कवि बादल के माध्यम... आम आदमी को संबोधित करता है। वह बादल का आह्... क्रांति के रूप में कर रहे हैं। इसी प्रकार एक साधारण दुख... त्रस्त व्यक्ति को क्रांति के लिए आह्वान करता है। कवि ... अनुसार, बादल किसान के लिए उल्लास एवं निर्माण का त... मजदूर के संदर्भ में क्रांति एवं बदलाव का प्रतीक है।

व्याख्या- कवि बादलों का आह्वान करता हुआ कहता है ... जिस प्रकार समुद्र के ऊपर हवा बहती रहती है, उसी प्र... चंचल रहने वाले सुख पर दुख की छाया सदैव विराजमान र... है। उसी प्रकार संसार का हृदय ग्रीष्म ऋतु में दुखित है। उस... दया रहित बाढ़ की स्थिति बनी रहती है जिसके कारण ... कुछ जल में डूबा हुआ दिखाई देता है।

5. 'अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।'

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'बादल राग' कविता से लिया है। इसके रचयिता 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' है। कवि ने बादलों के बरसने के बाद के परिवर्तन को दर्शाने का प्रयास किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि वह कोई मकान का ऊपर का कमरा नहीं है, बल्कि आतंक पैदा करने वाले भवन के समान है, क्योंकि कीचड़ पर सदैव ही बाढ़ का पानी गिरता रहता है। किन्तु ऐसे कीचड़ में भी छोटे-छोटे प्रसन्न कमल से हमेशा पानी गिरता रहता है। इनका कोमल शरीर बचपन में भी ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों (रोग और शोक) में भी सदैव हँसता रहता है अर्थात् ये सदैव रोग और शोक में भी हँसते रहने की प्रेरणा देते हैं।

6. 'धूत कहाँ, अवधूत कहाँ, रजपूतु कहाँ,
जोलहा कहाँ कोऊ
काहू की बेटी सों बेटा न बयाहब,
काहूकि जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को,
जाको रूचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगी के खैबो, मसीत को सोइबो,
लैबोको एकु न दैबको दोऊ।''

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदासजी हैं। इस कविता में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या- कवि समाज में व्याप्त जातिवाद और धर्म का खंडन करते हुए कहता है कि वह श्रीराम का भक्त है कवि आगे कहता है कि समाज हमें चाहे धूर्त कहे या पाखंडी, संन्यासी कहे या राजपूत अथवा जुलाहा कहे, मुझे इन सबसे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे अपनी जाति या नाम की कोई चिंता नहीं है क्योंकि मुझे किसी की बेटी से अपने बेटे का विचार नहीं करना ओर न ही किसी की जाति बिगाड़ने का शौक है। तुलसीदास का कहना है कि मैं राम का गुलाम हूँ, उसमें पूर्णत: समर्पित हूँ, अत: जिसे मेरे बारे में जो अच्छा लगे, वह कह सकता है। मैं मांगकर खा सकता हूँ, मस्जिद में सो सकता हूँ तथा मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं है। संक्षेप में कवि का समाज से कोई संबंध नहीं है। वह राम का समर्पित भक्त है।

7. 'जौं जनलेउँ बन बिछोहू।
पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
सुत बिन नारि भवन परिवारा।
होहि जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस विचारि जिय जागहु ताता।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनुफनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जौ जड दैव जिआवै मोही।।

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'कवितावली'के 'उत्तरकांड' से उद्धृत है। इसके रचयिता तुलसीदासजी हैं। इस कविता में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या- श्रीराम बेचेन होकर कहते हैं कि संसार में पुत्र, धन, स्त्री, भवन और परिवार बार-बार मिल जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं, किन्तु संसार में सगा भाई दुबारा नहीं मिलता। यह विचार करके, हे भाई, तुम जाग जाओ।

हे लक्ष्मण जिस प्रकार पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप, सुँड के बिना हाथी अत्यंत दीन-हीन हो जाते हैं, उसी प्रकार तुम्हारे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। हे भाई! तुम्हारे बिना यदि भाग्य मुझे जीवित रखेगा तो मेरा जीवन भी पंख के बिना पक्षी, मणि बिना साँप और सुँड बिना हाथी के समान हो जाएगा। राम चिंता करते हैं कि वे कौनसा मुँह लेकर अयोध्या जाएँगे ? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। मैं पत्नी के खोने का अपयश सहन कर लेता क्योंकि नारी की हानि विशेष नहीं होती।

8. 'छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना
कोई अंधड कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।'

उत्तर- प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित कविता छोटा मेरा खेत से उद्धृत है। इसके रचयिता गुजराती कवि उमाशंकर जोशी हैं। इस अंश में कवि ने खेत के माध्यम से कवि कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि उसे कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। उसके मन में कोई भावनात्मक आवेग उमड़ा और वह उसके खेत में विचार का बीज बोकर चला गया।

@MP_BOARD_25(Telegram)

9. 'कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष,
शब्द के अंकूर फूटे
पुष्पों में नमित हुआ विशेष।'

उत्तर– प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित कविता छोटा मेरा खेत से लिया गया है। इसकी रचयिता गुजराती कवि उमाशंकर जोशी हैं। इस अंश में कवि ने खेत के माध्यम से कवि कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि विचार का यह बीज कल्पना के सभी सहायक पदार्थों को पी गया तथा इन पदार्थों से कवि का अहं समाप्त हो गया। जब अहं खो गया तो उससे सर्वजन हिताय रचना का उदय हुआ तथा शब्दों के अंकुर फूटने लगे, फिर उस रचना ने एक संपूर्ण रूप ले लिया। इसी तरह खेती में भी बीज विकसित होकर पौधे का रूप धारण कर लेता है तथा पत्तों व फूलों से लद कर झुक जाता है।

10. 'जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।'

उत्तर– प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'कुँवर नारायण' द्वारा रचित 'बात सीधी थी पर' कविता से लिया गया है। कवि के अनुसार भाषा के अनुचित प्रयोग से उसमें कठिनाइयाँ आ जाती हैं। व्यक्ति उसमें उलझता ही चला जाता है और वह अपने उद्देश्य के लिए उचित सामंजस्य नहीं बैठा पाता है।

व्याख्या– कवि को प्रारंभ से ही भाषा में शब्दों की कठिनाइयों में फँस जाने का डर था और अंत में उसके साथ ऐसा हो भी गया। बात के बिगड़ जाने पर वह बलपूर्वक शब्दों का चयन करने लग गया। इससे वह अपनी बात के लक्ष्य से हट गया। इस प्रकार उसकी बात की चूड़ी मर गई और भाषा भी निष्प्रयोजन होकर जटिल होती गई। अंत में कवि ने थककर उस भाषा रूपी पेंच को कील की तरह ठोंक दिया जिससे वह बात प्रभावहीन हो गई।

प्रश्न 8. कवि परिचय

1. हरिवंश राय बच्चन का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए–
(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर– 1. प्रमुख रचनाएँ– मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, एकांत संगीत तथा मिलन यामिनी आदि।

2. भावपक्ष– बच्चन जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अति साधारण विषय वस्तु को भी बहुत महत्व दिया। इस कारण जन भावनाओं का स्पर्श कर राष्ट्रीय जनकवि का चरित्र जी कर सके। संघर्षशील जीवन और पुनर्निर्माण की प्रेरणा काव्य मुख्य स्वर हैं। ये स्वर प्रेम, मस्ती और दीवानगी के हैं। इन्हों समसामयिक विषयों पर अपनी लेखनी को गति दी। बच्चन ने संवेदनशील सहज काव्य की रचना की है।

3. कला पक्ष– बच्चन जी लाक्षणिक वक्ता के साथ-साथ सीधी सादी जीवन्त भाषा और संवेदनशील गेय शैली में अप बात कहने में निपुण थे। इनकी भाषा अभिधा के माध्यम पाठकों से सीधा संवाद करती है। सामान्य बोलचाल की भा को काव्य गरिमा प्रदान करने का श्रेय बच्चन जी को जाता है

4. साहित्य में स्थान– छायावादोत्तर युग के स्वच्छन्दावा कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। आधूनिक युग प्रगतिवादी कवियों में इनका सर्वोच्च स्थान है। इनका साहित्य हिन्दी साहित्य की अनमोल धरोहर है।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए–
(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'– 1. प्रमुख रचनाएँ– परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता।

2. भावपक्ष– इनकी रचनाओं में पर्याप्त विविधता है। इन्हों अपनी-अपनी रचनाओं के अंतर्गत प्रकृति का सुन्दर एवं सजी चित्रण किया। सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण के दर्श कराए। स्वतंत्रता और राष्ट्रप्रेम के प्रति लोगों में चेतना भरने क प्रयास किया।

3. कला पक्ष– निराला जी ने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली को ही अपनी काव्य भाषा बनाया। इनकी भाषा पर संस्कृत, बंगला तथा फारसी का श्रेष्ठ प्रभाव है। शब्द चयन और भावों की अभिव्यक्ति अनुपम है। इनकी छायावादी कविताओं में तत्सम शब्दों की प्रचुरता है।

4. साहित्य में स्थान– नूतन छंद, नूतन पदावली, नूतन प्रतीक और नूतन अप्रस्तुत योजना के कारण उन्हें हिन्दी का क्रांतिकारी कहा जाता है। इनके मुक्त छंदों में गीतात्मकता, चित्रात्मकता, सौंदर्यानुभूति, प्राकृतिक सौंदर्य तथा प्रगतिशील विचार आदि विद्यमान है।

3. रघुवीर सहाय का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए–
(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर– रघुवीर सहाय- 1. प्रमुख रचनाएँ– गुले नग्मी, बज़े जिन्दगी, रंगे शायरी, उर्दू गजल गोई।

2. भाव पक्ष– उर्दू शायरी साहित्य का बड़ा हिस्सा समाहित और शास्त्रीयता से बंधा रहा है। फिराक ने परम्परागत भावबोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए उसे नयी भाषा और नए विषयों से जोड़ा। उन्होंने सामाजिक दुख दर्दों को व्यक्तिगत अनुभूति बनाकर शायरी में ढाला है। इंसान पर गुजरने वाली अच्छाई और आने वाले कल के प्रति एक उम्मीद दोनों को भारतीय संस्कृति तथा प्रतीकों से जोड़ा है।

3. कला पक्ष– उर्दू शायरी अपने लाक्षणिक प्रयोगों और नजाकत के लिये प्रसिद्ध है। शेर एक तरह का संवाद होता है। मीर तथा गालिब की तरह फिराक ने भी इस शैली को साधकर आम आदमी से अपनी बात कही।

4. साहित्य में स्थान– गोरखपुरी जी ने शायरी के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। इन्हें 'गुले-नग्मा' के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड मिला।

4. तुलसीदास का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए–
(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर– तुलसीदास– 1. प्रमुख रचनाएँ– रामचरित मानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल आदि।

2. भाव पक्ष– तुलसीदास ने राम को आधार मानकर मानव-हृदय की सभी रागात्मक वृत्तियों का सुंदर चित्रण किया है। राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से अनेक सामाजिक और राजनैतिक आदर्शों की स्थापना की है। विनम्रता तन्मयता तथा अनन्यता आदि के भावों का जो उच्च आदर्श तुलसीदासजी ने अपनी कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वह भावजगत की अमूल्य निधि है। तुलसीदास जी ने सगुण निर्गुण ज्ञान-भक्ति, शैव-वैष्णव विभिन्न मतों में समन्वय स्थापित किया है।

3. कला पक्ष– संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होकर भी तुलसीदास जी ने हिन्दी भाषा को अपने काव्य का माध्यम चुना। अवधी तथा ब्रज दोनों भाषाओं में ही समान अधिकार के साथ इन्होंने काव्य रचना की है। अपने समय की सभी प्रचलित काव्य शैलियों में सफलतापूर्वक काव्य सृजन किया। भाषा, भाव, छंद और अलंकारी का ऐसा सुंदर समन्वय अन्यत्र दुर्लभ है। सभी प्रचलित रस, सभी छंद तथा अलंकार इनके काव्य में सहज सुलभ है।

4. साहित्य में स्थान– तुलसीदास जीवन गाथा के कवि हैं। उनके रामचरितमानस में मर्यादित आदर्श स्वरूप का दर्शन सहज ही हो जाता है। यह ग्रंथ युग-युगान्तर तक समाज को नव जीवन प्रदान करने में समर्थ है। यह सत्य ही कहा गया है कि कविता करके तुलसी न लसे, लसी कविता पर तुलसी की कला। अर्थात् कविता करके तुलसी धन्य नहीं हुए, तुलसी की कला को पाकर कविता धन्य हो गई। ❑

@MP_BOARD_25 (Telegram)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) दसवाँ रस माना गया है–
(a) करुण (b) शृंगार
(c) भयानक (d) वात्सल्य

(2) उत्तेजना के मूल कारण को कहते हैं–
(a) विभाव (b) अनुभाव
(c) स्थाई भाव (d) संचारी भाव

(3) किस रस को रसराज कहा गया है?
(a) करुण (b) शृंगार
(c) भक्ति (d) वात्सल्य

(4) कौन–सा रस हमारे मन में उत्साह का संचार करता है?
(a) वीर (b) शांत
(c) हास्य (d) रौद्र

(5) कौन–सा भाव सुषुप्तावस्था में विद्यमान रहता है?
(a) स्थाई (b) अस्थाई
(c) विभाव (d) संचारी भाव

(6) 'रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम' उपर्युक्त पंक्ति में किस रस की अनुभूति होती है?
(a) शांत रस (b) शृंगार रस
(c) भक्ति रस (d) भयानक रस

(7) आतंकवादी नाम मात्र से उत्पन्न भय किसके अंतर्गत आएगा?
(a) विभाव (b) अनुभाव
(c) संचारी भाव (d) इनमें से कोई नहीं

(8) माता की मृत्यु के वर्णन में कौन सा रस रहता है?
(a) हास्य (b) भयानक
(c) करुण (d) वीर

(9) रामचरितमानस के 'राम–लक्ष्मण–परशुराम–संवाद' में तुलसी ने किस रस का प्रयोग किया है?
(a) शांत रस (b) शृंगार रस
(c) वीर रस (d) भक्ति रस

(10) हरिश्चन्द्र नाटक के 'श्मशान–वर्णन' में किस रस की अनुभूति होती है?
(a) करुण रस (b) वीभत्स रस
(c) भयानक रस (d) शांत रस

(11) महाकाव्य में जीवन का चित्रण होता है–
(a) खंड चित्रण (b) समग्र चित्रण
(c) चित्रण नहीं होता (d) इनमें से कोई नहीं

(12) खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है–
(a) कामायनी (b) प्रियप्रवास
(c) साकेत (d) रामचरित मानस

(13) पार्वती मंगल तथा पथिक है–
(a) महाकाव्य (b) खंडकाव्य
(c) मुक्तक काव्य (d) प्रबंध काव्य

(14) जिसमें जीवन की किसी एक घटना का वर्णन ही कहलाता है–
(a) महाकाव्य (b) खंडकाव्य
(c) पाठ्य पुस्तक (d) गेय मुक्तक

(15) ऐसी पद बंध रचना जिसमें एक लघु (आख्यान) कथा वर्णित होती है तथा जिसके छंदों में गेयता होती है कहलाता है–
(a) पाठ्य पुस्तक (b) मुक्तक काव्य
(c) महाकाव्य (d) आख्यान के गीत

(16) कबीर, तुलसी एवं रहीम के नीति संबंधी दोहे उदाहरण हैं–
(a) पाठ्य मुक्तक (b) गेय मुक्तक
(c) आख्यानक गीत (d) इनमें से कोई नहीं

(17) 'वक्रोक्ति काव्यस्य जीवितम्' परिभाषा है–
(a) आचार्य विश्वनाथ (b) कुंतक
(c) जगन्नाथ (d) आनंद वर्धन

(18) सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है–
(a) रामचरितमानस (b) कामायनी
(c) साकेत (d) पदमावत

(19) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्द कहलाते हैं?
(a) अलंकार (b) आलोचना
(c) आलंबन (d) पात्र

(20) जहाँ शब्द चयन द्वारा कथन में सौंदर्य आता है वहाँ होता है–
(a) शब्दालंकार (b) अर्थालंकार
(c) उभया अलंकार (d) इनमें से कोई नहीं

(21) काव्य के अर्थ और भाव को चमत्कारपूर्ण बनाने वाले अलंकार कहलाते हैं–
(a) अर्थालंकार (b) शब्दालंकार
(c) अनुप्रास अलंकार (d) उपमा अलंकार

(22) ''लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता का अवतार'' में अलंकार है–
(a) भ्रांतिमान अलंकार (b) संदेह अलंकार
(c) विरोधाभास (d) इनमें से कोई नहीं

(23) ''चंद के भरम होत, मोद है कुमोदिनी को'' उदाहरण है–
(a) उपमा अलंकार (b) संदेह अलंकार
(c) भ्रांतिमान अलंकार (d) विरोधाभास अलंकार

(24) ''मोहब्बत एक मीठा जहर है'' इस वाक्य में अलंकार है–
(a) विभावना (b) विरोधाभास
(c) विशेषोक्ति (d) व्यतिरेक

(25) उपमेय के अंगों अथवा अवयवों पर उपमान के अंगों अथवा अवयवों का आरोप कहलाता है–
(a) सांग रूपक (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) अनुप्रास

(26) कविता के शाब्दिक अनुशासन को कहते हैं?
(a) रस (b) छन्द
(c) अलंकार (d) वाक्य

(27) छन्द के प्रकार हैं–
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

(28) मात्रा की गणना के आधार पर जिस छन्द की रचना होती है, उसे कहते हैं–
(a) वर्णिक छन्द (b) मात्रिक छन्द
(c) घनाक्षरी छन्द (d) दोहा छन्द

(29) कवित्त के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–
(a) 36 (b) 33
(c) 31 (d) 28

(30) हिन्दी काव्य में मुक्त छन्द के प्रवर्तक हैं–
(a) सुमित्रानन्दन पंत (b) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
(c) महादेवी वर्मा (d) जयशंकर प्रसाद

(31) दुर्मिल में वर्णों की संख्या होती है–
(a) 26 (b) 28
(c) 32 (d) 24

(32) दोहा छन्द का उल्टा होता है–
(a) सोरठा (b) सवैया
(c) कवित्त (d) छप्पय

(33) 'यति का छन्द में अर्थ है–
(a) विराम (b) लय
(c) गति (d) तुक

(34) उर्दू और फारसी की छन्द शैली कहलाती है–
(a) गजल (b) रुबाई
(c) चौपाई (d) इनमें से कोई नहीं

(35) मात्रिक छन्द का उदाहरण है–
(a) कवित्त (b) सवैया
(c) सोरठा (d) इनमें से कोई नहीं

(36) माधुर्य काव्य गुण किन रसों में पाया जाता है?
(a) वीर रस (b) शृंगार रस
(c) करुण रस (d) हास्य रस

(37) काव्य गुणों की संख्या कितनी मानी गई है–
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

(38) जिस काव्य गुण विशेष के कारण सहृदय का चित्त व्याप्त हो जाता है अर्थात् सहृदय के चित्त में अर्थ पूरे का पूरा रम जाता है उसे कहते हैं–
(a) माधुर्य गुण (b) ओज गुण
(c) प्रसाद गुण (d) कोई गुण नहीं

उत्तर– (1) (d) (2) (a) (3) (b) (4) (a) (5) (a) (6) (a) (7) (b) (8) (c) (9) (c) (10) (b) (11) (b) (12) (a) (13) (b) (14) (b) (15) (d) (16) (b) (17) (b) (18) (a) (19) (a) (20) (a) (21) (a) (22) (b) (23) (c) (24) (b) (25) (a) (26) (b) (27) (a) (28) (b) (29) (d) (30) (b) (31) (d) (32) (a) (33) (a) (34) (a) (35) (c) (36) (b) (37) (b) (38) (c).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) आचार्य भरत को ..... काव्य की आत्मा माना है। (रस को/अलंकार को)

(2) आश्रय के चित्र में उत्पन्न होने वाले अस्थाई मनोविकारों को ..... कहते हैं। (संचारी भाव/स्थाई भाव)

(3) भाव पक्ष में ..... प्रधान होता है। (रस/अलंकार)

(4) संचारी भाव की संख्या ..... मानी गई है। (11/33)

(5) स्थायी भाव की संख्या ..... मानी गई है। (10/12)

(6) प्रत्येक रस का एक ..... नियत होता है। (स्थाई भाव/संचारी भाव)

(7) रस के प्रमुख भेद ..... होते हैं। (10/12)

(8) रस के प्रमुख अंग ..... होते हैं। (4/5)

(9) वीभत्स रस का स्थाई भाव ..... होता है। (विस्मय/जुगुप्सा)

(10) विभाव के ..... प्रकार होते हैं। (3/4)

(11) अनुभाव के भेद ..... होते हैं। (2/3)

(12) आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाएँ .....कहलाती हैं। (अनुभाव/विभाव)

(13) स्थाई भाव को जागृत करने वाले कारण ..... कहलाते हैं। (आलंबन/उद्दीपन)

(14) क्रोध स्थाई भाव जागृत होकर ..... रस के रूप में परिणित होता है। (रौद्र/हास्य)

(15) व्यंग्योक्ति को पढ़कर, देख कर अथवा सुनकर ..... रस की निष्पत्ति होती है। (हास्य/अद्भुत)

(16) काव्य के भेद ..... होते हैं। (2/3)

(17) ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्य ने ..... कहा है। (जगन्नाथ/विश्वनाथ)

(18) खंडकाव्य सर्गबद्ध होना आवश्यक ..... माना जाता है। (सही/नहीं)

(19) कुरुक्षेत्र ..... हैं। (खंडकाव्य/महाकाव्य)

(20) महाकाव्य में ..... सर्ग होते हैं। (4/8)

(21) रामचरितमानस महाकाव्य ..... का है। (तुलसीदास/सूरदास)

(22) मुक्तक काव्य ..... होते हैं। (स्वतंत्र/क्रमबद्ध)

(23) मधुशाला ..... काव्य है। (मुक्तक/प्रबंध)

(24) बिहारी सतसई रचना ..... की है। (बिहारी/घनानंद)

(25) मुक्तक काव्य में प्रत्येक ..... का स्वतंत्र अर्थ होता है। (छन्द/रस)

(26) सूरदास के पद ..... कहलाते हैं। (मुक्त/प्रबंध)

(27) ..... के दो भेद महाकाव्य और खंडकाव्य हैं। (प्रबंध काव्य/मुक्तक काव्य)

(28) रागात्मकता की प्रधानता वाले मुक्तक को ..... कहते हैं। (पाठ्य मुक्तक/गेय मुक्तक)

(29) शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ाने वाले अलंकरण को ..... कहते हैं। (छन्द/अलंकार)

(30) ..... अलंकार में अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। (संदेह/भांतिमान)

(31) जहाँ कथन में शब्दगत और अर्थगत दोनों ही प्रकार का चमत्कार और सौंदर्य हो वहाँ .....होता है। (शब्दालंकार/उभया अलंकार)

(32) किसी विशेष समानता के कारण किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहाँ ..... होता है। (भ्रांतिमान/संदेह)

(33) काव्य का शरीर ..... कहा जाता है। (छन्द/अलंकार)

(34) उपमान की अपेक्षा उपमेय को काफी बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया जाता है। वह ..... कहलाता है। (विभावना/व्यतिरेक अलंकार)

(35) छन्द शास्त्र में 'पाद' का अर्थ छन्द का ..... भाग होता है। (चतुर्थ/तृतीय)

(36) एक छन्द में ..... से अधिक चरण हो सकते हैं। (4/2)

(37) ..... सवैया के प्रत्येक चरण में 7 भगज और दो गुरु होते हैं। (मात्रिक/मतगयंद)

(38) ..... वर्णों का एक गण होता है। (2/3)

(39) छन्द में ह्रस्व को लघु दीर्घ को ..... कहते हैं। (गुरु/बड़ा)

@MP_BOARD_2 (Telegram)

(40) सोरठा में .... मात्राएं होती हैं। (24/26)

(41) मतगयंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में .... वर्ण होते हैं (23/28)

(42) जिनके चारों चरणों में समान मात्राएं हों .... कहलाता है। (सम मात्रिक छन्द/विषम मात्रिक छन्द)

(43) 22 से 26 मात्रा वाले छन्द को .... कहा जाता है। (कवित/सवैया)

(44) शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति या व्यापार .... को कहते हैं। (शब्द गुण/शब्द शक्ति)

(45) शब्द शक्ति .... प्रकार की होती है। (3/4)

(46) शब्द और अर्थ का साक्षात संबंध .... कहलाता है। (अभिधा/व्यंजना)

(47) जिस शब्द शक्ति से प्रचलित अर्थ का बोध न होकर इससे संबंधित अन्य अर्थ का बोध हो उसे .... कहते हैं। (लक्षणा/व्यंजना)

(48) शब्द की जिस शक्ति से प्रचलित अर्थ एवं लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी तीसरे अर्थ का बोध हो उसे .... कहते हैं। (अभिधा/व्यंजना)

(49) किसी शब्द का गूढ़ या सूक्ष्म अर्थ .... शब्द शक्ति से प्रकट होता है। (लक्षणा/व्यंजना)

(50) जो गुण काव्य में जोश और ओज उत्पन्न करता है, वह .... कहलाता है। (प्रसाद गुण/औज गुण)

(51) शृंगार, शांत, करुण रस में विशेष रूप से .... पाया जाता है। (प्रसाद गुण/माधुर्य गुण)

(52) हे प्रभु आनंद दाता। ज्ञान हमको दीजिए में .... गुण है। (प्रसाद/ओज)

(53) .... में ट वर्ण का तथा संयुक्त वर्णों का अधिक प्रयोग किया गया है। (ओज गुण/प्रसाद गुण)

(54) रौद्र,वीर,और वीभत्स रसों में .... पाया जाता है। (माधुर्य गुण/औज गुण)

(55) काव्य में बिम्ब को .... माना जाता है।

(56) बिम्ब के भेद .... होते हैं।

(57) विधान हिंदी साहित्य में कविता की .... है।

(58) बिम्ब शब्द अंग्रेजी के .... का हिंदी रूपांतर है।

(59) काव्य में कार्य की मूर्ति करण के लिए सटीक .... होती है।

(60) पाश्चात्य काव्य शास्त्र में .... कविता का अनिवार्य अंग माना है।

(61) उमाशंकर जोशी ने अपनी कविता 'बगुली के पंख' में .... का सुंदर प्रयोग किया है।

उत्तर- (1) [illegible] (2) संचारी भाव (3) रस (4) 33 (5) 10 (6) [illegible] (7) 10 (8) 4 (9) जुगुप्सा (10) 3 (11) 2 (12) अनुभाव (13) आलंबन (14) रौद्र (15) हास्य (16) (17) जगन्नाथ (18) नहीं (19) खंडकाव्य (20) 8 (2 तुलसीदास (22) स्वतंत्र (23) मुक्तक (24) बिहारी (25) छं (26) मुक्तक (27) प्रबंध काव्य (28) गेय मुक्तक (29) अलंका (30) संदेह (31) उभयालंकार (32) भ्रांतिमान (33) छंद (3 व्यतिरेक अलंकार (35) चतुर्थ (36) 4 (37) मत्तगयंद (38) (39) गुरू (40) 24 (41) 23 (42) सम मात्रिक छंद (43) सवै (44) शब्द शक्ति (45) 3 (46) अभिधा (47) लक्षणा (4 व्यंजना (49) लक्षणा (50) ओज गुण (51) माधुर्य गुण (5 प्रसाद (53) ओज गुण (54) ओज गुण (55) शब्द चित्र (5 तीन (57) शैली (58) इमेज (59) बिम्ब योजना (60) बिम् (61) चाक्षुष बिम्ब।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए-

(1)

'अ'	'ब'
(1) महाकाव्य	(a) झांसी की रानी
(2) खंडकाव्य	(b) बिहारी सतसई
(3) आख्यानक गीतियां	(c) पंचवटी
(4) मुक्तक काव्य	(d) कामायनी
(5) रश्मिरथी	(e) रामधारीसिंह दिनकर

उत्तर- (1) (d) (2) (c) (3) (a) (4) (b) (5) (e).

(2)

'अ'	'ब'
(1) आचार्य रामचंद्र शुक्ल	(a) सांग रूपक
(2) उपमेय में उपमान का आरोप	(b) अलंकार काव्य की आत्मा
(3) उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ	(c) संदेह अलंकार
(4) इसमें भ्रम दूर करना संभव नहीं	(d) व्यतिरेक अलंकार
(5) इसमें अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है।	(e) भ्रांतिमान अलंकार

उत्तर- (1) (b) (2) (a) (3) (d) (4) (e) (5) (c).

(3)

'अ'	'ब'
(1) छन्द के प्रकार	(a) वर्णिक छन्द
(2) वर्ण की गणना वाला छन्द	(b) लघु एवं दीर्घ
(3) मात्राओं की गणना वाला छन्द	(c) मात्रा
(4) वर्ण	(d) दो
(5) वर्ण के बोलने में लगा समय।	(e) मात्रिक छन्द

उत्तर- (1) (d) (2) (a) (3) (e) (4) (b) (5) (c)

(4)

'अ'	'ब'
(1) चारु चंद्र की चंचल किरणें	(a) माधुर्य गुण
(2) खेल रही है जल थल में बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी	(b) प्रसाद गुण
(3) यही आता है इस मन में, छोड़ धन-धाम जाकर, मैं भी रहूं उसी वन में	(c) ओज गुण
(4) माधुर्य गुण	(d) वीर रस
(5) प्रसाद गुण	(e) शृंगार रस
(6) ओज गुण	(f) शांत रस

उत्तर- (1) (a) (2) (c) (3) (b) (4) (e) (5) (f) (6) (d).

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये।

(1) वात्सल्य रस को दसवें रस के रूप में स्थापित करने वाले कवि का क्या नाम है?

(2) शांत रस का स्थाई भाव क्या है?

(3) एक ही स्थाई भाव के बीच-बीच में परिस्थितिवश अनेक भावों का संचार होता है इन भावों को क्या कहते हैं?

(4) अब मैं नाच्यो बहुत गोपाला मैं कौन सा रस है।

(5) रस क्या है? लिखिए।

(6) भयानक रस का स्थाई भाव बताइए।

(7) अनुभाव के प्रकार बताइए।

(8) संचारी भाव की संख्या कितनी मानी गई है?

(9) प्रमुख संचारी भाव के नाम लिखिए।

(10) रस के अंगों के नाम लिखिए।

(11) आधुनिक काल के दो महाकाव्य के नाम लिखिए।

(12) खंडकाव्य का एक उदाहरण लिखिए।

(13) मुक्तक काव्य का एक उदाहरण लिखिए।

(14) प्रबंध काव्य के प्रकार लिखिए।

(15) मुक्तक काव्य के प्रकार लिखिए।

(16) विस्तृत कलेवर वाले काव्य को क्या कहते हैं?

(17) आधुनिक युग के गेय मुक्तक (प्रगीत) कवियों के नाम लिखिए।

(18) मुक्तक काव्य से आप क्या समझते हैं?

(19) प्रबंध काव्य किसे कहते हैं?

(20) जिस काव्य के छन्दों पर पूर्वापर संबंध ना हो उसे क्या कहते हैं?

(21) काव्य का सौंदर्य बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं। किसकी परिभाषा है?

(22) शब्द और अर्थ के आधार पर अलंकार के कितने प्रकार होते हैं?

(23) जहाँ काव्य की शोभा वृद्धि का आधार शब्द हो वहाँ कौन सा अलंकार होता है?

(24) जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाए वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(25) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है किस अलंकार का उदाहरया है?

(26) "जान श्याम घनश्याम को नाच उठे वन मोर"। किस अलंकार का उदाहरण है?

(27) कविता में रुकने और आगे बढ़ने के नियम को क्या कहते हैं?

(28) छन्द के प्रकार लिखिए।

(29) दुर्मिल सवैया का दूसरा नाम क्या है?

(30) प्रत्येक पंक्ति में 31 वर्ण वाली रचना क्या कहलाती है?

(31) इसमें चार पंक्तियाँ होती है। पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है। तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है। यह उर्दू और फारसी की एक शैली है क्या कहलाती है?

(32) "काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।" किसकी परिभाषा है?

(33) बिम्ब के भेद के नाम बताइए।

(34) बिम्ब का शाब्दिक अर्थ बताइए।

(35) बिम्ब का प्रयोग साहित्य में कब से होता रहा है?

(36) किस कवि की पहचान एक बिम्ब धर्मी कवि के रूप में है?

(37) एंद्रिय बिम्ब के प्रकार लिखिए।

(38) प्रेरक अनुभूति के आधार पर बिम्ब के प्रकार बताइए।

(39) शमशेर बहादुर सिंह की अप्रतिम सफलता के प्रमुख साधन क्या है?

उत्तर- (1) वात्सल्य रस को दसवें रस के रूप में स्थापित करने वाले कवि सूरदास हैं। (2) शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद है। (3) एक ही स्थायी भाव के बीच परिस्थितिवश अनेक भावों का संचार होता है तब उन भावों को संचारी भाव कहते हैं। (4) "अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल" में शान्त रस है। (5) काव्य के पठन पाठन से प्राप्त आनंद को रस कहते हैं। (6) भयानक रस का स्थायी भाव भय है। (7) अनुभाव के प्रकार सात्विक, कायिक, मानसिक और आहार्य, (8) संवारी भावों की संख्या 33 मानी गयी है। (9) (i) स्वेद (ii) लज्जा (iii) गर्व (iv) कम्प (v) ग्लानि (vi) स्मृति (vii) पीड़ा (viii) उन्माद (ix) उत्सुकता (x) चिन्ता (xi) जड़ता (xii) चपलता।

(10) रस के अंग है- (i) भाव (ii) विभाव (iii) अनुभाव (iv) संचारी भाव।

(11) (i) रामचरितमानस (ii) कामायनी (iii) साकेत (iv) पद्मावत।
(12) खंडकाव्य - पंचवटी, सुदामा चरित, पथिक, पार्वती, मंगल
(13) मुक्तक काव्य का उदा. - मधुशाला, बिहारी सतसई।
(14) प्रबंध काव्य के प्रकार- (i) महाकाव्य (ii) खण्डकाव्य
(15) मुक्तक काव्य के प्रकार- (i) पाठ्य मुक्तक (ii) गेय मुक्तक
(16) विस्तृत कलेवर वाले काव्य को प्रबंध काव्य कहते हैं।
(17) आधुनिक युग के गेय मुक्तक कवियों के नाम- नागार्जुन, दुष्यंत कुमार तथा निराला।
(18) मुक्तक काव्य- मुक्तक काव्य ऐसी रचना है जिसमें कथा नहीं होती तथा जिसके छंद अर्थ की दृष्टि से पूर्वापर के प्रसंगों से मुक्त होते हैं इसमें प्रत्येक छंद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण रहता है।
(19) जब किसी काव्य में एक कथा का सूत्र विभिन्न छंदों के माध्यम से जुड़ा रहे तो वह प्रबंध काव्य कहलाता है। उदा. रामचरितमानस, पंचवटी।
(20) जिस काव्य के छंदों पर पूर्वापार सम्बन्ध ना हो, उसे मुक्तक काव्य कहते हैं।
(21) काव्य का सौंदर्य बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं। यह आचार्य विश्वनाथ की परिभाषा है।
(22) शुद्ध और अर्थ के आधार पर अलंकार 2 प्रकार के होते हैं। शब्दालंकार और अर्थालंकार।
(23) जहाँ पर काव्य की शोभा वृद्धी का आधार शुद्ध हो वहाँ पर शब्दालंकार होता है।
(24) जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाये वहां व्यतिरेक अलंकार होता है।
(25) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है, संदेह अलंकार का उदाहरण है।
(26) "जान श्याम घनश्याम को नाच उठे वन मोर" भ्रांतिमान अलंकार का उदाहरण है।।
(27) कविता में रूकने और आगे बढ़ने के नियम को यति कहते हैं।
(28) छन्द के दो प्रकार होते हैं- वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द।
(29) दुर्मिल सवैया का दूसरा नाम चंद्रकला है।
(30) प्रत्येक पंक्ति में 31 वर्ण वाली रचना कवित्त कहलाती है।
(31) इसमें चार पंक्तियाँ होती है। पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है। तीसरी पंक्ति स्वच्छन्द होती है। यह उर्दू, फारसी की शैली रूबाई कहलाती है।
(32) यह नगेन्द्र की परिभाषा है।
(33) बिम्ब के भेद- (i) ऐन्द्रिय बिम्ब (ii) काल्पनिक बिम्ब (iii) प्रेरक अनुभूति के आधार पर।
(34) बिम्ब शब्द अंग्रेजी के इमेज का हिन्दी रूपान्तर है। इसका अर्थ है- "मूर्त रूप प्रदान करना"।
(35) बिम्ब प्रयोग साहित्य में शुरू से होता आ रहा है। इसके प्रवर्तक सुनेरो के आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी हैं।
(36) एक बिम्बवाद के प्रवर्तन का श्रेय अंग्रेजी कवि टी.ई. ह्यू को है।
(37) ऐन्द्रिय बिम्ब के प्रकार- (i) चाक्षुष बिम्ब (ii) श्रव्य ब नादात्मक बिम्ब (iii) स्पर्श बिम्ब (iv) घ्रातव्य बिम्ब (v) आस्वाध्य बिम्ब।
(38) प्रेरक अनुभूति के आधार पर बिम्ब के प्रकार निम्न हैं- (i) सरल (ii) मिश्रित (iii) तात्कालिक (iv) संकुल (v) भावातीत (vi) विकीर्ण बिम्ब।
(39) उनकी कविताओं में जीवन के राग-विराग के साथ-साथ समकालीन सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं का कलात्मक चित्रण हुआ है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) वात्सल्य रस माता-पिता का पुत्र के प्रति प्रेम कहा जाता है
(2) शांत रस की उत्पत्ति वैराग्य उत्पन्न होने से होती है।
(3) अखियाँ हरिदर्शन की प्यासी में वियोग श्रृंगार रस है।
(4) प्रेमासक्ति का मूल आधार रति है।
(5) श्रृंगार रस के तीन भेद है।
(6) रस के 10 अंग होते हैं।
(7) रस को काव्य का शरीर कहा जाता है।
(8) जहाँ रस होता है वहाँ गुण अवश्य होता है।
(9) श्रृंगार रस को 'रसराज' कहा गया है।
(10) भयानक रस का रंग काला माना गया है।
(11) विभत्स रस का रंग नीला माना गया है।
(12) सूरसागर महाकाव्य है।
(13) अंधेर नगरी खंडकाव्य है।
(14) महाकाव्य सर्गबद्ध रचना होती है।
(15) खंडकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष या घटना क चित्रण नहीं होता है।
(16) मुक्तक काव्य किसी भी एक छन्द में लिखा अपने आप पूर्ण होता है।
(17) गेय मुक्तक में संगीतात्मकता विद्यमान नहीं रहती है।
(18) गेय मुक्तक को प्रगीत भी कहा जा सकता है।
(19) सूर कबीर तुलसी मीरा के गाए पद गेयमुक्तक की श्रेणी आते हैं।
(20) श्याम नारायण पांडे द्वारा रचित हल्दीघाटी का यु महाकाव्य है।
(21) चंपू काव्य के अंतर्गत नाटक एवं प्रहसन आते हैं।
(22) अलंकार का अर्थ दर्पण होता है।
(23) संदेह अलंकार के प्रयोग से अंत तक संशय बना रहता है
(24) जहाँ कारण के बिना कार्य का होना कहा जाता है व व्यतिरेक अलंकार होता है।

(25) अलंकार से काव्य में सुंदरता उत्पन्न होती है।
(26) रस्सी है या साँप में संदेह अलंकार है।
(27) जहाँ उपमेय में उपमान का भ्रम हो जाए वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।
(28) सांग रूपक अलंकार रूपक अलंकार का प्रकार नहीं है।
(29) छन्द पढ़ते समय विराम को तुक कहते हैं।
(30) दोहा चौपाई का उलटा होता है।
(31) दुर्मिल सवैया का दूसरा नाम चंद्रकला है।
(32) सोरठा के पहले दूसरे चरण में 13-11 मात्राएँ होती हैं।
(33) वर्णिक छन्द के प्रत्येक चरण में एक सा क्रम रहता है।
(34) रुबाई उर्दू फारसी की एक छन्द शैली है।
(35) मात्रिक छन्दों में गण होते हैं।
(36) कवित्त एक वर्णिक छन्द है।
(37) छन्द के दो प्रकार मात्रिक और वर्णिक होते हैं।
(38) वर्ण, मात्रा, यति, चरण, तुक एवं गण छन्द के अंग होते हैं।
(39) ओज गुण शांत रस की कविताओं में पाया जाता है।
(40) माधुर्य गुण में कोमल वर्णों की प्रधानता होती है।
(41) प्रसाद गुण प्राय: सभी रसों में पाया जाता है।
(42) जिस तरह वीरता, उदारता, दया आदि मनुष्य की आत्मा के धर्म हैं उसी तरह माधुर्य, ओज और प्रसाद रस के धर्म हैं।
(43) शब्द गुण को काव्य गुण भी कहते हैं।
(44) बिम्ब किसी पदार्थ का मानचित्र या मानसी चित्र होता है।
(45) स्मृति बिम्ब और कल्पित बिम्ब काल्पनिक बिम्ब के प्रकार हैं।
(46) बिम्ब से मस्तिष्क में किसी सादृश्य का चित्र नहीं उभरता है।
(47) बिम्ब विधान में भावनाओं को उत्तेजित करने की शक्ति होती है।
(48) बिम्ब किसी पदार्थ की प्रतिकृति के लिए प्रयुक्त नहीं होता है।
(49) बिम्ब सार्वभौमिक होते हैं।
(50) बिम्ब में नवीनता और ताजगी होती है।
(51) मुक्तिबोध ने अपनी रचनाओं में ध्वनि स्पर्श प्राकृतिक वैज्ञानिक आदि अनेक बिंबों का सजीव चित्रण किया है।
(52) फिराक गोरखपुरी की शायरी में आवश्यकतानुसार बिंबों का प्रभावी प्रयोग किया है।
(53) बिम्ब कल्पना द्वारा इंद्रीय अनुभव के आधार पर निर्मित नहीं होता है।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) सत्य (11) सत्य (12) सत्य (13) सत्य (14) सत्य (15) असत्य (16) सत्य (17) असत्य (18) सत्य (19) सत्य (20) असत्य (21) असत्य (22) असत्य (23) सत्य (24) असत्य (25) सत्य (26) असत्य (27) सत्य (28) असत्य (29) असत्य (30) असत्य (31) सत्य (32) सत्य (33) असत्य (34) सत्य (35) असत्य (36) असत्य (37) सत्य (38) सत्य (39) असत्य (40) सत्य (41) सत्य (42) असत्य (43) सत्य (44) सत्य (45) सत्य (46) असत्य (47) सत्य (48) असत्य (49) सत्य (50) सत्य (51) सत्य (52) सत्य (53) असत्य।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रस की परिभाषा देते हुए उसके भेद लिखिए।

उत्तर- रस की परिभाषा- काव्य के पठन-पाठन, चिंतन एवं श्रवण के दर्शन से प्राप्त आनंद को रस कहते हैं। या काव्य के पठन-पाठन से प्राप्त आनंद को रस कहते हैं। रस के दस भेद होते हैं-

(1) श्रृंगार (2) हास्य (3) करूण (4) वीर (5) रौद्र (6) भयानक (7) वीभत्स (8) अद्भुत (9) शान्त (10) वात्सल्य।

प्रश्न 2. रस के प्रमुख अंग कौन-कौन से हैं?

उत्तर- रस के 4 अंग होते हैं-

(i) स्थायी भाव (ii) विभाव (iii) अनुभाव (iv) संचारी भाव।

प्रश्न 3. रस निष्पत्ति में सहायक तत्व के नाम लिखिए।

उत्तर- रस निष्पत्ति- विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न 4. स्थायी भाव किसे कहते हैं?

उत्तर- स्थायी भाव- जो भाव स्थायी भाव से सहृदय के हृदय में निवास करते हैं स्थायी भाव कहलाते हैं।

प्रश्न 5. संचारी भाव किसे कहते हैं? किन्हीं दो संचारी भाव के नाम बताइए।

उत्तर- संचारी भाव- आश्रय के हृदय में उठते और नष्ट होते हैं वे भाव भी संचार करते रहते हैं। अर्थात् आते जाते रहते हैं उन्हें संचारी भाव कहते हैं। प्रमुख संचारी भाव- स्वेद, लज्जा, गर्व, स्मृति, पीड़ा, उन्माद।

प्रश्न 6. करुण रस की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर- करूण रस- जहाँ प्रियजन की मृत्यु या स्थायी वियोग का वर्णन सा दर्शन होता है। वहाँ करूण रस होता है।

करूण रस का उदाहरण- "सब बंधुन को सोच तजि, गुरुकुल को नेह।
हा! सुशील सुत किमि कियो, अनतलोक में गेह।।"

प्रश्न 7. वीर रस के लक्षण लिखिए।

उत्तर- वीर रस के लक्षण- वीर रस में उत्साह भाव की उत्पत्ति होती है। रोमांच, उग्रता आदि कुछ कर दिखाने की चेष्टाएं होती हैं।

@MP_BOARD_25_Telegram

प्रश्न 8. रस के आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं? लिखिए।
उत्तर- रस के तत्व- (1) विभाव, (2) अनुभाव, (3) व्यभिचारी भाव और (4) स्थायी भाव।

प्रश्न 9. विभाव किसे कहते हैं?
उत्तर- विभाव- स्थायी भाव के जागरण में सहयोग देने वाले कारण विभाव कहलाते हैं। ये तीन हैं।

प्रश्न 10. अनुभाव के भेद लिखिए।
उत्तर- अनुभाव- आश्रय की चेष्टाएँ ही अनुभाव कही जाती है। ये दो प्रकार के होते हैं-
(i) कायिक अनुभाव- आश्रय की शारीरिक चेष्टाएँ।
(ii) सात्विक अनुभाव- आश्रय की हृदयगत चेष्टाएँ।

प्रश्न 11. विभाव और अनुभाव में अंतर लिखिए।
उत्तर- विभाव व अनुभाव में अन्तर-

	विभाव	अनुभाव
(1)	स्थायी भावों के जागरण में सहयोग देने वाले कारण विभाव कहलाते हैं।	आश्रय की चेष्टाएँ ही अनुभाव कहलाती हैं।
(2)	विभाव 3 होते हैं- आश्रय, आलम्बन, उद्दीपन	अनुभाव 2 प्रकार के होते हैं- कायिक अनुभाव, सात्विक अनुभाव।

प्रश्न 12. स्थाई भाव और संचारी भाव में अंतर लिखिए।
उत्तर-

	संचारी भाव	स्थायी भाव
(1)	संचारी भावों की संख्या 33 है।	स्थायी भावों की संख्या 10 है।
(2)	एक रस में कई संचारी भाव होते हैं।	एक रस का एक स्थायी भाव होता है।
(3)	ये स्थायी भाव के अंग है।	ये संचारी भाव के अंग नहीं है।
(4)	ये आते-जाते रहते हैं।	स्थायी भाव संचारित नहीं होते।
(5)	ये स्थायी भाव के जागरण में सहायक होते हैं।	स्थायी भाव संचारी भावों को नहीं जगाते।

प्रश्न 13. आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव में अंतर लिखिए।
उत्तर- आलम्बन- जिसके कारण (जिसको देखकर) भाव जागृत होते हैं।
उद्दीपन- आलम्बन की चेष्टाएं एवं वातावरण जो भावों के जागरण में सहायक होते हैं।

प्रश्न 14. रस किसे कहते हैं?
उत्तर- काव्य में रस से तात्पर्य प्राप्त आनंद से हैं। रस को काव्य की आत्मा कहा गया है। इसका काव्य में वही स्थान है, शरीर में प्राण का।
'काव्य के पठन-पाठन, चिंतन एवं श्रवण दर्शन से प्राप्त आ को रस कहते हैं। या काव्य के पठन-पाठन से प्राप्त आनंद रस कहते हैं।

प्रश्न 15. काव्य किसे कहते हैं?
उत्तर- परिभाषा- रमणीय अर्थ को व्यक्त करने व शब्दावली को काव्य कहते हैं। - पंडितराज जगन्नाथ
रस युक्त वाक्यों को काव्य कहते हैं - आचार्य विश्वनाथ।

प्रश्न 16. काव्य के भेद बताइए।
उत्तर- काव्य के दो भेद माने गये हैं-
(i) दृश्य काव्य (ii) श्रव्य काव्य।

प्रश्न 17. शैली की दृष्टि से काव्य के भेद लिखिए।
उत्तर- शैली के अनुसार 3 भेद माने गये हैं-
(i) महाकाव्य (ii) खण्डकाव्य (iii) मुक्तक काव्य।

प्रश्न 18. प्रबंध काव्य का अर्थ बताते हुए उसके लिखिए।
उत्तर- प्रबंध काव्य- इसमें कोई एक कथा आद्योप क्रमबद्ध रूप से गठित हो और कहीं भी तारतम्य न टूटता उस कथा को पुष्ट करने के लिए अन्य कई अन्तर्कथाएँ भी सकती हैं। प्रबंध काव्य विस्तृत होता है। उसमें जीवन विभिन्न झाँकियाँ रहती है।
भेद- महाकाव्य, खण्डकाव्य, आख्यानक गीतियाँ।

प्रश्न 19. खंड काव्य किसे कहते हैं? लिखिए
उत्तर- खण्डकाव्य- इसमें जीवन के किसी एक भाग या ख का वर्णन होता है। इसमें एक छंद एक उद्देश्य और एक रस सकता है।

प्रश्न 20. महाकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- महाकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
(1) महाकाव्य मानव-जीवन के सभी महत्वपूर्ण पक्षों चित्रित करने वाली विस्तृत काव्यरचना है।
(2) इसमें नायक के जीवन के सभी उज्जवल पक्षों का चि होता है।
(3) इसमें आदर्श जीवन शैली और जातीय आदर्शों एवं म उद्देश्यों की स्थापना होती है।
(4) इसकी कथा सर्गबद्ध प्रवाहमयी एवं मार्मिक होती है।
(5) इसमें विविध छंदों, अलंकारों और रसों का सुन्दर परि होता है।
(6) इसमें शृंगार, वीर व शान्त आदि रसों की प्रधानता रहती

प्रश्न 21. खंडकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- खण्ड-काव्य के प्रमुख लक्षण या विशेष निम्नलिखित हैं-

(1) खण्ड-काव्य में जीवन के किसी एक पक्ष या घटना का चित्रण होता है।
(2) इसमें घटना के माध्यम से जीवन के आदर्शों की अभिव्यक्ति होती है।
(3) इसमें आदर्श जीवन शैली और जातीय आदर्शों की स्थापना होती है।
(4) इसमें एक छंद, एक उद्देश्य और एक रस की व्यंजना होती है।

प्रश्न 22. दो महाकाव्य और उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।
उत्तर-

महाकाव्य	रचनाकार
(1) रामचरितमानस	तुलसीदास
(2) पद्मावत	जायसी

प्रश्न 23. दो खंडकाव्य और उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।
उत्तर- हिन्दी के प्रमुख खण्ड काव्य तथा उनके रचनाकारों के नाम निम्नलिखित हैं-

खण्ड काव्य	रचनाकर
(1) पंचवटी	मैथिलीशरण गुप्त
(2) पथिक	रामनरेश त्रिपाठी
(3) सुदामा चरित	नरोत्तमदास
(4) भस्मासुर	नागार्जुन
(5) जयद्रथ वध	मैथिलीशरण गुप्त
(6) महाप्रस्थान	नरेश मेहता
(7) रश्मि-रथी	दिनकर

प्रश्न 24. आख्यान गीत किसे कहते हैं उदाहरण लिखिए।
उत्तर- आख्यानक गीत- खण्ड काव्य और महाकाव्य से बहुत ही अलग कविता युक्त कहानी को आख्यान गीत कहते हैं। इसमें पराक्रम, वीरता, बलिदान, साहस, शृंगार और करूणा आदि को कविता के द्वारा समाहित कर कथा बनाई जाती है। उदा. झाँसी की रानी, विकट भट।

प्रश्न 25. प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य में अंतर लिखिए।
उत्तर- प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित है-

	प्रबन्ध काव्य	मुक्तक काव्य
(1)	प्रबन्ध काव्य की कथा विस्तृत होती है।	मुक्तक काव्य का विषय केवल एक भाव होता है।
(2)	प्रबन्ध काव्य अनेक छन्द प्रधान होता है।	मुक्तक काव्य एक ही छंद में समेटा जा सकता है।
(3)	प्रबन्ध काव्य में अनेक रस होते हैं।	मुक्तक काव्य में एक रस प्रधान होता है।
(4)	प्रबन्ध काव्य में अनेक सर्ग होते हैं।	मुक्तक काव्य दो पंक्ति वाला एक ही छंद हो सकता है।
(5)	प्रबन्ध काव्य के उदाहरण- रामचरितमानस	मुक्तक काव्य के उदाहरण- बिहारी सतसई

प्रश्न 26. महाकाव्य और खंडकाव्य में अंतर लिखिए।
उत्तर- महाकाव्य और खण्ड काव्य में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित है-

क्र.	महाकाव्य	खण्ड काव्य
(1)	महाकाव्य में जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया जाता है।	खण्ड काव्य में जीवन के एक पक्ष का चित्रण किया जाता है।
(2)	इसमें अनेक जीवन आदर्शों की स्थापना होती है।	इसमें एक जीवन आदर्शों की स्थापना होती है।
(3)	यह अनेक घटनाओं पर आधारित होता है।	यह एक घटना पर आधारित होता है।
(4)	इसमें अनेक रस एवं छंदों का प्रयोग किया जाता है।	इसमें एक रस एवं एक छंद का प्रयोग होता है।
(5)	इसका आकार विशाल होता है।	इसका आकार लघु होता है।

प्रश्न 27. पाठ्य पुस्तक एवं गेय मुक्तक में अंतर लिखिए।
उत्तर- 1. गेय पुस्तक- इसमें भाव और संगीत की प्रमुखता होती है। यह प्रेम और करुणा आदि भावों पर आधारित होते हैं।
2. पाठ्य पुस्तक- इसमें एकानुभूति भाव या कल्पना की स्थिति रहती है। प्रेम, वैराग्य, उपदेश आदि इसके प्रमुख विषय होते हैं। यह विषयप्रधान एवं कलात्मक होता है।
कबीर, तुलसी, मीरा, रहीम, रसखान, बच्चन, पनत आदि के गीत मुक्तक काव्य के उदाहरण हैं।

प्रश्न 28. मुक्तक काव्य के रूप लिखिए तथा उसके प्रमुख लक्षण भी लिखिए।
उत्तर- मुक्तक काव्य के प्रमुख लक्षण (विशेषताएँ) निम्नलिखित हैं-
(1) मुक्तक-काव्य किसी एक भाव, अनुभाव, कल्पना का चित्रण करता है।
(2) किसी भी एक छंद में लिखा अपने आप में पूर्ण होता है।
(3) स्वतंत्र रूप से रसानुभूति बनाने में होता है।
(4) इसके छंद अर्थ की दृष्टि से पूर्वा पर के प्रसंगों से मुक्त होते हैं।
(5) यह लोक व्यवहार नीति, प्रेम, वैराग्य के भावों पर आधारित होता है।

@MP_BOARD_25(Telegram)

प्रश्न 29. महाकाव्य किसे कहते हैं? पाँच महाकाव्य के नाम और रचनाकारों के नाम लिखिए।

उत्तर- महाकाव्य में जीवन का सम्र रूप में चित्रण होता है। इसका नायक उदात्त एवं महत् चरित्र वाला होता है। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध होती है। गरिमामयी शैली, जीवन के आदर्श की स्थापना, यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति की जाती है।

हिन्दी के प्रमुख महाकाव्य तथा उनके रचनाकारों के नाम निम्नलिखित हैं-

महाकाव्य	रचनाकार
(1) रामचरितमानस	तुलसीदास
(2) साकेत	मैथिलीशरण गुप्त
(3) कामायनी	जयशंकर प्रसाद
(4) पद्मावत	जायसी।

प्रश्न 30. अलंकार की परिभाषा एवं भेद लिखिए।

उत्तर- अलंकार से आशय आभूषण से है जो वस्तु का अलंकृत करे, वह अलंकार है। काव्य में रमणीयता या चमत्कार उत्पन्न करने वाले तत्व को भी अलंकार कहते हैं। अलंकार की परिभाषा काव्य की शोभा बढ़ाने वाले त्व को अलंकार कहते हैं। अथवा शब्द और अर्थ के विशेश प्रयोग के कारण काव्य में जो चमत्कार या रमणीतय उत्पन्न हो जाती है, उसे अलंकार कहते हैं।

प्रश्न 31. अलंकारों के प्रकार पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- अलंकार के प्रकार- प्रमुख दो प्रकार के हैं शब्दालंकार और अर्थालंकार। तीसरा भेद उभयालंकार भी है।

शब्दालंकार- जिस रचना में शब्दों के कारण चमत्कार उत्पन्न हो अर्थात् शब्दालंकार में सौंदर्य शब्द विन्यास में निहित होता है उसे शब्दालंकार कहते हैं। अनुप्रास, यमक, वक्राक्ति तथा श्लेष आदि शब्दालंकार के भेद हैं।

अर्थालंकार- जिस रचना में अर्थ के कारण चमत्कार होता है वहाँ अर्थालंकार माना जाता है। अर्थात् अर्थालंकार में सौंदर्य, अर्थगत होता है, शब्दगत नहीं।

उभयालंकार- जिस रचना में शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार होता है उसे उभयालंकार कहते हैं।

प्रश्न 32. रूपक अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- रूपक अलंकार- जब उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है और दोनों में कोई भेद नही रह जाता है तब उस अलंकार को रूपक अलंकार कहते हैं।

प्रश्न 33. रूपक अलंकार के उदाहरण लिखिए।

उत्तर- रूपक अलंकार का उदाहरण-

चरण सरोज परगरन लागा।

प्रश्न 34. रूपक अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- देखिए प्रश्न 32 का उत्तर।

प्रश्न 35. संदेह अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- जहाँ रूप रंग और गुण की समानता के कारण कि वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो कि यह, वही वस्तु है, व संदेह अलंकार होता है। इसमें अंत तक संशय बना रहता है।

उदाहरण- (1) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है। कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।।

(2) तारे आसमान के हैं आये मेहमान बनि,
केशों में निशाने मुक्तावलि सजाई है।

प्रश्न 36. भ्रांतिमान अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- भ्रांतिमान अलंकार- जहाँ प्रस्तुत वस्तु को देख किसी विशेष समानता के कारण किसी दूसरी वस्तु का भ्रम जाये, वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।

उदा. (1) चंद के भरम होत, मोद है कुमुदिनी को।

(2) नाक का मोती अधर की कांति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है, अन्य शुक यह कौन है?

प्रश्न 37. विरोधाभास अलंकार की परिभाषा लिखिए

उत्तर- काव्य में जहाँ पर किसी पदार्थ, गुण या क्रिया वास्तविक विरोध न होने पर भी विरोध का आभास हो, विरोधाभास अलंकार होता है।

जैसे- (1) मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ।
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ।

विरोधाभास अलंकार का उदाहरण-

या मुख की मधुराई कहा कहाँ
मीठी लगे अखियान लुनाई।

प्रश्न 38. व्यतिरेक अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- व्यतिरेक अलंकार की परिभाषा- व्यतिरेक काव्य जहाँ उपमेय की उपमान से श्रेष्ठता या न्यूनता बतलाई जाए व व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरण- संत शैल सम उच्च है, किन्तु प्रकृति सुकुमार।
अर्थ- संत पर्वत के समान उच्च तो है, स्वभाव से कोमल पर्वत की भांति कठोर नहीं। यहाँ उपमान से श्रेष्ठ है।

उदाहरण- 'जनम सिंधु बन बंध विष, मलीन सकलेक।
सिय मुख समतापाव किमि, चन्द्र बापुरो रंग।।

प्रश्न 39. छन्द किसे कहते हैं?

उत्तर- "जो रचना नियत मात्रा, वर्ण गति एवं चरण सम्ब नियमों के अनुसार होती है उसे छन्द कहते हैं।" प्रत्येक कवि किसी न किसी छन्द में होती है। कविता की पंक्तियों लम्बाई के आधार पर छन्द का निर्णय होता है। लम्बाई

नापने का आधार "मात्रा या वर्ण" होता है। इसी आधार पर छन्दों को 'मात्रिक या वर्णिक" छन्द के नाम से पुकारा जाता है।

छंद के अंगों के नाम निम्नवत् हैं- (1) चरण, पद या पंक्ति (2) वर्णन (3) मात्राएँ (4) यति (5) गति।

प्रश्न 40. छन्द कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर- छन्द के दो प्रकार होते हैं-

(1) वर्णिक छन्द (2) मात्रिक छंद।

प्रश्न 41. वर्णिक और मात्रिक छन्द में अंतर लिखिए।

उत्तर- वार्णिक और मात्रिक छन्द में अंतर इस प्रकार है-

क्र.	वर्णिक छन्द	मात्रिक छन्द
(1)	जिन छन्दों की रचना वर्णों की गिनती के आधार पर होती है। उन्हें 'वर्णिक छन्द' कहते है।	जिन छंदों की रचना में, मात्राओं की गिनती की जाती है, वे 'मात्रिक छंद' होते हैं।
(2)	उदाहरण- मालिनी, शिखरणी, सवैया आदि।	उदाहरण- दोहा, सोरठा, रोला, चौपाई आदि।

प्रश्न 42. सोरठा के लक्षण लिखिए।

उत्तर- सोरठा- दोहे को उलट देने से सोरठा बन जाता है। इसके सम चरणों (दूसरे और चौथे चरण) में 13-13 मात्राएँ होती हैं तथा विषम चरणों (पहले और तीसरे) में 11-11 मात्राएँ होती हैं। परन्तु दोहे के विपरीत इसके सम चरणों (दूसरे और चौथे चरण) में अंत्यानुप्रास या तुक नहीं रहती, विषम चरणों (पहले और तीसरे) में तुक होती है।

प्रश्न 43. कवित्त छन्द की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- कवित्त छन्द- प्रत्येक पंक्ति में 31 वर्णों वाली रचना कवित्त कहलाती है।

लक्षण- (1) कवित्त एक वर्णिक छन्द है। (2) इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण आते हैं। (3) प्रत्येक चरण में 16-15 मात्राओं पर विराम होता है। (4) प्रत्येक चरण का अंतिम वर्ण गुरु होता है।

प्रश्न 44. सवैया छन्द की परिभाषा एवं प्रकार लिखिए।

उत्तर- सवैया- यह एक छन्द है। यह चार चरणों का समपाद वर्ण छंद है। सवैया में 22 से लेकर 26 तक वर्ण होते हैं। सवैया के कई भेद हैं - मदिरा, मतगयन्द, दुर्मिल, किरीट आदि।

प्रश्न 45. रुबाई छन्द की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- उर्दू और फारसी का एक छंद विशेष जिसका मूल वजन 1 तगण, 1 पराग, 1सगण और 1 मगण होता है। इसके पहले, दूसरे और चौथे पद में काफिया होता है। कभी-कभी चारों ही सानुप्रास होते हैं, परंतु अच्छा यही है कि चौथा सानुप्रास न हो।

प्रश्न 46. कवित्त छन्द का उदाहरण लिखिए।

उत्तर- कवित्त छंद का उदाहरण- सिसिर में ससि को सरूप पावें सविताऊ धाम हू में चांदनी की द्रुति दम कति है।
सेनापति होते सीतलता है, सहस्र गुनी, रजनी की झाँई बासर में झमकति है।।
चाहत चकोर सूर ओर दृग करि, चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदनी को, ससिसंक पंकजनि फूलि न सकति है।

प्रश्न 47. सवैया छन्द का उदाहरण एवं प्रकार लिखिए।

उत्तर- सवैया छन्द एक वर्णिक छन्द है तथा इसमें कुल 23 वर्ण होते हैं।

उदाहरण- नागिन सी नथनी डसती,
अरू माथ चुभे ललकी बिंदिया री
मोतिन माल है कांस बना, अब हाथ का बंध
बना कंगना री।। हाथ की फिकी पड़ी मेहंदी
अब पाँव महावर छूट गया री।

सवैया के प्रकार- मदिरा, सुमुखि, दुर्मिल, किरीट, गंगोदक, मुक्तहरा, वाम।

प्रश्न 48. मतगयंद सवैया के लक्षण और उदाहरण लिखिए।

उत्तर- मतगयंद छन्द के लक्षण- यह वर्णिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 7 भगण, 2 गुरु के क्रम से 23 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पर को तज डारों।
अठहुँ सिद्धि नवौ निधि को सुख नन्द की गाय चराई बिसारों।।
ए रसखान कबौ इन आंखिन से ब्रज के बन बात तड़ास निहों।
कोटिक हुँ कल धौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर बारों।।

प्रश्न 49. दुर्मिल सवैया के लक्षण और उदाहरण लिखिए।

उत्तर- दुर्मिल- इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं। इसे चन्द्रकला भी कहते हैं।

उदाहरण- तड़पै तड़िता, चहुँ ओरन ते, छिति छाई समीरन की लहरें।
मदमाते महागिरि शृंगन पै, मन मंजु मयूरन के कहरें।

प्रश्न 50. दोहा और सोरठा में अंतर लिखिए।

उत्तर- दोहा और सोरठा दोनों ही अर्धसम मात्रिक छंद है। दोनों में ही चार चरण होते हैं। लेकिन दोनों में अंतर है। सोरठा, दोहा छंद का उल्टा है अर्थात् दोहा के विषम चरण में 13-13 मात्राएं होती हैं, सोरठा के विषम चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहा के सम चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सोरठा के सम चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

दोहा में तुक अंत में होती है, सोरठा के मध्य में होती है।

प्रश्न 51. शब्द शक्ति किसे कहते हैं? उसके भेदों के नाम लिखिए।

उत्तर- शब्दों के विभिन्न अर्थ बतलाने वाले व्यापार अथवा साधन को शब्द शक्ति कहते हैं। अथवा शब्द के अर्थ को चलाने वाली शक्ति को 'शब्द-शक्ति' कहते हैं। शब्दकोश के अनुसार ''शब्द की शक्ति उसके अन्तर्निहित अर्थ को व्यक्त करने का व्यापार है।''

शब्द शक्ति के तीन भेद होते हैं- (1) अभिधा (2) लक्षणा और (3) व्यंजना।

प्रश्न 52. शब्द शक्ति के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- (1) कौन से सुत? - बालिके (अभधा)

(2) है वहाँ वह वीर?- अंगद देवलोक सिधाइये। (लक्षणा)

(3) सिन्धु तर्‌यो उनके बनरा, तुम पै धनु रख गई नतरी। (व्यंजना)

प्रश्न 53. अभिधा शब्द शक्ति की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- जिस शब्द के श्रवण मात्र से उसका परम्परागत प्रसिद्ध अर्थ सरलता से समझ में आ जाए, उसे 'अभिधा शब्द शक्ति' कहते हैं। इस अर्थ को वाच्यार्थ, मुख्यार्थ और अभिधेयार्थ भी कहते हैं। जैसे- (1) बैल एक उपयोगी पशु है (2) सिंह जंगल में रहता है।

यहाँ पर 'बैल' और 'सिंह' पशु विशेष के बोधक हैं।

प्रश्न 54. लक्षणा शब्द शक्ति उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- जब किसी शब्द का अभिधा के द्वारा मुख्यार्थ का बोध न हो, तब उस शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को 'लक्षणा शब्द शक्ति' कहते हैं। जैसे- (1) महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंह थे। (2) रामू तो गधा है।

यहाँ पर 'सिंह' और 'गधा' शब्दों का विशेष अर्थ होने से लक्षणा शब्द शक्ति है।

प्रश्न 55. व्यंजना शब्द शक्ति किसे कहते हैं? उदाहरण लिखिए।

उत्तर- जब अभिधा और लक्षणा शब्द शक्ति से किसी शब्द का अर्थ नहीं निकल पाता है और शब्द के वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भिन्न कोई अन्य विशिष्ट अर्थ या अन्य कोई भिन्न ध्वनियाँ निकलती हैं, तब उसे 'व्यंजना शब्द शक्ति' कहते हैं।

जैसे- (1) गंगा में गाँव है। यहाँ पर पवित्र गाँव व्यंजित है।

(2) संध्या हो गयी। इस वाक्य को माता पुत्री से कहे,तो अर्थ होगा- घर में दीपक जला दो या रोशनी कर दो।

प्रश्न 56. अभिधा और लक्षणा शब्द शक्ति में अंतर लिखिए।

उत्तर- वास्तविक अभिप्राय उसके साधारण अर्थ से कुछ भिन्न होता है। शब्द को जिस शक्ति से उसका वह साधारण से भिन्न और दूसरा वास्तविक अर्थ प्रकट होता है उसे लक्षण क

शब्द का वह अर्थ जो अभिधा शक्ति द्वारा प्राप्त न हो

लक्षणा शक्ति द्वारा प्राप्त हो लक्षितार्थ कहलाता है।

प्रश्न 57. लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति में

लिखिए।

उत्तर- लक्षणा शब्द शक्ति- इसमें वाच्यार्थ को छो

इससे संबंधित रूढ़ि या किसी प्रयोजन से अर्थ स्पष्ट हो

जैसे- पंकज के फूल ले आओ।

व्यंजना शब्द शक्ति- जहाँ गूढ़ार्थ/व्यंग्यार्थ ध्वनित हो

व्यंजना शक्ति होती है। जैसे- नंद बृज तीजे ठोकि बजा

प्रश्न 58. शब्द गुण या काव्य गुण की परिभाषा और प्र

लिखिए।

उत्तर- काव्य के आन्तरिक गुण को शब्द गुण या काव्

कहते हैं।

शब्द गुण के मुख्यत: तीन प्रकार हैं- (1) माधुर्य गुण (2)

गुण और (3) ओज गुण।

प्रश्न 59. प्रसाद गुण संपन्न कविताओं की क्या वि

है? लिखिए।

उत्तर- ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ते ही अर्थ ग्रहण हो

है वह प्रसाद गुणों से युक्त मानी जाती है उसे प्रसाद गुण

काव्य कहते हैं। स्वच्छता एवं स्पष्टता प्रसाद गुण की वि

मानी जाती है।

प्रश्न 60. ओज गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर- ओज गुण- काव्य के जिस गुण विशेष के कारण

का वित्त दीप्त हो जाता है, अर्थात् सहृदय के चित्त में तेज

संचार हो जाता है, उसे ओज गुण कहते हैं।

ओज गुण वीर, रौद्र और वीभत्स रसों में पाया जाता है।

ट,ठ,ड,ढ,ध आदि कठोर वर्णों का प्रयोग होता है।

लम्बे सामासिक शब्दों का प्रयोग इसमें होता है। ओज गु

प्रकृति माधुर्य से भिन्न होती हैं।

उदाहरण-

(1) अमर राष्ट्र उद्दण्ड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र यह मेरी बोली।

यह 'सुधार' समझौते वाली, मुझको भाती नहीं ठिठोली।

प्रश्न 61. माधुर्य गुण की परिभाषा उदाहरण

लिखिए।

उत्तर- माधुर्य गुण- काव्य के जिस गुण विशेष के

सहृदय का चित्त द्रवित हो जाता है, उसे माधुर्य गुण कह

यह गुण शृंगार, करुण और शान्त रसों में पाया जाता है।

में य,ल,म,व,च आदि कोमल वर्णों का प्रयोग किया

तथा समस्त शब्दों का प्रयोग बहुत कम या नहीं के बराबर

जाता है।

उदाहरण-

(1) मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर। - महादेवी

प्रश्न 62. माधुर्य और प्रसाद गुण में अंतर लिखिए।

उत्तर- प्रसाद गुण- काव्य के जिस गुण विशेष के कारण सहृदय
का चित्त व्याप्त हो जाता है, अर्थात् सहृदय के चित्त में अर्थ पूरे
का पूरा रम जाता है, उसे प्रसाद गुण कहते हैं।

यह गुण प्राय: सभी रसों में पाया जाता है। यह गुण ऐसी
रचनाओं में पाया जाता है, जिनके सुनने या पढ़ने मात्र से उनका
अर्थ सहज ही समझ में आ जाता है।

उदाहरण- पास भी आते हैं जो,
उनके हृदयों को 'हितैषी' सदा हर लेते।
लाख मलिन न क्यों मन हो,
उसमें भी बना अपना घर लेते।

माधुर्य गुण- देखिए प्रश्न क्र. 61 का उत्तर।

प्रश्न 63. ओज और माधुर्य गुण में अंतर लिखिए।

उत्तर- ओज और माधुर्य गुण में अंतर निम्न हैं-

ओज गुण	माधुर्य गुण
जस काव्य को पढ़ने या सुनने से मन में उत्साह, उत्तेजना या जोश उत्पन्न हो, उसे ओज गुण' कहते हैं।	जिस काव्य के श्रवण से आत्मा द्रवित हो जाए, मन आप्लावित हो जाए और बातों में अमृत घुल जाए, उसे माधुर्य गुण कहते हैं।
जैसे- (1) तूफानों की ओर घुमा दो, नाविक! निज पतवार आज हृदय में और सिंधु में साथ उठा है ज्वार।।	यह गुण विशेष रूप से शृंगार, शान्त और करुण रस में पाया जाता है। इसमें कोमल कान्त तथा मृदु पदावली एवं मधुर वर्णों का प्रयोग होता है।
(2) खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।	**जैसे-** (1) छाया करती रहे सदा, तुझ पर सुहाग की छाँव। सुख-दु:ख में ग्रीवा के, नीचे हो प्रियतम की बाँह।।
(3) वीरों का कैसा हो वसन्त? (4) कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए। एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।	(2) बसों मोरे नैनन में नन्दलाल मोहिनी मूरत साँवरी सूरत नैना बने बिसाल।।

प्रश्न 64. बिम्ब क्या है? उदाहरण के माध्यम से लिखिए।

उत्तर- बिम्ब शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' का हिन्दी रूपान्तर है। इसका अर्थ है- ''मूर्त रूप प्रदान करना''। काव्य में कार्य के मूर्तीकरण के लिए सटीक बिम्ब योजना होती है। काव्य में बिम्ब को वह शब्द चित्र माना जाता है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।

भारतीय काव्यशास्त्र में बिंब को काव्य क्रिया कल्प, विधि का अनिवार्य अंग कहा गया है। यह शब्दों द्वारा भारतीय काव्यशास्त्र में बिंब को काव्य क्रिया कल्प, विधि का अनिवार्य अंग कहा गया है। यह शब्दों द्वारा प्रस्तुत एन्द्रिय चित्र है जो मानवीय भावना प्रेरित रूपकात्मकता को अपने में स्थान देता है। ह्यूंग के अनुसार यह पदार्थों के आंतरिक सादृश्य की अभिव्यक्ति है। इसका निर्माण एन्द्रिय उत्तेजना से होता है।

प्रश्न 65. बिम्ब के भेद लिखिए।

उत्तर- बिम्बों के भेद

(1) ऐन्द्रिय बिम्ब - चाक्षुष बिम्ब, श्रव्य या नादात्मक बिम्ब, स्पर्श्य बिम्ब, घातव्य बिम्ब, आस्वाद्य बिम्ब।

(2) काल्पनिक बिम्ब - स्मृति बिम्ब, कल्पित बिम्ब

(3) प्रेरक अनुभूति के आधार पर - सरल बिम्ब, मिश्रित बिम्ब, तात्कालिक बिम्ब, संकुल बिम्ब, भावातीत बिम्ब विकीर्ण बिम्ब।

प्रश्न 66. प्रेरक अनुभूति के आधार पर बिम्ब के प्रकार लिखिए।

उत्तर- प्रेरक अनुभूति के आधार पर बिम्ब के प्रकार निम्न हैं- सरल बिम्ब, मिश्रित बिम्ब, तात्कालिक बिम्ब, संकुल बिम्ब, भावातीत बिम्ब, विकीर्ण बिम्ब।

प्रश्न 67. बिम्ब कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर- भाषा में बिम्ब के चार प्रकार होते हैं- दृश्य बिम्ब, श्रव्य बिम्ब, विचार बिम्ब तथा भाव बिम्ब। ❑

इकाई-3 आरोह भाग-2 गद्य खण्ड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) भक्तिन पाठ लिखा गया है-

(a) कहानी (b) आलेख
(c) रेखाचित्र (d) लेख

(2) जिठौत का अर्थ है-

(a) बड़ा भाई (b) ससुर का पुत्र
(c) जेठ का पुत्र (d) देवर का पुत्र

(3) भक्तिन का वास्तविक नाम था-

(a) मीरा (b) राधा
(c) लछमिन (d) सरस्वती

(4) भक्तिन गले में पहनती थी-

(a) मणिमाला (b) कंठी माला
(c) मोती माला (d) सोने की माला

@MP BOARD 25 (Telegram)

(5) महादेवी वर्मा का जन्म वर्ष है–
(a) 1905 (b) 1906
(c) 1907 (d) 1908

(6) 'यामा' काव्य-संग्रह है–
(a) मीराबाई का (b) महादेवी वर्मा का
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान का (d) जयशंकर प्रसाद का

(7) बाजार दर्शन पाठ के लेखक हैं–
(a) धर्मवीर भारती (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) विष्णु खरे (d) महादेवी वर्मा

(8) 'परख' उपन्यास के लेखक हैं–
(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) प्रेमचंद
(c) यशपाल (d) जैनेन्द्र कुमार

(9) बाजार दर्शन पाठ है–
(a) निबंध (b) कहानी
(c) रेखाचित्र (d) संस्मरण

(10) पर्चेजिंग पावर का अर्थ है?
(a) सामान (b) खरीदने की शक्ति
(c) अग्रिम राशि (d) इच्छा

(11) बाजार का जादू चढ़ने का अर्थ है–
(a) आकर्षक वस्तुएँ (b) उपहार की वस्तुएँ
(c) उधार की वस्तुएँ (d) उपहार की वस्तुएँ

(12) बाजार दर्शन पाठ का केन्द्रीय भाव है–
(a) बाजारवाद (b) राजनीति
(c) धर्म (d) समाज

(13) 'काले मेघा पानी दे' पाठ के लेखक हैं–
(a) महादेवी वर्मा (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) धर्मवीर भारती (d) विष्णु खरे

(14) 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के लेखक हैं–
(a) धर्मवीर भारती (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) प्रेमचंद (d) वृंदावनलाल वर्मा

(15) 'काले मेघा पानी दे' पाठ है–
(a) रेखाचित्र (b) संस्मरण
(c) आलेख (d) एकांकी

(16) पखवारा शब्द का अर्थ है–
(a) सात दिन की अवधि (b) पंद्रह दिन की अवधि
(c) एक माह की अवधि (d) तीन माह की अवधि

(17) लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का चित्रण किस पाठ में है–
(a) बाजार दर्शन (b) काले मेघा पानी दे
(c) भक्तिन (d) पहलवान की ढोलक

(18) द्वार-द्वार पानी माँगने जाती है–
(a) वानर सेना (b) इंदर सेना
(c) जल सेना (d) थल सेना

(19) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के लेखक हैं–
(a) जैनेन्द्र कुमार (b) महादेवी वर्मा
(c) धर्मवीर भारती (d) फणीश्वरनाथ रेणु

(20) 'मैला आंचल' उपन्यास के लेखक हैं–
(a) फणीश्वरनाथ रेणु (b) प्रेमचंद
(c) वृंदावनलाल वर्मा (d) रांगेय राघव

(21) 'पहलवान की ढोलक' पाठ की विधा है–
(a) एकांकी (b) कहानी
(c) निबंध (d) रेखाचित्र

(22) 'चट्-गिड़-धा' का अर्थ है–
(a) मत डरना (b) वाह पट्ठे
(c) वाह ! बहादुर (d) दाँव काटो

(23) लुट्टन सिंह था–
(a) तीरंदाज (b) पहलवान
(c) मदारी (d) विदूषक

(24) 'शेर के बच्चे' का असल नाम था–
(a) बाबू सिंह (b) दीवान सिंह
(c) चांद सिंह (d) सूरज भान

(25) 'शिरीष के फूल' पाठ के लेखक हैं–
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) धर्मवीर भारती
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामचंद्र शुक्ल

(26) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के लेखक
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) प्रेमचंद
(c) यशपाल (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(27) ईक्षु का अर्थ है–
(a) मख्खी (b) लाठी
(c) आम का पेड़ (d) गन्ने का तना

(28) 'अशोक के फूल' के रचयिता हैं–
(a) रांगेय राघव (b) मुंशी प्रेमचन्द
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) रामचंद्र शुक्ल

(29) नीचे से ऊपर तक फूलों से लदा था–
(a) आम का पेड़ (b) अमरूद का पेड़
(c) शिरीष का पेड़ (d) जामुन का पेड़

(30) शिरीष के वृक्ष होते हैं–
(a) कांटेदार (b) छायादार
(c) मीठे फलदार (d) नुकीले

(31) शिरीष के फूल को संस्कृत-साहित्य में माना गय
(a) अत्यंत कोमल (b) अत्यंत कठोर
(c) अत्यंत रूखा (d) खुरदरा

(32) बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म हुआ
(a) 13 अप्रैल (b) 14 अप्रैल
(c) 15 अप्रैल (d) 16 अप्रैल

3) उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आंबेडकर जी गए–
) अमेरिका (b) जापान
) चीन (d) रूस

4) डॉ. भीमराव आंबेडकर का आदर्श समाज निम्न में से धारित है–
) स्वतंत्रता (b) समानता
) भाईचारा (d) स्वतंत्रता

5) समता व भ्रातृता का वास्तविक रूप क्या है–
) लोकतंत्र (b) राजतंत्र
) नीतितंत्र (d) लोकतंत्र और राजतंत्र

6) दूध-पानी के मिश्रण को डॉ. आंबेडकर ने माना है–
) भाई-चारा (b) दयालुता
) शिक्षा (d) कानून

7) जाति प्रथा को दूसरा रूप कहा गया है–
) श्रम विभाजन को (b) समय विभाजन को
) समाज विभाजन को (d) अर्थ विभाजन को

8) उत्पीड़न का अर्थ है–
) शोषण (b) मदद
) उलाहना (d) पेशा

9) समता व भ्रातृता वास्तविक रूप क्या है–
) लोकतंत्र (b) राजतंत्र
) नीतितंत्र (d) लोकतंत्र और राजतंत्र

0) खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना है–
) इंदुमती (b) अष्टयाम
परीक्षा गुरु (d) गौरा बादल की कथा

र– (1) (c) (2) (c) (3) (c) (4) (b) (5) (c) (6) (b) (7)
) (8) (d) (9) (a) (10) (b) (11) (a) (12) (a) (13) (c)
4) (a) (15) (b) (16) (b) (17) (b) (18) (b) (19) (d)
0) (a) (21) (b) (22) (d) (23) (b) (24) (c) (25) (c)
6) (a) (27) (d) (28) (c) (29) (c) (30) (b) (31) (a)
2) (b) (33) (a) (34) (b) (35) (c) (36) (a) (37) (a)
8) (a) (39) (c) (40) (a).

न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
) भक्तिन का कद ..... था। (छोटा/बड़ा)
) भक्तिन पाठ के रचयिता ..... हैं।
(महादेवी वर्मा/रजिया सज्जाद जहीर)
) जीवन के दूसरे परिच्छेद में ..... अधिक है। (सुख/दुख)
) रोटियाँ अच्छी सेकने के प्रयास में बहुत अधिक .....
गई है। (खरी/नरम)
) मेरे भ्रमण की एकांत साथिन ..... ही रही है।
(भक्तिन/महादेवी)
) मेरे पास वहाँ जाकर रहने के लिए ..... नहीं है।
(रुपया/मकान)

(7) भक्तिन और मेरे बीच में ..... का संबंध है।
7प्रसाद द्विवेदी)
(30) धरित्री का अर्थ ..... होता है। (पृथ्वी/आकाश)
(31) मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का ..... हूँ।
(पक्षपाती/आदी)
(32) हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म स्थान ..... है।
(छपरा/सहारनपुर)
(33) शिरीष के वृक्ष बड़े और ..... होते हैं।
(छायावाद/बदबूदार)
(34) जरा और मृत्यु ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक ..... हैं। (सत्य/नित्य)
(35) डॉ. आंबेडकर ने भाईचारे को ..... मिश्रण कहा है।
(दूध-चीनी/दूध-पानी)
(36) जाति प्रथा का दूसरा रूप ..... है।
(विभाजन/समाज विभाजन)
(37) जाति प्रथा .....से हानिकारक है।
(आर्थिक पहलू/राजनीतिक पहलू)
(38) मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और ..... पर आधारित होगा। (भ्रातृता/सहयोग)
(39) समता' यद्यपि काल्पनिक .....की वस्तु है।
(जगत/मिथ्या)
(40) डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा के ..... थे।
(समर्थक/विरोधी)

उत्तर– (1) छोटा (2) महादेवी वर्मा (3) दुख (4) खरी (5) भक्तिन (6) रुपया (7) सेवक, स्वामी (8) जैनेन्द्र कुमार (9) सीमित (10) जादू (11) चौक (12) भगत जी (13) पर्चेजिंग पावर (14) स्वार्थ (15) धर्मवीर भारती (16) जल चढ़ाना (17) संस्मरण (18) बैल (19) सतिया (20) पुकारते (21) खेल गीत (22) फणीश्वरनाथ रेणू (23) कहानी (24) वाह पट्ठे (25) शेर के बच्चे (26) गाय (27) बाज (28) आँसू (29) महावीर प्रसाद द्विवेदी (30) पृथ्वी (31) पक्षपाती (32) छप्परा (33) छायादार (34) सत्य (35) दूध-पानी (36) श्रम-विभाजन (37) आर्थिक पहलू (38) सहयोग (39) जगत (40) विरोधी

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए–

(1) 'अ'	'ब'
(1) कुंचित	(a) बँटवारा
(2) तुषारपात	(b) सिकुड़ी हुई
(3) अलगौझा	(c) ओले बरसाना
(4) जिठौत	(d) मायका
(5) अजिया ससुर	(e) जेठ का पुत्र
(6) नैहर	(f) पति का दादा

उत्तर– (1) (b) (2) (c) (3) (a) (4) (e) (5) (f) (6) (d).

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(2)

'अ'	'ब'
(1) असबाब	(a) सीमित
(2) दरकार	(b) अग्रिम राशि
(3) परिमित	(c) सामान
(4) पेशगी	(d) जरूरत
(5) दारुण	(e) महत्वहीन
(6) नाचीज	(f) भयंकर

उत्तर– (1) (c) (2) (d) (3) (a) (4) (b) (5) (f) (6) (e).

(3)

'अ'	'ब'
(1) दसतपा	(a) पंद्रह दिन की अवधि
(2) पखवारा	(b) तपते दस दिन
(3) टेरते	(c) पशु
(4) ढोर-ढंगर	(d) पुकारने
(5) अर्घ्य	(e) भुना हुआ अन्न
(6) भुजा	(f) जल चढ़ाना

उत्तर– (1) (b) (2) (a) (3) (d) (4) (c) (5) (f) (6) (e)

(4)

'अ'	'ब'
(1) भयार्त्त	(a) विलाप
(2) कृंदन	(b) भय से पीड़ित
(3) पट्ठा	(c) यश
(4) कीर्ति	(d) पहलवान
(5) गद्‌गद होना	(e) सम्मान बचाना
(6) लाज रखना	(f) खुश होना

उत्तर– (1) (b) (2) (a) (3) (d) (4) (c) (5) (f) (6) (e).

(5)

'अ'	'ब'
(1) भक्तिन	(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(2) बाजार दर्शन	(b) बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर
(3) काले मेघा पानी दे	(c) फणीश्वरनाथ रेणु
(4) पहलवान की ढोलक	(d) धर्मवीर भारती
(5) शिरीष के फूल	(e) जैनेन्द्र कुमार
(6) मेरी कल्पना का आदर्श समाज	(f) महादेवी वर्मा

उत्तर– (1) (f) (2) (e) (3) (d) (4) (c) (5) (a) (6) (b).

(6)

'अ'	'ब'
(1) पलाश	(a) पूँछ वाले
(2) दुमदार	(b) बिना पूँछ के
(3) लँडूरे	(c) ढाक
(4) हिल्लोल	(d) झूला
(5) दोला	(e) बुढ़ापा
(6) जरा	(f) लहर

उत्तर– (1) (c) (2) (a) (3) (b) (4) (f) (5) (d) (6) (e).

(7)

'अ'	'ब'
(1) विडम्बना	(a) बँटवारा
(2) पोषक	(b) दुर्भाग्य
(3) विभाजन	(c) बढ़ाने वाला
(4) विपरीत	(d) दोषपूर्ण
(5) दूषित	(e) भाईचारा
(6) भ्रातृता	(f) उल्टा

उत्तर– (1) (b) (2) (c) (3) (a) (4) (f) (5) (d) (6) (e).

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) गन्ने का पका हुआ गाढ़े रस को क्या कहा जाता है?
(2) भक्तिन के ओंठ कैसे थे?
(3) भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?
(4) लेखिका की भ्रमण की साथिन कौन रही है?
(5) बदरी-केदार के रास्ते कैसे हैं?
(6) भक्तिन और लेखिका के बीच कैसा संबंध है?
(7) जेठ का पुत्र क्या कहलाता है?
(8) 'बाजार दर्शन' किस विधा में लिखा गया है।
(9) 'खेल' कहानी के रचयिता कौन हैं?
(10) जैनेन्द्र कुमार का जन्म किस सन् में हुआ था?
(11) चूरन बेचने का काम कौन करता था?
(12) पर्चेजिंग पावर से क्या आशय है?
(13) 'बाजार दर्शन' पाठ के लेखक कौन हैं?
(14) अकिंचितकर का क्या अर्थ है?
(15) 'काले मेघा पानी दे' किस विधा में लिखा गया है?
(16) 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के लेखक कौन हैं?
(17) धर्मवीर भारती का जन्म वर्ष क्या है?
(18) बच्चों की सेना का क्या नाम था?
(19) गुड़धानी का क्या अर्थ है?
(20) लड़की की टोली को क्या नाम दिया गया?
(21) 'काले मेघा पानी दे' पाठ के लेखक कौन हैं?
(22) 'पहलवान की ढोलक' पाठ किस विधा में लिखा ग
(23) "मैला आंचल' उपन्यास के लेखक कौन हैं?
(24) फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म वर्ष क्या है?
(25) 'पहलवान की ढोलक' कहानी का मुख्य पात्र कौ
(26) 'शेर के बच्चे' का असल नाम क्या था?
(27) लुट्टन सिंह पहलवान की कीर्ति कहाँ तक फैली थ
(28) शिरीष का फूल कब लहकता है?
(29) जगत के सत्य क्या हैं?
(30) अवधूत किसे कहा गया है?
(31) रामायण किसकी रचना है?
(32) अनासक्त का क्या अर्थ है?
(33) शिरीष के फूल कैसे होते हैं?
34) शिरीष के वृक्ष कैसे होते हैं?
35) डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्म कब और कहां हुआ था?
36) 'बुद्धा एण्ड हिज धम्मा' के रचयिता कौन है?
37) डॉ. आंबेडकर ने उच्च शिक्षा किसके प्रोत्साहन से ाप्त की?
38) डॉ. आंबेडकर पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते थे।
39) डॉ. आंबेडकर के चिंतन के तीन प्रेरक व्यक्ति कौन थे?
40) डॉ. आंबेडकर किस मत के अनुयायी थे?
41) भारत के संविधान निर्माता किसे कहा जाता है?
42) कहानी और उपन्यास में कोई दो अंतर लिखिए।
43) रेखाचित्र और संस्मरण में कोई दो अंतर लिखिए।
44) जीवनी और आत्मकथा में कोई दो अंतर लिखिए।
45) नाटक और एकांकी में कोई दो अंतर लिखिए।
46) निबंध को गद्य की कसौटी क्यों कहा जाता है?
47) शुक्ल युग के गद्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
48) द्विवेदी युग के गद्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
49) गद्य की विधाओं को प्रमुख एवं गौण विधाओं में वर्गीकृत रके लिखिए।
50) निबंध किसे कहते हैं? किन्हीं दो निबंधकारों एवं उनके -दो निबंधों के नाम लिखिए।

त्तर– (1) गुड़ (2) भक्तिन के होंठ पतले थे। (3) भक्तिन का ास्तविक नाम लक्ष्मी था। (4) भक्तिन (5) बदरी केदार के तंग स्ते हैं। (6) भक्तिन और लेखिका के बीच सेवक स्वामी का बंध है। (7) जेठ का पुत्र जिठौत कहलाता है। (8) बाजार र्शन निबंध विधा में लिखा गया है। (9) खेल कहानी के चयिता जैनेन्द्र कुमार हैं। (10) जैनेन्द्र कुमार का जन्म सन् 905 में हुआ था। (11) चूरण बेचने का काम भगतजी करते । (12) क्रय शक्ति अर्थात् किसी इच्छित वस्तु को खरीदने की मता। (13) बाजार दर्शन पाठ के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं। 4) लेखक ने बाजार दर्शन पाठ में चूरन वाले को किंचितकर कहा है। (15) काले मेघा पानी दे संस्मरण विद्या लिखा गया है। (16) गुनाहों के देवता उपन्यास के लेखक र्मवीर भारती हैं। (17) धर्मवीर भारती का जन्म वर्ष 1926 है। 18) बच्चों की सेना का नाम इंदर सेना था। (19) गुड़ चने से ना लड्डू। लेकिन यहाँ गुड़धानी से आशय अनाज से है। (20) ड़कों की टोली को मेंढक मंडली नाम दिया गया। (21) काले मेघा पानी दे' पाठ के लेखक धर्मवीर भारती हैं। (22) हलवान की ढोलक कहानी विधा में लिखा गया है। (23) मैला ांचल कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु हैं। (24) णीश्वरनाथ रेणु का जन्म वर्ष 1921 है। (25) पहलवान की ोलक कहानी के मुख्य पात्र लुट्टन पहलवान हैं। (26) शेर के च्चे का असल नाम चाँद सिंह था। (27) लुट्टनसिंह पहलवान की कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी। (28) शिरीष के फूल वसंत में खिलते हैं और भादों तक फूलते रहते हैं। (29) जगत के सत्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु है। (30) शिरीष को अवधूत कहा गया है, क्योंकि वह भयंकर गर्मी में भी अपने लिये जीवन रस ढूँढ लेता है। (31) रामायण वाल्मीकि की रचना है। (32) अनासक्त का अर्थ है विषय भोगों से ऊपर उठा हुआ। (33) शिरीष के फूल कोमल होते हैं। (34) शिरीष के वृक्ष बड़े तथा छायादार होते हैं। (35) डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्म 1891 को महू (म.प्र.) में हुआ था। (36) बुद्धाएण्ड हिज धम्मा" के रचयिता डॉ. भीमराव अंबेडकर है। (37) डॉ. आंबेडकर ने उच्च शिक्षा बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन से प्राप्त की। (38) डॉ. आंबेडकर पढ़ लिखकर वकील बनना चाहते थे। (39) डॉ. आंबेडकर के चिंतन के 3 प्रेरक व्यक्ति बुद्ध, कबीर तथा ज्योतिबा फूले थे। (40) डॉ. आंबेडकर बौद्ध मत के अनुयायी थे। (41) भारत के संविधान निर्माता आंबेडकर को कहा गया है।

(42) कहानी और उपन्यास में निम्नांकित अंतर है–
(1) कहानी का कथानक संक्षिप्त, किन्तु उपन्यास का कथानक विस्तृत होता है।
(2) कहानी में पात्र संख्या कम, परन्तु उपन्यास में पात्र संख्या अधिक रहती है।
(3) कहानी एक बैठक में पढ़ सकते हैं, उपन्यास नहीं।
(4) कहानी में चरित्र चित्रण व प्रकृति चित्रण अति संक्षेप में, परन्तु उपन्यास में व्यापक रूप में होता है।

(43) रेखाचित्र	संस्मरण
(1) रेखाचित्र किसी व्यक्ति पर आधारित होता है।	संस्मरण किसी घटना पर आधारित होता है।
(2) रेखाचित्र में लेखक तटस्थ रूप अपनाता है।	संस्मरण में लेखक का घटना से निकट संबंध होता है।
(3) रेखाचित्र की शैली चित्रात्मक होती है।	संस्मरण की शैली वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक होती है।

(44) (1) जीवनी किसी महापुरुष के जीवन पर आधारित होती है। आत्मकथा में लेखक अपनी कथा लिखता है।
(2) जीवनी सत्य घटनाओं पर आधारित होती है। आत्मकथा काल्पनिक भी हो सकती है।

(45) नाटक एवं एकांकी में अंतर

(1) नाटक की कथावस्तु नायक के सम्पूर्ण जीवन पर आधारित, उसके सम्पूर्ण चरित्र का चित्रण करने वाली, विविध उपकथाओं को समेटे हुए विस्तृत होती है, जबकि एकांकी में जीवन के किसी एक पहलू, पक्ष या घटना का प्रभावपूर्ण चित्रण होता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(2) नाटक में अनेक अंक और उनमें अनेक दृश्य होते हैं, जबकि एकांकी में एक अंक और उसमें कुछ दृश्य होते हैं।
(3) नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है, किन्तु एकांकी में पात्र संख्या सीमित रहती है।
(4) नाटक का भाव उतना तीव्र नहीं होता है, जितना एकांकी का होता है।
(5) नाटक के उद्देश्य की अपेक्षा एकांकी का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट रहता है।

(46) यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। इस कथन का आशय यह है कि पद्य की अपेक्षा गद्य लिखना, अधिक कठिन कार्य है, क्योंकि दस पंक्तियों वाले काव्य में अगर एक भी पंक्ति अच्छी लिखी जाती है, तो कवियों को वाह-वाही मिल जाती है, किन्तु गद्य में ऐसी बात नहीं होती। जब गद्य का एक-एक वाक्य सुगठित तथा विचारपूर्ण होता है तब गद्य लेखक को वाहवाही मिलती है। गद्यों में निबंध लेखन और भी कठिन कार्य है। इसमें विचारों की तारतम्यता, रोचकता, स्वच्छन्दता, आत्मीयता आदि का समावेश करना होता है। तभी निबंधकार प्रशंसा पा सकता है। यह कार्य सरल नहीं है, इसलिए निबन्ध को गद्य की कसौटी कहते हैं।

(47) **शुक्ल युग के गद्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-** शुक्लोत्तर युग (1938 से 1947) का साहित्य मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित है। शुक्लोत्तरयुग का गद्य सहज, व्यावहारिक, सामाजिक, प्रभावपूर्ण, विचारशीलता और विषय-वैविध्य से ओत-प्रोत हैं।

(48) **द्विवेदी युग के गद्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**
(1) इस युग के गद्य के विषय साहित्य सम्बन्धी अधिक है।
(2) इस युग के गद्य की भाषा परिष्कार प्रधान है।
(3) इस युग के गद्य की शैली आलोचनात्मक है।
(4) इस युग के गद्य में विषय वस्तु की गंभीरता दृष्टिगत होती है।

(49) **गद्य की प्रमुख विधाएँ** - कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध।
गौण विधाएँ- जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, रिपोर्ताज।

(50) **निबन्ध की परिभाषा-** "निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यकता, संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"
- बाबू गुलाबराय

डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार- "निबंध वह गद्य रचना है, जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छन्दतापूर्वक, परन्तु एक विशेष सौष्ठव सहित सजीवता एवं वैयक्तिकता के साथ अपने भावों, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-
(1) भक्तिन देहातिन थी।
(2) भक्तिन का कद लम्बा था।
(3) महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री हैं।
(4) 'अतीत के चलचित्र' महादेवी वर्मा की रचना है।
(5) 'भक्तिन' महादेवी का संस्मरणात्मक रेखाचित्र है।
(6) भक्तिन का जीवन संघर्षशील रहा है।
(7) बाजार दर्शन पाठ की लेखक महादेवी वर्मा है।
(8) जैनेन्द्र कुमार उपन्यासकार हैं।
(9) खरीदने की शक्ति को ही लेखक ने पर्चेजिंग पावर...
(10) 'त्याग पत्र' मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।
(11) जैनेन्द्र कुमार का जन्म सन् 1905 में हुआ था।
(12) 'अपना-अपना कहानी के रचयिता प्रेमचंद हैं।
(13) धर्मवीर भारती प्रसिद्ध नाटककार हैं।
(14) 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के लेखक प्रेमचंद हैं।
(15) 'कनुप्रिया' धर्मवीर भारती का कविता संग्रह है।
(16) धर्मवीर भारती का जन्म सन् 1926 में हुआ था।
(17) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है।
(18) लड़कों की टोली को मेंढ़क मंडली नाम दिया गया...
(19) 'पहलवान की ढोलक' पाठ निबंध विधा में लिखा...
(20) 'मैला आंचल' उपन्यास के लेखक फणीश्वरनाथ...
(21) चाँद सिंह को हाथी का बच्चा कहा जाता था।
(22) क्रंदन का अर्थ विलाप करना है।
(23) लुट्टन बचपन में गाय चराता था।
(24) कीर्ति शब्द का पर्याप्त यश है।
(25) शिरीष को अवधूत कहा गया है।
(26) शिरीष के वृक्ष कटिदार होते हैं।
(27) बसंत के आगमन के साथ शिरीष का फूल लहक...
(28) गन्ने की सेना को ईक्षुदण्ड कहते हैं।
(29) 'अशोक के फूल' महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचना...
(30) शिरीष का फूल अत्यंत कठोर होता है।
(31) डॉ. आंबेडकर को संविधान निर्माता कहा जाता...
(32) डॉ. आंबेडकर बौद्ध मतानुयायी बने।
(33) डॉ. आंबेडकर पढ़-लिखकर वैज्ञानिक बनना चा...
(34) डॉ. आंबेडकर ने बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन से... शिक्षा प्राप्त की।
(35) डॉ. आंबेडकर का जन्म 15 अप्रैल को महू में हु...
(36) डॉ. आंबेडकर ने उच्च शिक्षा अमेरिका और... प्राप्त की।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) सत्य ... (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) सत्य ... (12) असत्य (13) असत्य (14) असत्य (15) सत्य ... (17) सत्य (18) सत्य (19) असत्य (20) सत्य (21) असत्य (22) सत्य (23) सत्य (24) सत्य (25) सत्य (26) असत्य (27) सत्य (28) सत्य (29) सत्य (30) असत्य (31) सत्य (32) सत्य (33) असत्य (34) सत्य (35) असत्य (36) सत्य।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 1. भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था? वह अपने इस नाम को क्यों छुपाती रही?
उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था जिसका अर्थ है धन की देवी, लेकिन लक्ष्मी के पास धन बिल्कुल नहीं था। वह बहुत गरीब थी। इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छुपाती थी। उसे यह नाम उसके घरवालों ने दिया होगा। भारतीय समाज में लड़की का पैदा होना वास्तव में लक्ष्मी का घर माना जाता है। इसलिए उसके जन्म लेने पर उसका यह नाम रख दिया।

प्रश्न 2. नौकरी की खोज में आई भक्तिन ने अपने वास्तविक नाम लछमिन का उपयोग न करने की बात लेखिका से क्यों कही?
उत्तर- 'देहातिन' महादेवी वर्मा की नौकरानी भक्तिन थी। उसका असली नाम 'लक्ष्मी' था, परंतु वह गरीब थी। लक्ष्मी का नाम उसके जीवन का मजाक उड़ाता था। इसलिए उसने अपना नाम लक्ष्मी का उपयोग न करने की प्रार्थना की।

प्रश्न 3. लगान न चुकाने पर जमींदार ने भक्तिन को क्या सजा दी?
उत्तर- लगान न चुका पाने के कारण भक्तिन को जमींदार ने दिन-भर कड़ी धूप में खड़ा रखा।

प्रश्न 4. लेखिका के अनुसार भक्तिन के जीवन का परम कर्तव्य क्या था?
उत्तर- लेखिका के अनुसार भक्तिन के जीवन का परम कर्त्तव्य अपने सेवक का कार्य करना है। वह लेखिका का पूर्ण ध्यान रखती है।

प्रश्न 5. लेखिका की मनोदशा समझने में क्या भक्तिन प्रवीण थी?
उत्तर- लेखिका की मनोदशा समझने में लेखिका प्रवीण थी। वह प्रत्येक परिस्थिति में लेखिका के साथ रहना चाहती है। जब लेखिका को जेल जाने पर वह उसके साथ नहीं जाती, क्योंकि वह अपने कारण लेखिका को लज्जित नहीं करवाना चाहती है।

प्रश्न 6. "भक्तिन और मेरे बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है।" लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?
उत्तर- भक्तिन और लेखिका के संबंधों को सेवक-स्वामी का संबंध कहना कठिन इसलिए है, क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर सेवक को अपनी सेवा से न हटा सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे।

प्रश्न 7. भक्तिन के आ जाने से महादेवी देहाती कैसे हो गई?
उत्तर- भक्तिन देहाती (गाँव की) महिला थी। शहर में आकर उसने स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं किया। ऊपर से वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती है, पर अपने मामले में उसे किसी प्रकार हस्तक्षेप पसंद नहीं था। उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया। उसने गाढ़ी दाल व मोटी रोटी खिलाकर लेखिका की स्वास्थ्य संबंधी चिंता दूर कर दी। अब लेखिका को रात को मकई का दलिया, सवेरे मट्ठा, तिल लगाकर बाजरे के बनाए हुए ठंडे पुए, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी व सफेद महुए की लपसी मिलने लगी। इन सबको वह स्वाद से खाने लगी। इसके अतिरिक्त उसने महादेवी को गाँव की भाषा भी सिखा दी। इस प्रकार महादेवी भी गाँव वाली बन गई।

प्रश्न 8. "भक्तिन की कहानी अधूरी है।" लेखिका महादेवी ने ऐसा क्यों कहा?
उत्तर- जब भक्तिन लेखिका के घर काम करने आई तो वह सीधी-सादी, भोली-भाली लगती थी, लेकिन ज्यों-ज्यों लेखिका के साथ उसका संबंध और संपर्क बढ़ता गया त्यों-त्यों वह उसके बारे में जानती गई। लेखिका को उसकी बुराइयों के बारे में पता चलता गया। इसी कारण लेखिका को लगा कि भक्तिन की कहानी अधूरी है।

प्रश्न 9. माया कौन जोड़ता है? बाजार दर्शन पाठ के आधार पर बताइये।
उत्तर- स्त्री माया जोड़ने में विश्वास करती है। यहाँ 'माया' शब्द में धन-संपत्ति एवं वस्तुओं के अग्रह की ओर संकेत है। वैसे माया जोड़ना सभी प्राणियों का प्रकृति प्रदत्त गुण है पर स्त्रियाँ परिस्थितिवश भी माया जोड़ती हैं।

प्रश्न 10. "पर्चेजिंग पावर' से लेखक का क्या आशय है?
उत्तर- 'पर्चेजिंग पावर' से अभिप्राय 'आर्थिक सबलता' है। इसके आधार पर रहन-सहन, खान-पान, लेन-देन आदि में उच्च जीवन-स्तर जीने का प्रयास किया जाता है। इसे मकान-कोठी, बैंक खाते, जमीन जायदाद आदि के माध्यम से देखा जा सकता है। कभी-कभी लोग इसका सदुपयोग करने की अपेक्षा दुरुपयोग भी करने लगते हैं। वे आपसी होड़ और बाजार की चकाचौंध में इस प्रकार फँस जाते हैं कि अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सामान खरीदने की अपेक्षा अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने लगते हैं।

प्रश्न 11. बाजार का जादू क्या है? वह कैसे काम करता है?

उत्तर- बाजार की तड़क-भड़क और वस्तुओं के रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाजार का जादू कहते हैं। बाजार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर जरूरी चीजें खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीजें आराम में मदद नहीं करती, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सके मिल जाती है।

प्रश्न 12. लेखक के पड़ोस में रहने वाले भगत जी क्या काम करते हैं?

उत्तर- लेखक के पड़ोस में रहने वाले भगत जी चूरन बेचने का काम करते हैं।

प्रश्न 13. बाजार एक जादू है? लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- देखिए प्रश्न क्रमांक 11

प्रश्न 14. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- जब बाजार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिजूल की खरीददारी करता है वह उस सामान को खरीद लेता है जिसकी उसे जरूरत नहीं होती। वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब वह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाजार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है ताकि उसका पालन-पोषण हो सके

प्रश्न 15. लेखक जैनेन्द्र कुमार के अनुसार 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- बाजारूपन से तात्पर्य है कि बाजार की चकाचौंध में खो जाना। केवल बाजार पर ही निर्भर रहना। वे व्यक्ति ऐसे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं जो हर वह सामान खरीद लेते हैं जिनकी उन्हें जरूरत भी नहीं होती। वे फिजूल में सामान खरीदते रहते हैं अर्थात् वे अपना धन और समय नष्ट करते हैं। लेखक कहता है कि बाजार की सार्थकता तो केवल जरूरत का सामान खरीदने में ही है तभी हमें लाभ होगा।

प्रश्न 16. 'बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता' 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइये।

उत्तर- यह बात बिल्कुल सही है कि बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता वह सिर्फ ग्राहक की क्रय-शक्ति को देखता है। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं कि खरीददार औरत है या मर्द, वह हिंदू है या मुसलमान, उसकी जाति क्या है या वह किस क्षेत्र-विशेष से है। बाजार में उसी को महत्व मिल है जो अधिक खरीद सकता है। यहाँ हर व्यक्ति ग्राहक होता इस लिहाज से यह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी र कर रहा है। आज जीवन के हर क्षेत्र-नौकरी, राजनीति, ध आवास आदि में भेदभाव है, ऐसे में बाजार हरेक को स मानता है। यहाँ किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जा क्योंकि बाजार का उद्देश्य सामान बेचना है।

प्रश्न 17. 'स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत्त नहीं बल्कि परिस्थितिवश है' पठित पाठ के आधार पर सि कीजिए।

उत्तर- कबीर जैसे कालजयी कवियों ने 'माया' को भी ख माना है। यहाँ जैनेन्द्र ने माया शब्द का अर्थ पैसा रुपया बता है। लेखक कहता है कि परिस्थितियों के कारण ही स्त्रियाँ पै जोड़ती हैं वरना पैसा जोड़ना तो वे सीखी नही नहीं है। स्त्रि कई परिस्थितियों में पैसा जोड़ने पर मजबूर हो जाती हैं; यथा-

(1) बेटी की शादी के लिए।
(2) बेटी की पढ़ाई के लिए।
(3) गहने आदि बनवाने के लिए।
(4) बैंक या डाक खाने की मासिक किश्त जमा करने हेतु।
(5) घर की जरूरत को पूरा करने के लिए।
(6) भविष्य में होने वाले वैवाहिक उत्सवों के लिए।

प्रश्न 18. नकली सामान के खिलाफ जागरूकता फैला के लिए आप क्या कर सकते हैं?

उत्तर- नकली सामान की जागरूकता के लिए हम आवाज उ सकते हैं। इसके लिए हम उसकी उपभोक्ता फोरम में शिकाय सरकार से कर सकते हैं। अत: हम इस विषय पर स्वयं जागरू रहें और अन्य को भी जागरूक करें।

प्रश्न 19. 'काले मेघा पानी दे' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में वर्षा न होना, सूख पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक-प्रचलित विश्वा और सहज प्रेम की जीत हुई है, क्योंकि लोग इस समस्या क हल अपने-अपने ढंग से ढूँढने में जुट जाते हैं, जिनका को वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास इतना पु है कि विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते।

प्रश्न 20. 'गगरी फूटी बैल पियासा' का आशय क्या है?

उत्तर- 'गगरी फूटी बैल पियासा' एक ओर जहाँ सूखे की अ बढ़ते समाज का सजीव एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है व यह देश की वर्तमान हालत का भी चित्रण करता है। यहाँ गाँ तथा आम लोगों के कल्याणार्थ भेजी अरबों-खरबों की राशि

आने कहाँ गुम हो जाती है। भ्रष्टाचार का दानव इस समूची राशि को निगल जाता है और आम आदमी की स्थिति वैसी ही रह जाती है अर्थात् उसकी आवश्यकता रूपी प्यास अनबुझी रह जाती है।

प्रश्न 21. 'पानी दे गुड़धानी दे' से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर- 'गूड़धानी' शब्द का वैसे तो अर्थ होता है गुड़ और चने से बना लड्डू, लेकिन यहाँ गुड़धानी से आशय 'अनाज' से है। बच्चे पानी की माँग तो करते ही हैं, लेकिन वे इंदर से यह भी प्रार्थना करते हैं कि हमें खूब अनाज भी देना, ताकि हम चैन से खा पी सकें। केवल पानी देने से हमारा कल्याण नहीं होगा। खाने के लिए अन्न भी चाहिए। इसलिए हमें गुड़धानी भी दो।

प्रश्न 22. 'पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।' यह कथन किसका है?

उत्तर- यह कथन लेखक की बहन जीजी का है।

प्रश्न 23. बारिश के न होने पर गाँव की हालत कैसी थी?

उत्तर- गली-मोहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुन-भुन कर त्राहिमाम्-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सूखकर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देने वाली लू चलती थी।ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा-पाठ में लगे थे। अंत में इंद्र से वर्षा के लिए प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

प्रश्न 24. तीज-त्यौहारों पर कौन-कौन से पकवान बनते हैं?

उत्तर- तीज त्यौहारों पर मिठाई, खीर, चूरमा, लड्डू आदि पकवान बनाए जाते हैं।

प्रश्न 25. त्याग से क्या आशय है? पठित पाठ 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर बताइये।

उत्तर- लेखक के अनुसार आज हमारा जीवन विज्ञान के आविष्कारों से भौतिक सुख-सुविधाओं से भरा हुआ है किन्तु फिर भी वह मानना है कि हम पूर्ण संतुष्टि पर जीवन नहीं जी पा रहे हैं। कभी-कभी व्यथित हो जाता है। वह सोचता है कि हम अपने देश की सेवा के लिए कुछ भी कर पाने में सहयोग नहीं कर पाते हैं। देश के लगभग प्रत्येक हिस्सों से माँगे उठने लग जाती हैं, किन्तु हम देश के लिए त्याग करने को तत्पर नहीं हो पाते। हम अपने उद्देश्यों से भटक रहे हैं। केवल हम अपना स्वार्थ देखते हैं। देश की भावना लोगों में नहीं है। हम दूसरों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के बारे में चर्चाएँ करते रहते हैं, किन्तु स्वयं के अंदर झाँक कर नहीं देखते हैं कि हम कितने भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं।

प्रश्न 26. 'यथा राजा तथा प्रजा' से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- राजा और प्रजा का बहुत ही अच्छा रिश्ता होता है? क्योंकि राजा के अनुसार ही प्रजा कार्य करती है।

प्रश्न 27. लड़कों की टोली को 'मेंढक-मंडली' नाम क्यों दिया गया?

उत्तर- लोग जब इन लड़कों की टोली को कीचड़ में धंसा देखते, उनके नंगे शरीर को, उनके शोर शराबे को तथा उनके कारण गली में होने वाली कीचड़ या गंदगी को देखते हैं तो वे इन्हें मेंढक-मंडली कहते हैं। लेकिन बच्चों की यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहती थी, क्योंकि ये इंदर देवता को बुलाने के लिए लोगों के घर से पानी माँगते थे और नहाते थे। प्रत्येक बच्चा अपने आपको इंद्र कहता था इसलिए यह इंदर सेना थी।

प्रश्न 28. इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को सही क्यों ठहराया गया?

उत्तर- जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने के समर्थन में कई तर्क दिए जो निम्नलिखित हैं-

(1) किसी से कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा देना पड़ता है। इंद्र को पानी का जल चढ़ाने से ही वे वर्षा के जरिये पानी देंगे।

(2) त्याग भावना से दिया गया दान ही फलीभूत होता है। जिस वस्तु की अधिक जरूरत है, उसके दान से ही फल मिलता है। पानी की भी यही स्थिति है।

(3) जिस तरह किसान अपनी तरफ से पाँच-छह सेर अच्छे गेहूँ खेतों में बोता है, ताकि उसे तीस-चालीस मन गेहूँ मिल सके, उसी तरह पानी की बुवाई से बादलों की अच्छी फसल होती है और खूब वर्षा होती है।

प्रश्न 29. लुट्टन का बचपन कैसा था?

उत्तर- लुट्टन सिंह पहलवान के माता-पिता का उसके बचपन में ही देहांत हो गया। छोटी उम्र में ही शादी कर देने के कारण उसकी विधवा सास ने ही पाल-पोस कर बड़ा किया। वह बचपन में गाय चराता, ताजा दूध पीता और नियमित व्यायाम करता था।

प्रश्न 30. 'शेर के बच्चे' का असली नाम क्या था? उसके गुरु का क्या नाम था?

उत्तर- शेर के बच्चे का असली नाम चाँदसिंह था। उसके गुरु का नाम बादल सिंह था।

प्रश्न 31. लुट्टन ने श्यामनगर मेले में किसे और क्यों चुनौती दी?

उत्तर- लुट्टनसिंह बचपन से ही पहलवानी प्रकृति का था।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

श्यामनगर के मेले में जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती आवाज ने उसकी नसों में जोश भर दिया। फलस्वरूप उसने पंजाब के पहलवान 'शेर के बच्चे' के नाम से विख्यात चाँद सिंह पहलवान को चुनौती दे डाली।

प्रश्न 32. 'धाक धिना, तिरकट तिना, धाक धिना, तिरकट तिना' से क्या आशय है?

उत्तर- धाक धिना, तिरकट तिना, धाक धिना, तिरकट तिना से का अर्थ है- दाँव काटो, बाहर हो जाओ।

प्रश्न 33. 'जीते रहो बहादुर। तुमने मिट्टी की लाज रख ली।' यह कथन किसने, किस संदर्भ में कहा?

उत्तर- जीते रहो बहादुर, तुमने मिट्टी की लाज रख ली। यह कथन राजा साहब ने लुट्टन पहलवान से कहा, जब उसने प्रसिद्ध पहलवान चाँदसिंह को कुश्ती में हरा दिया था।

प्रश्न 34. काला खाँ के संबंध में क्या बात मशहूर थी?

उत्तर- काला खाँ प्रसिद्ध पहलवान था। लुट्टनसिंह ने काला खाँ जैसे नामी पहलवान को भी हरा दिया। उसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि ज्योंही वह लंगोट लगाकर 'आ-ली' कहकर प्रतिद्वन्द्वी पर टूटता है तो प्रतिद्वन्द्वी पहलवान को लकवा मार जाता है।

प्रश्न 35. लुट्टन पहलवान की मेलों में क्या वेशभूषा रहती थी?

उत्तर- लुट्टनसिंह पहलवान मेलों में घुटने तक लंबा चोंगा पहने तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता।

प्रश्न 36. पहलवान के कितने बेटे थे? लोगों की उनके प्रति क्या राय थी?

उत्तर- पहलवान के दो बेटे थे। लोग कहते थे 'वाह! बाप से भी बढ़कर निकलेंगे दोनों बेटे।

प्रश्न 37. लुट्टन पहलवान का गुरु कौन था? ढोलक से उसका क्या नाता था?

उत्तर- लुट्टन पहलवान का गुरु कोई पहलवान नहीं था। वह कहता था कि ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करता था।

प्रश्न 38. शिरीष के फूलों की क्या विशेषता है?

उत्तर- शिरीष के वृक्ष छायादार वृक्ष होते हैं। शिरीष की डालियाँ कमजोर होती हैं। इसके फूल बहुत कोमल होते हैं।

प्रश्न 39. शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा गया है?

उत्तर- शिरीष का पेड़ अवधूत (संन्यासी) की भाँति बसंत के आगमन से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी बाधा के पुष्पित होता रहता है। जब ग्रीष्म ऋतु में सारी पृथ्वी धुआँरहित अग्निकुंड की भाँति बन जाती है, सभी के प्राण उबलने लगते हैं, लू के कारण हृदय सूखने लगता है, तो ऐसा लगता है जैसे शिरीष का पेड़ कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार कर रहा हो। वह संसार के समस्त प्राणियों धैर्यशील, चिंतारहित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बने रहने के लिए प्रे करता है। इसी कारण लेखक ने उसे संन्यासी की तरह माना

प्रश्न 40. लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष अलावा और कौन-कौन से वृक्षों को मंगल-जनक व माना है?

उत्तर- अशोक वृक्ष, अरिष्ठ वृक्ष, आरग्वय वृक्ष, शिरीष वृक्ष मंगल जनक वृक्ष माना है।

प्रश्न 41. शिरीष वृक्ष के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजि

उत्तर- शिरीष के वृक्ष बड़े व छायादार होते हैं, पुराने मंगल-जनक वृक्षों में शिरीष को भी लगाया करते थे। शि की डालें कमजोर होती हैं। इसके फूलों को कोमल माना है।

प्रश्न 42. शिरीष के फूल को लेखक ने 'शीत पुष्प' संज्ञा किस आधार पर दी है?

उत्तर- शिरीष का पुष्प सहनशील है। वह मौसम में आए प्र परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करता है और अपना संतुलन क रखता है। वह वसंत के आगमन के साथ खिल जाता है ग्रीष्म की तपती धूप में भी मस्त बना रहता है। ऐसा लगता है उसके लिए धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि ऋतु-परिवर्तन का महत्व नही है इसलिए उसे शीत पुष्प कहा जाता है।

प्रश्न 43. शिरीष के फूल को बहुत कोमल क्यों माना ग है?

उत्तर- शिरीष के फूल कोमल होते हैं। ये केवल भौरों के पैरों कोमल भार ही सहन कर सकते हैं। इस पर पक्षियों का असहनीय हो जाता है। इस प्रकार की अवस्था पाकर ये टूटकर जमीन पर आ गिरते हैं।

प्रश्न 44. शिरीष के अलावा लेखक ने कौन-कौन से वृ का उल्लेख किया है?

उत्तर- शिरीष के अलावा लेखक ने अमलतास, अशो अरिष्ठ आदि वृक्षों का उल्लेख किया है।

प्रश्न 45. कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्र गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर- शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्र द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की याद आती शिरीष तरु अवधूत है, क्योंकि वह बाहरी परिवर्तन-धूप, व आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित हो रहता है। इसी प्रकार महात्मा गांधी भी मार-काट, अग्निदा लूट-पाट, खून-खराबे के बवंडर के बीच स्थित रह सके। इस समानता के कारण लेखक को गांधीजी की याद आ ज है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्मबल शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज है। आत्मा की शक्ति

जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सकता है,वैसे ही महात्मा गांधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।

प्रश्न 46. 'शिरीष के फूल पाठ' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि हजारी प्रसाद द्विवेदी को वनस्पतियों के प्रति रुचि है?

उत्तर- द्विवेदी जी के युग में समाज में अनेक बुराइयाँ व्याप्त थीं, जिनमें जात-पाँत, बाल-विवाह, सतीप्रथा, स्त्रियों के प्रति अत्याचार आदि प्रमुख हैं। लेखक स्वयं गाँधीवादी विचारधारा के हैं। इनमें वनस्पतियों के माध्यम से मनुष्य को प्रेरित करने की क्षमता है। वे धूप, गर्मी, सर्दी, लू, वर्षा आदि में अविचल बने रहकर मनुष्य को सभी प्रकार की परिस्थितियों में स्थिर बने रहने की प्रेरणा देते हैं। इसी कारण से द्विवेदी जी की वनस्पतियों में ऐसी रुचि हो सकती है।

प्रश्न 47. अशोक वृक्ष की कोई दो विशेषताएँ लिखिये।

उत्तर- भारतीय साहित्य में बहुचर्चित एक सदाबहार वृक्ष। इसके पत्ते आम के पत्तों से मिलते हैं। वसंत-ऋतु में इसके फूल लाल-लाल गुच्छों के रूप में आते हैं। इसे कामदेव के पाँच पुष्पबाणों में से एक माना गया है। इसके फल सेम की तरह होते हैं। इसके सांस्कृतिक महत्व का अच्छा चित्रण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निबंध 'अशोक के फूल' में किया है। भ्रमवश आज एक-दूसरे वृक्ष को अशोक कहा जाता रहा है और मूल पेड़ जिसका वानस्पतिक नाम सराका इंडिका है। तो लोग भूल गए हैं। इसकी एक जाति श्वेत फूलों वाली भी होती है।

प्रश्न 48. 'जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी का कारण है' क्या इस कथन से आप सहमत हैं। अपना तर्क दीजिए।

उत्तर- जातिप्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक ही पेशे में बाँध देती है। भले ही वह पेशा उपयुक्त न होने या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखा मर जाए। आधुनिक युग में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया तथा तकनीक में निरंतर विकास और अकस्मात् परिवर्तन के कारण मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है। किंतु भारतीय हिंदू धर्म की जातिप्रथा किसी भी ऐसे व्यक्ति को पारंगत होने पर भी ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती, जो उसका पैतृक पेशा न हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती है।

प्रश्न 49. 'दासता' की परिभाषा क्या है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- लेखक के मतानुसार 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता, बल्कि इससे वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इस प्रकार की दासता की स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ जाति-प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्रश्न 50. 'डॉ. आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व को मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है।' इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- डॉ.आंबेडकर द्वारा दिए गए इस तर्क में पूर्णतया सहमत हुआ जा सकता है क्योंकि एक आदर्श समाज की रूपरेखा समाज के दलित और शोषित वर्ग के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक उत्थान द्वारा ही तैयार की जा सकती है। ऐसे समाज में सभी वर्गों के हितों का ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्हें समान रूप से साधन व अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

प्रश्न 51. डॉ. आंबेडकर की दृष्टि में आदर्श समाज की कल्पना क्या है?

उत्तर- आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 52. 'भाईचारे का दूसरा नाम लोकतंत्र है। डॉ. आंबेडकर जी ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- लेखक के अनुसार लोकतंत्र दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का ही वास्तविक रूप है। यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

अपने साथियों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव ही लोकतंत्र के लिए आवश्यक तत्व है।

प्रश्न 53. मनुष्य की क्षमता किन तीन बातों पर निर्भर करती है?

उत्तर- मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है-

(1) जाति प्रथा का श्रम विभाजन अस्वाभाविक है।

(2) शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।

(3) सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात् सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।

(4) मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 54. न्याय का तकाजा क्या है?

उत्तर- हम न्याय की संकल्पना को समाज से बाहर उससे अलग तथा उससे दूर सोच भी नहीं सकते। न्याय के अर्थ को सत्य, नैतिकता तथा शोषण विहीनता की स्थिति में ही पाया जा सकता है। इसके अर्थ का एक पहलू लोगों के बीच व्यवस्था की

@MP_BOARD_25 (Telegram)

स्थापना पर जोर देता है तो दूसरा पहले अधिकारों व कर्तव्यों को बनाने का गठन करता है।

प्रश्न 55. डॉ. आंबेडकर की दृष्टि में 'समता' से क्या आशय है?

उत्तर– डॉ. आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

गद्यांश की संदर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या

1. भक्तिन और मेरे बीच में सेवक–स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है, क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा ना सके और ऐसा सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस भक्तितन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी–बारी से आने–जाने वाले अंधेरे–उजाले और आंगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख–दुःख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।

उत्तर– संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग–2' के गद्य खंड के अंतर्गत संकलित 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से प्रख्यात 'महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'भक्तिन' रेखाचित्र से उद्धृत है।

प्रसंग– भक्तिन और महादेवी के बीच आत्मीय संबंध स्थापित हो गए थे। दोनों एक–दूसरे के विरोधात्मक विचारों को हल्क में लेकर टाल देती थी। ऐसा लगता था जैसे वे नौकर और मालिक के रूप में नहीं रहती थी।

व्याख्या– लेखिका के अनुसार भक्तिन और उसमें कोई भी नौकर और स्वामी का संबंध नहीं बता सकता था। वे दोनों आपस में इतनी घुल–मिल गई थीं कि भक्तिन द्वारा अनेक बार गलतियाँ करने के बाद भी लेखिका उसे सेवा से नहीं हटा सकी। दूसरी तरफ भक्तिन भी लेखिका के प्रत्येक आदेश को हल्कें से लेकर आत्मीयता प्रकट करने के लिए हँस देती थी।

लेखिका के अनुसार उसे एक नौकर कहना उसी प्रकार अनुचित था जैसे अंधेरा–उजाला तथा गुलाब और आम को सेवक मानना अनुचित था। अर्थात् भक्तिन स्वतंत्र और उस परिवार में अपना अस्तित्व रखने वाली सदस्या बन चुकी थी और वह अपना और लेखिका के व्यक्तित्व का विकास ही करना चा थी। लेखिका भी उसी में उन दोनों के जीवन की सार्थ मानती है।

2. सेवक–धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने ली भक्ति किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामध गोपालिका की कन्या है– नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अप अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है: भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लि उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न क उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उस प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नामकरण किया तब वह भक्तिन जैसे कवित्वहीन नाम पाकर भी गद्‌गद हो उठी।

उत्तर– संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आ भाग–2' के गद्य खंड के अंतर्गत संकलित 'आधुनिक युग मीरा' के नाम से प्रख्यात 'महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'भक्ति रेखाचित्र से उद्धृत है।

प्रसंग– महादेवी वर्मा उसके नाम के विषय में पूछने पर बहुत सहज और स्वाभाविक ढंग से अपना परिचय बताती है। स ही वह उसके नाम से संबोधित न करने पर आग्रह करती है

व्याख्या– भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन है। वह अ नाम का अर्थ 'लक्ष्मी' को अच्छी तरह समझती है। उस अनुसार उसके नाम का अर्थ संपन्नता से संबंधित था, परंतु इसके योग्य नहीं थी। वह अपने नाम को जीवन के विप मानती थी, किंतु उसे यह भी ज्ञान था कि संसार में लोगों के उनके जीवन के साथ चरितार्थ नहीं होते। इसी कारण वह अप वास्तविक नाम नहीं बताना चाहती थी।

लेखिका बुद्धिमान थी, किन्तु उसने लेखिका को नौकरी समय अपना वास्तविक नाम बताकर ईमानदारी के साथ अ जीवन के बारे में बता दिया था, किन्तु उसने लेखिका को उस वास्तविक नाम के उपयोग न करने का निवेदन किया।

3. बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह का करता है। वह रूप का जादू है जैसे चुंबक का जादू लोहे ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब ख हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख

होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है।

संदर्भ व प्रसंग– देखिए गद्यांश चार का उत्तर

व्याख्या– बाजार के जादू की तुलना चुम्बक और लोहे से की गई है। लोहा चुम्बक की चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित होकर उस पर चिपक जाता है, उसी प्रकार लोग बाजार के जादू से उसकी ओर स्वतः ही खींचे चले जाते हैं। बाजार का जादू जब जेब भरी हो और मन खाली हो तब तो चलता है, किन्तु जब जेब खाली हो और मन भरा न हो तब भी बाजार का जादू चल जाता है। बाजार के जादू का असर उतरने पर पता चलता है कि कैसी चीजें बहुतायत आराम नहीं देतीं आराम में खलल डालती है। जादू की जकड़ से बचने का एक मात्र उपाय है कि जब मन खाली हो तो बाजार न जाएं। आवश्यकता की चीजें खरीदने के समय काम आने से बाजार की कृतार्थता होगी। लू का लूपन तब व्यर्थ हो सकता है जब हम गर्मी में लू के समय घर से बाहर निकलें तो पानी पीकर निकलें इससे लू का असर सीधे आंतरिक अंगों पर नहीं पड़ेगा और पानी की ठंडकता लू के प्रभाव को निष्क्रिय कर देगा।

4. यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार की सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते किवे क्या चाहते हैं, अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–शैतानी, शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्‌भाव की घंटी।

उत्तर– संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग–2' में संकलित और जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'बाजार दर्शन' से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक के अनुसार बाजार और ग्राहक की सार्थकता केवल प्रयोजनीय वस्तुओं के खरीदने पर ही हो सकती है अनावश्यक वस्तुएँ खरीदकर हम अपना और बाजार का नुकसान ही करते हैं।

व्याख्या– लेखक के अनुसार बाजार की जादुई ताकत हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इससे हम उसके गुलाम बन जाते हैं, किंतु बाजार की सार्थकता तभी है जब हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक–ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें। इसके विपरीत जो मनुष्य अपने पैसे के बल पर ही अनावश्यक रूप से सामान खरीदते हैं, वे केवल बाजार के विनाशक शक्ति, अनावश्यक रूप से सामान खरीदते हैं, वे केवल बाजार के विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति या व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। इससे बाजार में अस्थिरता आती है और मनुष्य को लाभ प्रदान कर सकते हैं। इससे बाजारवाद को ही बढ़ावा मिलता है। यह बाजारवाद लोगों में कपट की भावना बढ़ाता है, जिसके फलस्वरूप लोगों में आपस में प्रेम, सौहार्द्र, सहानुभूति आदि सद्‌भावनाएँ कम होती जाती है।

5. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात–ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयानं शिशु की तरह थर–थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस–फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य अंधेरा और निस्तब्धता अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही है। निस्तब्धता करुण सिसकियाँ और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग–2' में संकलित 'पहलवान की ढोलक' नामक प्रतिनिधि कहानी से उद्धृत है। इसके रचयिता फणीश्वर नाथ रेणु जी हैं।

प्रसंग– कहानीकार ने ग्रामीण परिवेश 'प्राकृतिक विभीषिका का चित्रण किया है।

व्याख्या– सर्दी के दिनों में गाँव में मलेरिया और हैजे का प्रकोप फैल चुका था। अमावस्या की अंधेरी रात के सुनसान वातावरण में कभी–कभी सिसकियों और आहों की आवाजें आ रही थीं। क्योंकि हैजा और मलेरिया के कारण लोगों की मौत हो रही थी। इस दुःख को लोग अपने दिल में ही दबाने की कोशिश कर रहे थे। ऐसे में रह–रहकर लोग अपने व्यथा को प्रकट कर रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। किसी भी तरफ प्रकाश की कोई किरण भी दिखाई नहीं दे रही थी। ऐसे वातावरण में आकाश में टूटकर कोई तारा पृथ्वी की तरफ आता हुआ दिखाई दे रहा था, किंतु वह अपनी मंजिल तक पहुंचने से पहले ही बुझ जाता था। ऐसा लगता था जैसे उसकी शक्ति रास्ते में ही समाप्त हो जाती है। इस दृश्य को देखकर ऐसा लगता था जैसे अन्य तारे उस टूटते हुए तारे की भावना को देखते हैं, किन्तु लक्ष्य प्राप्ति से पहले ही उसे असफल होते देखकर खिलखिलाने लग जाते हैं।

6. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अद्‌धमृत, औषधि उपचार, पथ्य–विहीन प्राणियों

© MP_BOARD_25 (Telegram)

में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्तिशून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी। मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'पहलवान की ढोलक नामक प्रतिनिधि कहानी से उद्धृत है। इसके रचयिता फणीश्वर नाथ रेणु जी हैं।

प्रसंग- गाँव में पहले अनावृष्टि, फिर अन्न की कमी, उसके बाद मलेरिया और हैजे ने मिलकर हमला बोल दिया। फलस्वरूप गाँव से प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगी। लोगों की शक्ति जवाब दे चुकी थी। ऐसे में केवल लुट्टन सिंह पहलवान ढोलक बजाकर लोगों में स्फूर्ति भरने का प्रयास करता था।

व्याख्या- गाँव में हैजे और मलेरिया की विभीषिका फैल चुकी थी। लोगों की शक्ति इस प्रकार टूट चुकी थी कि वे अपने परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु पर रो भी नहीं पाते थे ऐसे समय में केवल लुट्टन सिंह पहलवान रात्रि में ढोलक बजाता रहता था। ऐसा लगता था मानो वह उस विभीषिका को ललकार कर चुनौती दे रहा हो। हालांकि लुट्टन सिंह भी इससे हताश हो चुका था, फिर भी उसके ढोलक की आवाज गाँव के सभी लोगों संजीवनी शक्ति के समान कार्य करती थी। इससे गाँव के अर्द्धमृत और दवाई और चिकित्सा से विहीन लोगों में एक नई स्फूर्ति भरती थी। उस ढोलक की आवाज सुनकर ऐसा लगने लगता था मानों उनकी आँखों के सामने कुश्ती का दंगल ही दिखाई दे रहा हो। इस ढोलक की आवाज को सुनकर निर्बल और कृशकाय व्यक्तियों की नसों में भी बिजली-सी-दौड़ जाती थी। लोगों में एक नया जोश और हिम्मत आ जाती थी। लेखक के अनुसार लुट्टन सिंह जो ढोलक बजाता था उसमें किसी भी बीमारी की औषधीय शक्ति नहीं थी, और न ही उस हैजे और मलेरिया की महामारी को रोक सकने की शक्ति ही थी। किंतु फिर भी उस ढोलक की थाप मरते हुए लोगों में एक ताकत और प्राण का काम करती थी। उनमें मृत्यु से लड़ने की शक्ति भी आ जाती थी, जैसे वह ढोलक की आवाज संकटों का डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा ही देती हो।

7. एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह सिर्फ एक अद्‌भुत अवधूत हैं। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता, न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी वह हजरत ना जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पति शास्त्री ने मुझे बताया कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं, तो भंयकर लू के समय इतने कोमल तंतु जाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे खींच सकता था?

उत्तर- संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'शिरीष के फूल' से संकलित है। इसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

प्रसंग- लेखक ने शिरीष के पुष्प की तुलना अवधूत (सांसारिक मोह-माया से विरक्त) से की है। आज हमारे देश को ऐसे ही अवधूत की आवश्यकता है।

व्याख्या- लेखक के अनुसार शिरीष का पेड़ एक ऐसे संन्यासी के समान ही उसके मन में विचारों की लहरें जगा देता है। ये लहरें उसके मन में सदैव ऊपर की ओर उठती रहती है। वह सोचता है कि जेठ की तपती दोपहरी में सब कुछ व्याकुल हो जाता है, किन्तु फिर भी यह शिरीष का पेड़ इस प्रकार रस-युक्त किस प्रकार बना रहता है? क्या अन्य जीव-जंतुओं और प्राणियों की भाँति धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि प्राकृतिक परिवर्तन उस पर प्रभाव नहीं डालते हैं?

लेखक स्पष्ट करता है कि आज हमारे देश के ऊपर हत्या, खून-खराबा, लूट-पाट आदि का चक्रवात बह रहा है अर्थात् विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है। फिर ऐसी स्थिति में क्या स्थिर रहा जा सकता है, अर्थात् नहीं लेखक उसका उदाहरण देते हुए कहता है कि ऐसा एक वृक्ष है- शिरीष, या फिर देश का कोई एक वृद्ध रह सका था। वह स्वयं पूछता है कि ऐसा कैसे संभव हो सकता है। इसका उत्तर देते हुए कहता है कि शिरीष भी एक संन्यासी की तरह ही है। यह वायुमंडल से रस खींच लेता है, इसी कारण ही यह इतना कोमल और कठोर है। गाँधी महापुरुष भी इसी प्रकार के वातावरण में ही वायुमंडल से रस खींचकर ही इतना कोमल और कठोर बन सके थे। अतः लेखक सोचता है कि उसे जब भी कभी शिरीष का वृक्ष दिखता है, तब-तब वह देश के विषय में सोचकर पीड़ित या दुःखी हो जाता है और सोचने लगता है कि ऐसा धैर्यवान संन्यासी आज के युग में किस स्थान पर निवास करता है? क्योंकि समाज को आज ऐसे ही व्यक्ति की आवश्यकता है।

8. अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरल रचना निकली हैं। कबीर बहुत कुछ शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत का काव्य उसी प्रकार अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है।

उत्तर- प्रसंग- गद्यांश क्र. 7 के अनुसार

जो कभी अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन का, जो किए-कराए का लेखा जोखा मिलाने में उलझ ा, वह भी क्या कवि हैं? कहते हैं कर्णाट-राज प्रिया जिका देवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे, रे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को दिया, रे ने रामायण को और तीसरे ने महाभारत को।

तर- संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह ग-2' में संकलित निबंध 'शिरीष के फूल' से लिया गया है। के रचयिता आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं।

संग- लेखक ने साहित्य, समाज एवं राजनीति में पुरानी एवं पीढ़ी के द्वंद्व को परिभाषित किया है। वह पुरानी पीढ़ी और सब में नएपन के स्वागत का साहस एवं भाव देखना हता है।

ाख्या- लेखक के अनुसार सांसारिक विषय-वासनाओं में कर कवि (साहित्यकार) कविता या साहित्य रचना नहीं कर कता। वह मानता है कि कवि को एक संन्यासी की भांति सार में विरक्त होकर रहना पड़ता है। अतः सांसारिक मोह-या में फँसने की अपेक्षा फक्कड़ बनने वाला व्यक्ति ही कवि न सकता है और उत्तम कविताओं की रचना कर सकता है।

0. फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा उसका सब-कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल ने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी थान नहीं छोड़ते हैं जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, कियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। संत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से झरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह ड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात द आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं हचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का रकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

तर- संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह ग-2' में संकलित 'शिरीष के फूल' निबंध से लिया गया है। के लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

संग- लेखक के अनुसार व्यक्ति को प्रत्येक परिस्थिति में तुलन बनाए रखना चाहिए। उसे सुख और दुःख को मानने के लए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि उसका जीवन ईक्षुदंड (ईख के ने) के समान है।

ाख्या- शिरीष के फल इतने मजबूती से लगे होते हैं कि नये ल और फल निकल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। खक ने शिरीष के फलों की तुलना नेताओं से की है। नेताओं ी यह प्रवृत्ति होती है कि जब तक नयी पीढ़ी के लोग आकर न्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक वे कुर्सी छोड़ना नहीं चाहते हैं। शिरीष के फूल जितने नाजुक और कोमल होते हैं, उसके फल उतने ही कठोर और मजबूती से लगे रहते हैं।

11. जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम-श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सकें। इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

उत्तर- संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित है, डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा लिखित तथा 'ललई सिंह यादव' द्वारा अनुवादित 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग- डॉ. आंबेडकर ने यह भाषण सन् 1936 में जाति-पाँति तोड़क मंडल, लाहौर के वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया था। उनके अनुसार आज हमारा समाज पैतृक आधारित जातियों का विभाजन करता है। जबकि यह सभ्य समाज के लिए उपयुक्त नहीं है। उन्होंने अपने इस भाषण के माध्यम से जातिवाद के समूल विभाजन की अनिवार्यता को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

व्याख्या- लेखक के अनुसार आज हमारा समाज कार्यकुशलता के लिए श्रम विभाजन की अनिवार्यता पर बल देता है। किंतु श्रम विभाजन से जाति-प्रथा को बढ़ावा मिलता है। वह श्रमिकों का विभाजन भी करती है। अतः यह उचित नहीं है। उनके अनुसार श्रम का विभाजन मनुष्य के कार्य के प्रति रुचि के आधार पर होना चाहिए, किंतु आज हमारे समाज में इसका स्वाभाविक विभाजन नहीं किया गया है। इसमें श्रम का विभाजन जाति के आधार पर किया गया है। अतः यह किसी भी प्रकार से उचित नहीं ठहराया जा सकता। उनके अनुसार समाज में कुशल व्यक्ति तथा सक्षम श्रमिकों का निर्माण करने के लिए हमें व्यक्तियों की क्षमता का विकास करना चाहिए। यह क्षमता उन व्यक्तियों को अपने पेशे या कार्य का चुनाव स्वयं के द्वारा कर सकने तक होना चाहिए, किंतु आज समाज में लोगों को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। आज हमारे समाज में जाति प्रथा का दूषित सिद्धान्त प्रचलन में है। वह लोगों को प्रशिक्षण या उनकी क्षमता पर विचार नहीं करता है अपितु उनका पैमाना एक अलग ही प्रकार का है। वह मनुष्य के माता-

@MP_BOARD_25 (Telegram)

पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार जन्म से पहले ही, अर्थात् जब व्यक्ति गर्भ में ही रहता है, तो उसके लिए उसका पेशा निर्धारित कर देता है। अर्थात् हिन्दू समाज मनुष्य के जन्म को ही महत्व देता है, उसके कर्म और कार्यकुशलता पर ध्यान नहीं देता है।

12. जातिप्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों की अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

उत्तर- संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा लिखित तथा 'ललई सिंह यादव' द्वारा हिंदी रूपांतरित 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' नामक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग- लेखक ने जाति प्रथा को समाज के लिए हानिकारक माना है। उनके अनुसार 'समता' द्वारा ही एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है।

व्याख्या- लेखक के अनुसार समाज का एक वर्ग जीवन, शारीरिक सुरक्षा एवं संपत्ति के अधिकार को तो सभी लोगों के लिए आवश्यक मानता है। ऐसा वर्ग मानता है कि इन लोगों को भी ऐसी समता के अवसर प्राप्त होने चाहिए, किन्तु वे कार्यकुशलता के आधार पर मनुष्य की योग्यता, लक्षण और उसके प्रयोग को स्वतंत्रता प्रदान करने के पक्ष में नहीं है। ऐसे जाति प्रथा का संरक्षक मनुष्य समाज के सभी वर्गों को उनके व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देने के लिए तैयार नहीं होता। वह ऐसे समाज में दलित वर्ग को 'दासता' रूपी भावना में ही जकड़कर रखना चाहता है। वह शासकीय पराधीनता को ही दासता नहीं मानता अपितु इसमें एक सामाजिक दासता भी सम्मिलित है। इसमें वह स्थिति भी सम्मिलित है जिसमें निम्न वर्ग के लोगों को उच्च वर्ग के लोगों के लिए कर्तव्य मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है। ऐसी दासता कानून में उल्लेखित नही है, क्योंकि जाति प्रथा के अनुसार ही समाज में एक ऐसा वर्ग (दलित वर्ग) होना आवश्यक है जिसमें ऐसी वर्ग को अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने को विवश होना पड़ता है। ❑

ड्काई-4 भाषा

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) वे विभिन्न शब्द जिनका स्त्रोत संस्कृत नहीं है, में ग्राम्य क्षेत्रों अथवा जनजातियों में बोली जाने विभिन्न भाषा परिवारों के हैं कहलाते हैं-
(a) विदेशी शब्द (b) क्षेत्रीय शब्द
(c) तकनीकी शब्द (d) निपात शब्द

(2) निम्न में से अवधारणा बोधक निपात शब्द नहीं
(a) ठीक (b) लगभग
(c) करीब (d) काश

(3) 'काश! आज वर्षा होती' इस वाक्य में 'काश' सा निपात शब्द है-
(a) सीमा बोधक (b) विस्मयादिबोधक
(c) प्रश्न बोधक (d) निषेधात्मक निपात

(4) निम्न शब्दों में से तकनीकी शब्द नहीं है-
(a) अंगोछा (b) रेखा चित्र
(c) अभिकर्ता (d) आयोग

(5) जो शब्द विभिन्न शस्त्रों और विज्ञानों में ही प्रयुक्त हैं, सबंध शास्त्र या विज्ञान के प्रसंग में जिन की परिभा जा सके, कहलाते हैं-
(a) निपात शब्द (b) तकनीक शब्द
(c) पारिभाषिक शब्द (d) विदेशी शब्द

(6) राष्ट्रभाषा के लिए प्रयुक्त किए जाने वाला शब्द
(a) राज्य भाषा (b) संपर्क भाषा
(c) मातृभाषा (d) विभाषा

(7) राजभाषा को अंग्रेजी में कहते हैं-
(a) नेशनल लैंग्वेज (b) ऑफिशियल लैंग्वेज
(c) वर्किंग लैंग्वेज (d) कॉमन लैंग्वेज

(8) राज्य विशेष में कामकाज की भाषा कहलाती
(a) मातृभाषा (b) राष्ट्रभाषा
(c) राजभाषा (d) विभाषा

(9) शब्दों के अर्थ पूर्ण समूह को कहा जाता है-
(a) वर्ण (b) शब्द
(c) वाक्य (d) पद

(10) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद होते हैं-
(a) 4 (b) 6
(c) 8 (d) 10

(11) रचना के अनुसार वाक्य के भेद होते हैं-
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

12) जिस वाक्य में एक ही संज्ञा और क्रिया का प्रयोग होता है उसे कहते हैं-
(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

13) ऐसे वाक्य जिनमें प्रार्थना, इच्छाएं, आशीष प्रकट होता है, कहलाते हैं-
(a) प्रश्नवाचक (b) इच्छा वाचक
(c) आज्ञा वाचक (d) संदेह वाचक

14) मानव के विचारों को प्रकट करने वाला सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह कहलाता है-
(a) वाक्य (b) वाक्यांश
(c) मुहावरा (d) लोकोक्ति

15) 'वह अच्छा खेला, परंतु हार गया' ये वाक्य है एक-
(a) संयुक्त वाक्य (b) सरल वाक्य
(c) प्रश्नवाचक वाक्य (d) नकारात्मक वाक्य

16) अंगार उगलना का अर्थ है-
(a) आग लगाना (b) भयंकर गर्मी
(c) गाली देना (d) कठोर वचन कहना

17) आंखों पर चर्बी छाना का अर्थ है-
(a) धोखा खाना (b) कुछ समझ ना आना
(c) अभिमान करना (d) निर्लज्ज होना।

18) आंधी के आम का अर्थ है-
(a) सस्ती वस्तु (b) उपहार में प्राप्त वस्तु
(c) कठिनाई से प्राप्त वस्तु (d) दुर्लभ वस्तु

19) मंत्र फूंकना का अर्थ है-
(a) पवित्र बनना (b) भलाई का ढोंग करना
(c) प्रेरणा देना (d) बरगलाना

20) मक्खी पर मक्खी मारना का अर्थ है-
(a) छोटी बात को बढ़ा देना (b) ज्यों की त्यों नकल करना
(c) समय व्यर्थ खो देना
(d) निरर्थक काम को लगातार किए जाना

21) खुले आम खुले खजाने का अर्थ है-
(a) मुंहफट होना (b) व्यर्थ की बातें करना
(c) बेशर्म होना (d) सबके सामने प्रकट रूप में

22) काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती का अर्थ है-
(a) बुरे दिन हमेशा नहीं रहते
(b) दुर्भाग्य की मार बार-बार नहीं होती।
(c) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है
(d) छल कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता।

23) अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता का अर्थ है-
(a) स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है
(b) विपत्ति में पड़े बिना अच्छा फल नहीं मिलता।
(c) प्रयत्न किए बिना वास्तविकता सामने नहीं आती।
(d) स्वयं ही सब कार्य करना पड़ता है।

(24) आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास का अर्थ है-
(a) हरि भक्ति का मार्ग कठिन होता है।
(b) उद्देश्य की प्राप्ति में असफल होना।।
(c) किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना।
(d) ईश्वर भक्ति छोड़ व्यापार में लग जाना।

(25) ढाक के वही तीन पात होना का अर्थ है-
(a) यत्नपूर्वक रखना (b) सदा एक सा
(c) उटपटांग काम करना (d) अनुरूप बनाना।

उत्तर- (1) (b) (2) (d) (3) (b) (4) (a) (5) (c) (6) (b) (7) (b) (8) (c) (9) (c) (10) (c) (11) (b) (12) (a) (13) (b) (14) (a) (15) (a) (16) (d) (17) (b) (18) (a) (19) (c) (20) (d) (21) (d) (22) (d) (23) (a) (24) (c) (25) (b)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) वह जो शब्द क्षेत्र विशेष में बोले जाते हैं ..... कहलाते हैं। (तकनीकी/क्षेत्रीय शब्द)

(2) किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करने वाले शब्द ..... कहलाते हैं। (तकनीकी शब्द/निपात शब्द)

(3) वे शब्द जो वाक्य में किसी शब्द के बाद बल देने के लिए लगाए जाते हैं ..... कहलाते हैं।

(4) वे शब्द जो किसी ज्ञान विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किए जाते हैं ..... कहलाते हैं। (तकनीकी शब्द/यौगिक शब्द)

(5) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए। मैं 'भी' ..... शब्द है। (निपात/यौगिक)

(6) वर्षा से नदियों का ..... तीव्र हो जाता है। (प्रभाव/प्रवाह)

(7) भारत देश में बाढ़ से प्रतिवर्ष ..... बहुत होती है। (क्षति/क्षिति)

(8) हमें ..... पान से सदैव बचना चाहिए। (मध्य/मद्य)

(9) आजकल अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए ..... बीज बोया जाता है। (संकर/शंकर)

(10) शब्द युग्म के ..... प्रकार हैं। (4/6)

(11) जब एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होती है तो उसे ..... शब्द युग्म कहते हैं। (पुनरुक्त शब्द युग्म/अनुकरणात्मक शब्द युग्म)

(12) वाक्य ..... है। (सार्थक शब्द समूह/निरर्थक शब्द समूह)

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(13) वह कहाँ गया है? ..... वाक्य है।
(प्रश्नवाचक/निषेधवाचक)
(14) ..... वाक्यों में किसी बात को साधारण रूप से कहा जाता है। (संकेतवाचक वाक्य/विधि वाचक वाक्य)
(15) जब मूल वाक्य के साथ एक या अधिक वाक्य और भी मिले होते हैं तब वह ..... कहलाता है।
(संयुक्त वाक्य/मिश्र वाक्य)
(16) हाय् मैं लुट गया। वाक्य ..... है।
(विस्मयादि बोधक वाक्य/संकेतवाचक वाक्य)
(17) एक ऐसा वाक्यांश जिसका अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न तथा चमत्कारिक एवं विलक्षण होता है ..... कहलाता है।
(मुहावरा/लोकोक्ति)
(18) लोक प्रसिद्ध उक्ति..... कहलाती है।
(मुहावरा/लोकोक्ति)
(19) दाल न गलना मुहावरे का अर्थ ..... है।
(सफल न होना/ दाल न पकना)
(20) एक पथ .....' प्रसिद्ध मुहावरा है। (दो काज/दो राज)
(21) 'तन पर नहीं लता पान खाए कलकत्ता का अर्थ .... हैं।
(झूठों दिखाना/सच कहना)
(22) 'धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का 'एक ..... है।
(मुहावरा/लोकोक्ति)
(23) ऊँट के मुंह में जीरा मुहावरे का अर्थ ..... है।
(आवश्यकता से कम वस्तु/आवश्यकता से ज्यादा वस्तु)
(24) जैसी करनी वैसी भरनी का अर्थ ..... है।
(कर्म के अनुसार फल/भाग्य के अनुसार फल)
(25) लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग ..... में होता है।
(मुहावरा/लोकोक्ति)

उत्तर– (1) क्षेत्रीय शब्द (2) तकनीकी शब्द (3) निपात शब्द (4) तकनीकी शब्द (5) निपात (6) प्रवाह (7) क्षति (8) मद्य (9) संकर (10) 4 (11) पुनरुक्त शब्द युग्म (12) सार्थक शब्द समूह (13) प्रश्नवाचक (14) संकेतवाचक (15) संयुक्त वाक्य (16) विस्मयादिबोध वाक्य (17) मुहावरा (18) लोकोक्ति (19) सफल न होना (20) दो काज (21) झूठा दिखावा (22) लोकोक्ति (23) आवश्यकता से कम वस्तु (24) कर्म के अनुसार (25) मुहावरा।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए–

(1)	'अ'	'ब'
(1)	स्वीकार्य निपात शब्द	(a) नहीं,जी, नहीं
(2)	निषेधात्मक निपात शब्द	(b) काश, काश कि
(3)	नकारार्थक निपात शब्द	(c) क्या, कब
(4)	प्रश्नबोधक निपात शब्द	(d) मत
(5)	विस्मयादिबोधक निपात शब्द	(e) हाँ, जी, जी हाँ

उत्तर– (1) (e) (2) (a) (3) (d) (4) (c) (5) (b)

(2)	'अ'	'ब'
(1)	रचना के अनुसार वाक्य के प्रकार	(a) निषेधवाचक वाक्य
(2)	तुम यहाँ आओ	(b) 8
(3)	अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार	(c) आज्ञा वाचक
(4)	तुम घर मत जाओ	(d) वाक्य
(5)	'हे राम! क्या-क्या सहना पड़ेगा। वाक्य है	(e) 3
(6)	विचार व्यक्त करने वाला शब्द	(f) मिश्रित वाक्य
(7)	राम घर आया और सो गया	(g) संयुक्त वाक्य
(8)	मेरे पास जो साइकिल है वह टूटी हुई है।	(h) विस्म वाचक

उत्तर– (1) (e) (2) (c) (3) (b) (4) (a) (5) (h) (6) (d) (7) (f) (8) (g).

(3)	'अ'	'ब'
(1)	तीन तेरह होना	(a) मुहावरा
(2)	एकमात्र सहारा के लिए मुहावरा	(b) अनदेखा करना
(3)	आँख मूंद लेने का अर्थ	(c) बिखर जाना
(4)	आँखों पर पट्टी बांधना	(d) अंधे की लाठी
(5)	लक्ष्यार्थ	(e) उदासीन हो जाना

उत्तर– (1) (c) (2) (d) (3) (e) (4) (b) (5) (a).

(4)	'अ'	'ब'
(1)	संप्रेषण का सशक्त माध्यम	(a) संवाद
(2)	स्पष्टता और प्रवाह	(b) छोटा करना
(3)	भाव-विस्तार	(c) विज्ञापन
(4)	दो व्यक्तियों के बीच वार्तालाप	(d) संक्षेपण
(5)	संक्षेपण का सामान्य अर्थ	(e) पल्लवन

उत्तर– (1) (c) (2) (d) (3) (e) (4) (a) (5) (b).

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) किसी भी विषय से संबंधित ऐसे शब्द जिनका प्रयोग रूप से उस विषय की चर्चा के लिए होता है।
(2) तकनीकी शब्द अंग्रेजी के किस शब्द का हिन्दी पर्या
(3) भौतिक विज्ञान में प्रयुक्त 3 तकनीकी शब्द लिखिए
(4) धार्मिक कृत्य एवं कर्मकांड में प्रयुक्त तकनीकी लिखिए।
(5) 5 क्षेत्रीय शब्द लिखिए।

6) तुमने अपने आने की खबर तक नहीं दी। इस वाक्य में पात शब्द लिखिए।
7) 5 निपात शब्द लिखिए।
8) तकनीकी शब्द का दूसरा नाम क्या है?
9) युग्म का अर्थ क्या है?
10) शब्द युग्म के भेद बताइए।
11) पुनरुक्त शब्द युग्म के उदाहरण लिखिए।
12) अनुकरणात्मक शब्द युग्म के उदाहरण दीजिए।
13) जब पहले शब्द के अनुकरण पर दूसरा शब्द गढ़ लिया ाता है तब शब्द युग्म कहलाता है।
14) अनुसरणात्मक शब्द युग्म परिभाषा व उदाहरण दीजिए।
15) भिन्न वर्तनी उच्चारण वाले शब्द युग्म के उदाहरण ीजिए।
16) राम शायद घर पर ही हो, किस प्रकार का वाक्य है?
17) आज्ञावाचक वाक्य का एक उदाहरण दीजिए।
18) यदि मधु जानती तो जरूर मेरे घर आती, किस प्रकार का ाक्य है?
19) श्याम जा रहा है वाक्य किस प्रकार का है?
20) मिश्रित वाक्य का एक उदाहरण दीजिए।
21) जब कई सरल और मिश्रित वाक्य समूह अवयवों के द्वारा क ही वाक्य में जुड़े रहते हैं, तब वह वाक्य कहलाता है।
22) वाक्यों का वर्गीकरण मुख्यत: कितनी दृष्टियों से किया ाता है?
23) 'राम घर पर है' का संदेशवाचक रूप क्या होगा?
24) उल्टी गंगा बहाना का क्या अर्थ है?
25) छोटे-छोटे वाक्यांश क्या कहलाते हैं?
26) 'अंधे की लाठी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
27) 'गागर में सागर भरना, का क्या अर्थ है?
28) लोकोक्ति को अन्य किस नाम से जानते हैं?
29) 'कान देना' मुहावरे का अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट ीजिए।
30) 'आगे नाथ न पीछे पगहा' लोकोक्ति का अर्थ वाक्य योग द्वारा स्पष्ट कीजिए।
31) 'चांदी का जूता मारना' लोकोक्ति का सही अर्थ बताइए।
32) आम के आम गुठलियों के दाम का अर्थ लिखिए।
33) अंधा पीसे कुत्ता खाए का अर्थ बताइए।
34) लोकोक्ति में क्या छुपा होता है?

उत्तर– (1) लक्षणा शब्द शक्ति (2) Technical (3) गुरूत्वाकर्षण, वेग, त्वरण आदि (4) होतृ, यक्ष, जप, आसन, भावना, कर्म, संकल्प आदि। (5) बहरा, गडई, खचना, पिण्डी, तौल्लिया आदि बुंदेलखण्ड के क्षेत्रीय शब्द है। (6) तक (7) तक, मत, क्या, हाँ, भी, केवल, नहीं, काश (8) पारिभाषिक शब्द (9) युग्म शब्द अथवा श्रुति समभिन्नार्थक शब्द का अर्थ ही है-सुनने में समान, परन्तु भिन्न अर्थ वाले (10) (अ) समानार्थी (ब) विपरीतार्थी (स) पुनरूक्त (द) सजातीय (इ) समानार्थक-निरर्थक (फ) निरर्थक (11) धीरे-धीरे, आना-जाना (12) फटाफट, धड़ाधड़ (13) अनुकरणात्मक शब्द युग्म (14) हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो जैसी ध्वनि सुनाई दे वैसे ही लिख देना अनुकरणात्मक शब्द कहते हैं। जैसे- फट-फट, धड़-धड़ (15) लेन-देन, जोड़-तोड़, सम-विषम आदि। (16) निपात शब्द (17) आज्ञावाचक वाक्य का उदाहरण- तुम पढ़ने जाओ, यह पाठ तुम पढ़ो (18) बल प्रदायक बोधक निपात (19) सरल वाक्य (20) जो नाचती गाती है, वह राधा है। (21) संयुक्त वाक्य (22) रचना की दृष्टि व अर्थ की दृष्टि से (24) राम शायद ही घर पर है (24) नियम विरुद्ध कार्य करना (25) मुहावरे (26) एक मात्र सहारा (27) थोड़े में ज्यादा कहना (28) कहावत (29) कान देना-ध्यान से सुनना, वाक्य प्रयोग-पिता की बातों पर कान दिया करो, बाद में काम आएंगी। (30) आगे नाच न पीछे पगहा = किसी प्रकार की जिम्मेदारी न होना। वाक्य प्रयोग- पिता के मर जाने के बाद रवीन्द्र की हालत आगे नाच न पीछे पगहा वाली हो गई। (31) चाँदी का जूता मारना = रिश्वत या घूस देना। वाक्य प्रयोग - तस्करी के धंधे को पकड़े जाने पर गिरीश चाँदी का जूता फेंक कर छूट गया। (32) आम के आम गुठलियों के दाम = एक कार्य करने से ही दोहरा लाभ प्राप्त करना। (33) अंधा पीसे कुत्ता खाए = परिश्रम को कोई ओर लाभ किसी और को मिलना। (34) व्यक्तियों एवं नियमों आदि पर आधारित चुटीला सारगर्भित विशेष अर्थ।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) तोलिया तकनीकी शब्द है।
(2) आवृत्ति निपात शब्द है।
(3) गुरूत्वाकर्षण तकनीकी शब्द है।
(4) वाणिज्य संबंधी शब्द तकनीकी शब्द है।
(5) ही, तो, भी, तक आदि निपात शब्द है।
(6) वर्षा के आने पर पानी भर जाता है साधारण वाक्य है।
(7) शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य नहीं कहते हैं।
(8) 'हरि' आया परंतु वह उस पुस्तक को नहीं लाया जो मैंने मंगाई थी' - संयुक्त वाक्य है।
(9) निषेधात्मक वाक्य में प्रश्न किया जाना आवश्यक है।
(10) अहा! तुम आ गए। आज्ञावाचक वाक्य है।
(11) मुहावरे का प्रयोग भाषा में चमत्कार उत्पन्न करता है।
(12) लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।
(13) लोक + उक्ति से लोकोक्ति शब्द की उत्पत्ति हुई है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(14) लोकोक्ति और मुहावरे समान नहीं है।
(15) लोकोक्ति पूर्ण स्वतंत्र होती है जबकि मुहावरा पूर्ण स्वतंत्र नहीं होता है।
(16) चिराग तले अंधेरा का अर्थ है चिराग के नीचे अंधेरा।
(17) अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग यह एक लोकोक्ति है।
(18) काला अक्षर भैंस बराबर का अर्थ साक्षर होना है।
(19) अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना का अर्थ है अपने मुंह को मिट्ठू जैसा बनाना।
(20) लोहा लेना मुहावरे का अर्थ युद्ध करना है।

उत्तर– (1) असत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) सत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) असत्य (10) असत्य (11) सत्य (12) सत्य (13) सत्य (14) सत्य (15) सत्य (16) असत्य (17) सत्य (18) असत्य (19) असत्य (20) सत्य।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भाव पल्लवन कीजिए–

(अ) सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है।

(ब) जरा और मृत्यु दोनों ही जगत के प्रमाणित सत्य हैं।

(स) ''आँखों में हो स्वर्ग, लेकिन पांव पृथ्वी पर टिके हो''

(द) ''युग परिवर्तन की आहत पाने वाले युग निर्माता होते हैं।''

उत्तर– (अ) वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूं।

(ब) जरा (वृद्धावस्था) और मृत्यु ये दोनों ही संसार के चिरपरिचित एवं कटु सत्य हैं। यह तथ्य पूर्णत: सिद्ध एवं प्रामाणिक है। इसका उल्लेख गीता में भी है। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। मृत्यु के उपरान्त जीव काया रूपी पुराने वस्त्र को त्याग नवीन शरीर धारण करता है। यह क्रम शाश्वत है। किसी कवि ने इस तथ्य को निम्नवत् व्यक्त किया है, देखिए ''आया है सो जायेगा राजा रंक फकीर''
कोई हाथी चढ़ चल रहा कोई बना जंजीर।''
निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि जरा एवं मृत्यु ये दोनों ही तथ्य सत्य हैं इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। इस तथ्य को तुलसीदास ने भी स्वीकारा है।

(स) आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों– व्यक्ति बड़ी से बड़ी कल्पना करे, स्वर्ग-तुल्य सुखमय प्राप्त करने की अभिलाषा रखे, या महत्वाकांक्षी बने, उतना उद्यम भी करना चाहिए। धैर्य, उद्यम और संकल्प दृढ़ता के अभाव में वह अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं सकता।

(द) छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. क्षेत्रीय शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण लिखिए।

उत्तर- किसी देश के रूप में या किसी विशेष क्षेत्र, जिले, भाग से संबंधित हिस्से को क्षेत्रीय शब्द के रूप में जाना जाता विशेष तौर पर एक क्षेत्र से संबंधित जिस को ही क्षेत्रीय कहते जैसे- ढोर, खचाखच, फटाफट, परात, कांच, मुक्का

प्रश्न 3. तकनीकी शब्द किसे कहते हैं?

उत्तर- किसी भी विषय से संबंधित ऐसे शब्द जिनका मुख्य रूप से उस विषय की चर्चा के लिए ही होता है तथा शब्द कहलाते हैं। इन्हें पारिभाषिक शब्द भी कहते हैं। भौतिक विज्ञान में ''गुरूत्वाकर्षण'', ''वेग'', ''आवृत्ति'' आदि शब्द। धार्मिक कृत्यों तथा कर्मकांड लिए भी तकनीकी शब्द प्रयोग किए जाते हैं। जैसे- ''यज्ञ'', ''जप'', ''आसन'', ''भावना'', ''संकल्प'' आदि इस प्रकार के तकनीकी शब्द हैं।

प्रश्न 4. न्याय विधि संबंधी पांच तकनीकी शब्द बताइए।

उत्तर- अधिनियम, अधिवक्ता, न्यायालय, अपराध, अभि चैंबर्स।

प्रश्न 5. निपात की परिभाषा उदाहरण सहित लिखि

उत्तर- निपात की परिभाषा– किसी भी बात पर अधि भार देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता निपात कहते हैं। जैसे- तक, मत, क्या, हाँ, भी, केवल नहीं, न, काश। उदाहरण- तुम्हें आज रात रुकना ही तुमने तो हद कर दी। राधा ने मुझसे बात तक नहीं की, सभी स्कूल जाएंगे।

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटकर उन वाक्य बनाइए।

(अ) यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं

(ब) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का किया गया होगा।

उत्तर- (अ) तो था - रास्ते में कोई सवारी तो थी नहीं।
(ब) को ही- राकेश को ही हमेशा अच्छे अंक मिलते

प्रश्न 7. वाक्य किसे कहते हैं? लिखिए।

उत्तर- दो या दो से ज्यादा शब्दों के मेल से किसी निर्माण हो उसे वाक्य कहते हैं। अन्य शब्दों में- दो

धिक शब्दों का एक सार्थक समूह, उसे वाक्य कहते हैं। जैसे- की जीत होती है।

न 8. रचना के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के हैं? लिखिए।

र- रचना के आधार पर वाक्य के भेद- (1) सरल वाक्य संयुक्त वाक्य (3) मिश्रित/मिश्र वाक्य।

न 9. मिश्रित वाक्य किसे कहते हैं? लिखिए।

र- मिश्र वाक्य– वे वाक्य होते हैं, जिनमें एक कर्ता दो या धिक क्रियाओं से सम्बन्धित रहता है। इसमें दो या अधिक वाक्य होते हैं, जो एकदूसरे पर निर्भर रहते हैं। जैसे- यदि परिश्रम करोगे तो सफलता भी मिलेगी।
जितनी बन सके मेहनत करनी चाहिए।

न 10. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं? लिखिए।

र- संयुक्त वाक्य- वे वाक्य होते हैं, जिनमें एक-से अधिक न उपवाक्य होते हैं। संयुक्त वाक्यों में मिश्र वाक्यों के समान त्पारिक निर्भरता नहीं होती। जैसे-
राम आ रहा था और सीता जा रही थी।
कृष्ण सो रहे थे, किन्तु राधा पंखा झल रही थी।

न 11. सरल वाक्य का उदाहरण दीजिए।

र- जिस वाक्य में एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य या धारण वाक्य कहते हैं, इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है, भ- मुकेश पढ़ता है। राकेश ने भोजन किया।

न 12. अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार लिखिए।

र- अर्थ के आधार पर वाक्य, भेद

विधानवाचक वाक्य	• निषेधवाचक वाक्य
प्रश्नवाचक वाक्य	• विस्मयादिबोध वाक्य
आज्ञावाचक वाक्य	• इच्छावाचक वाक्य
संदेहवाचक वाक्य	• संकेतवाचक वाक्य

न 13. संकेतवाचक वाक्य का उदाहरण लिखिए।

र- संकेतवाचक वाक्य की परिभाषा– वह वाक्य जिनमें क्रिया या दूसरी क्रिया पर पूरी तरह से निर्भर हो, उन वाक्य संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है।
केतवाचक वाक्य के उदाहरण- अगर आप मेहनत करोगे, तो फलता अवश्य मिलेगी।
र उदाहरण में एक वाक्य में दो क्रियाएँ एक दूसरे पर निर्भर है। वाक्य में पहली क्रिया आप मेहनत करोगे और दूसरी क्रिया आपको सफलता मिलेगी यह है एवं दोनों क्रियाएं एक दूसरे पूरी तरह से निर्भर है। मेहनत करेंगे तो सफलता मिलेगी। त: यह उदाहरण संकेत वाचक वाक्य के अंतर्गत रखा जायेगा।

न 14. प्रश्नवाचक वाक्य किसे कहते हैं?

र- प्रश्नवाचक वाक्य, वाक्य का एक प्रकार है। जिस वाक्य श्न पूछने का भाव हो उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।
हरण-
- तुम कैसे हो?
- मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?
- तुमने ऐसा क्यों किया?
- क्या आपको हिन्दी भाषा आती है?

प्रश्न 15. बच्चे सुंदर चित्र बना रहे हैं। इसका आज्ञा वाचक रूप क्या होगा?

उत्तर- जिन वाक्यों से आज्ञा, उपदेश, प्रार्थना, अनुमति आदि का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।
बच्चे सुन्दर चित्र बना रहे हैं। इसका आज्ञावाचक रूप होगा- बच्चों सुंदर चित्र बनाओ।

प्रश्न 16. संदेह वाचक वाक्य की परिभाषा और उदाहरण दीजिए।

उत्तर- संदेहवाचक वाक्य वह वाक्य होते हैं जिन में संदेह (शंका) के साथ बात करते हैं और अनुमान लगाया जाता है कि वह होने की संभावना है। जैसे- आज वर्षा हो सकती है।

प्रश्न 17. मुहावरा किसे कहते हैं? लिखिए।

उत्तर- मुहावरा– (1) लाक्षणिक अर्थों से युक्त या सामान्य अर्थ से विलग विलक्षण अर्थ का बोध कराने वाला वाक्यांश मुहावरा कहलाता है।
(2) मुहावरा ऐसा वाक्यांश है, जिसका शब्दार्थ ग्रहण नहीं किया जाता, अपितु उसका भाव या आशय लिया जाता है।

प्रश्न 18. लोकोक्ति किसे कहते हैं? लिखिए।

उत्तर- लोकोक्ति- लोक + उक्ति, दो शब्दों से मिलकर बना है। इसका अर्थ है लोक का कथन। यह वाक्यांश नहीं होकर पूर्ण वाक्य है। लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।

प्रश्न 19. लोकोक्ति और मुहावरे में अंतर लिखिए।

उत्तर- मुहावरे एवं लोकोक्तियों में अंतर-

क्र.	मुहावरा	लोकोक्तियाँ
(1)	मुहावरा एक वाक्यांश है।	लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य है।
(2)	मुहावरे को वाक्य प्रयोग द्वारा पूर्ण किया जाता है।	लोकोक्ति के प्रयोग हेतु अन्य वाक्यों को पृथक करना पड़ता है।
(3)	मुहावरे अपने शाब्दिक अर्थ छोड़कर नया अर्थ देते हैं। जैसे ''तोते उड़ जाना' में तोते उड़ना नहीं वरन् घबरा जाने का भाव दिखाई देता है।	लोकोक्तियाँ विशेष अर्थ देती है, परन्तु उनका शाब्दिक अर्थ भी बना रहता है। जैसे 'नाच ना जाने आँगन टेढ़ा' में किसी अकुशल व्यक्ति द्वारा साधनों का दोष दिखाई देना है।
(4)	मुहावरों के अन्त में क्रियापद होता है। जैसे ''हाथ मलना'' क्रिया पद का प्रयोग हुआ है।	लोकोक्ति के अंत में क्रिया पद का होना अनिवार्य नहीं है। जैसे ''अंधेर नगरी चौपट. राजा।''

©MP_BOARD_GP (Telegram)

प्रश्न 20. राष्ट्रभाषा किसे कहते हैं? लिखिए।

उत्तर- किसी भी देश या राष्ट्र द्वारा किसी भाषा को जब अपने किसी राजकार्य के लिए भाषा घोषित किया जाता है या अपनाया जाता है तो उसे राष्ट्र भाषा जाना जाता है। अर्थात् जब कोई देश किसी भाषा को अपनी राष्ट्र की भाषा घोषित करता है तो उसे ही राष्ट्र भाषा के लिए जाना जाता है।

प्रश्न 21. राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- सार्वजनिक कार्यों में प्रयोग होने वाली एक मुख्य भाषा (जैसे- भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

राष्ट्र भाषा की विशेषताएँ-

(1) राष्ट्रभाषा देश में बहुसंख्यक लोगों की भाषा होती है।
(2) राष्ट्रभाषा सीखने में सरल होती है तथा इसकी लिपि वैज्ञानिक होती है।
(3) राष्ट्रभाषा संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त होती है।
(4) यह देश में शिक्षा व समाचार-पत्रों की भाषा होती है।
(5) यही राजभाषा और सम्पर्क भाषा हो सकती है।

प्रश्न 22. राजभाषा किसे कहते हैं? किन्हीं दो राज्य की राजभाषा लिखिए।

उत्तर- प्रशासन की भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है, अस्तु सरकारी कार्यालयों में जिस भाषा का प्रयोग होता है तथा राज्य सरकारें जिस भाषा में अपने पत्र आदि केन्द्र सरकार की तथा केन्द्र प्रशासन अपने संदेश राज्य सरकारों को संप्रेषित करता है, वह राजभाषा कही जाती है।

जैसे- (1) उत्तर प्रदेश - हिन्दी
(2) पश्चिम बंगाल - बंगाली
(3) केरल - मलयालम

प्रश्न 23. राजभाषा, भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- राजभाषा की विशेषताएँ-

(1) यह सरकारी कामकाज की भाषा होती है।
(2) क्षेत्रीय भाषा ही राजभाषा होती है।
(3) कर के निर्णय, शिक्षा का माध्यम, रेडियो और दूरदर्शन में राजभाषा का प्रयोग होता है।

प्रश्न 24. राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर लिखिए।

उत्तर- राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर-

क्र.	राष्ट्रभाषा	राजभाषा
(1)	यह पूरे राष्ट्र की भाषा होती है तथा अनिवार्य रूप से पूरे राष्ट्र में अपनाई जाती है।	राज्य विशेष की भाषा होती है तथा शासकीय सेवा व व्यवहार में आती है।
(2)	राष्ट्रभाषा पूरे देश की एक ही होती है।	किसी भी देश में राज्य भाषाएं कई हो सकती है।
(3)	राष्ट्रभाषा के लिए अंग्रेजी में 'नेशनल लैंग्वेज' शब्द प्रयोग किया जाता है।	राजभाषा के लिए अंग्रे… ऑफिशियल लैंग्वेज श… प्रयुक्त किया जाता है।
(4)	राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है और यही राज्य कार्य की भाषा होती है।	वही राष्ट्रभाषा एक स्वाभाविक तथा जन… से उत्पन्न शब्द है और… जनता की भाषा होती…

प्रश्न 25. निम्नांकित सूक्तियों का भाव पल… कीजिए-

(अ) ''आँखों में हो स्वर्ग, लेकिन पांव पृथ्वी पर टिके…

(ब) ''युग परिवर्तन की आहट पाने वाले युग नि… होते हैं।''

उत्तर- देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 1

प्रश्न 26. निम्नलिखित कथन का सार संक्षेपण में लि…

''जिस व्यक्ति को अपने देश की भाषा का ज्ञान न… अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का परिचय नहीं, … देश की कला के प्रति आदर नहीं है और जो … धार्मिक, आध्यात्मिक, निधि से गौरवान्वित नहीं है… निश्चित तौर पर नर नहीं, नर पशु है।''

उत्तर- देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 1

प्रश्न 27. कम्प्यूटर शिक्षकों की आवश्यकता हेतु विज्ञापन बनाइए।

उत्तर-

आवश्यकता है

शीघ्र आवश्यकता है न्यू Kidzee Center में पढ़ाने के… Part Time/Full Time Post Graduate/Gradu… 12th, 10th Pass, B.Ed., D.Ed, Computer, … male Teacher, Principal/Assistant Teacher, … जो नर्सरी स्कूल के बच्चों को पढ़ा सके, वेतन यो… अनुसार। जल्दी कीजिये।

फोन करें या लिखें - Office Time 08.00 to 05…

संपर्क करें- Add - Kidzee Center Mungali
E.R.C. 4728
आदर्श कालोनी Gunjan Palace, Maharana Pr…
Ward Binoba Nagar, Dist. Mungeli (C.G.)
Mobile No. - 7543091871, 7982179963
Sahayak Teacher - 4
Principal - 1
Aaya - 1

नोट- केवल महिला/लड़की ही संपर्क करें।

प्रश्न 28. स्वास्थ्य लाभ कर रहे रोगी और उनके डॉक्टर के बीच संवाद लिखिए।

उत्तर- रोगी और डॉक्टर के बीच संवाद

डॉक्टर - क्यों भाई! अब आपकी तबीयत कैसी है?
रोगी - दवा तो समय पर खा ही रहा हूँ। अभी कमजोरी मालूम हो ही रही है।
डॉक्टर - सब ठीक हो जायेगा। आप धीरज रखें।
रोगी - क्या करूँ, डाक्टर साहब! आप तो जानते हैं कि मैं बहुत गरीब हूँ।
डॉक्टर - ठीक है। मैं अस्पताल से आपकी दवा के लिए व्यवस्था करवा देता हूँ। ईश्वर ने चाहा तो आप इसी सप्ताह घर लौट सकते हैं।
रोगी - धन्यवाद, डॉक्टर साहब! डॉक्टर को तो दूसरा भगवान कहा जाता है।

प्रश्न 29. विलंब से कक्षा में पहुंचने पर शिक्षक-छात्र संवाद लिखिए।

उत्तर- विद्यालय में विलंब से पहुंचने पर अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य हुआ संवाद-

विद्यार्थी - क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, सर?
अध्यापक - अंदर आओ, मैं तुमसे देर से आने का कारण पूछ सकता हूँ।
विद्यार्थी - सर मेरे घर पर मेरे पिताजी की तबीयत अचानक सुबह खराब हो गयी, मुझे अपनी माँ के साथ उन्हें अस्पताल लेकर जाना पड़ा।
अध्यापक - सच कह रहे हो या देर से आने की बहानेबाजी कर रहे हो।
विद्यार्थी - बिल्कुल सच कह रहा हूँ सर, आप मेरी माँ को फोन करके पूछ सकते हैं, पिताजी अभी हॉस्पिटल में ही भर्ती हैं। ये रहा दवाइयों का पर्चा, जो मुझे शाम स्कूल से लौटते समय लेनी है।
अध्यापक - अच्छा ठीक है, जाओ जाकर अपनी बैंच पर बैठ जाओ, आइंदा ध्यान रखना।
विद्यार्थी - जी सर, मैं हमेशा समय पर स्कूल आता हूँ, आज पिताजी की बीमारी के कारण ही देर हो गयी।
अध्यापक - मुझे पता है इसीलिये मैंने तुम्हें कोई सजा नहीं दी।
विद्यार्थी - धन्यवाद सर। ☐

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के लेखक हैं-
(a) मनोहर वर्मा (b) मनोहर श्याम जोशी
(c) श्याम मनोहर जोशी (d) फणीश्वर नाथ रेणु

(2) यशोधर बाबू अपना आदर्श मानते थे-
(a) अपने साले को (b) अपनी पत्नी को
(c) भूषण को (d) किशनदा को

(3) यशोधर बाबू मूलतः रहने वाले थे-
(a) दिल्ली के (b) आगरा के
(c) कुमाऊं (d) जबलपुर के

(4) यशोधर बाबू सर्वप्रथम किस पद पर नियुक्त हुए?
(a) बॉय सर्विस (b) क्लर्क
(c) सहायक क्लर्क (d) सेक्शन ऑफिसर

(5) यशोधर का पूरा नाम है-
(a) यशोधर बाबू (b) ए.डी. पंत
(c) वाई.डी.पंत (d) ओ.डी.पंत

(6) लेखक ने यशोधर बाबू को किशन दा का कौन-सा पुत्र कहा है?
(a) मानस पुत्र (b) दत्तक पुत्र
(c) नाजायज पुत्र (d) पुत्र

(7) यशोधर बाबू किस तरह के जीवन के पक्षधर थे?
(a) बनावटी (b) धार्मिक
(c) मौज मस्ती (d) सादगीपूर्ण

(8) यशोधर बाबू के विवाह की वर्षगांठ थी-
(a) 20वीं (b) 25वीं
(c) 30वीं (d) 40वीं

(9) यशोधर बाबू अपनी पत्नी तथा बच्चों से चाहते थे-
(a) पैसा (b) सम्मान
(c) परंपराओं का पालन (d) मुक्ति

(10) मराठी भाषा में लिखी 'जूझ' कहानी का हिंदी अनुवाद किया-
(a) श्याम मनोहर जोशी ने (b) औम थानवी ने
(c) केशव प्रथम वीर ने (d) ऐन फ्रैंक ने

(11) आनंद के मराठी अध्यापक का नाम था-
(a) रणनवरे (b) वामन पंडित
(c) न.व. सौंदलगेकर (d) दत्ताजी राव

@MP_BOARD_25(Telegram)

(12) कहानी का शीर्षक 'जूझ' का अर्थ है–
(a) संघर्ष (b) चालाकी
(c) मेहनत (d) कठिनाई

(13) 'जूझ' रचना किस भाषा में लिखी गई है?
(a) मराठी (b) गुजराती
(c) ब्रज (d) अवधी

(14) लेखक पढ़ना क्यों चाहता है?
(a) ज्ञान के लिए (b) नौकरी के लिए
(c) विद्वान बनने के लिए (d) कवि बनने के लिए

(15) 'जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ?
(a) पढ़ने की प्रवृत्ति का
(b) कविता करने की प्रवृति का
(c) लेखन प्रवृत्ति का (d) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

(16) 'अतीत में दबे पांव' पाठ के आधार पर कोठार किसके काम आता होगा?
(a) सुरक्षा के लिए (b) धन जमा करने के लिए
(c) अनाज जमा करने के लिए (d) पानी जमा करने के लिए

(17) मुअनजो-दड़ो हड़प्पा से प्राप्त नर्तकी की मूर्ति किस संग्रहालय में रखी गई है?
(a) इस्तामाबाद संग्रहालय में (b) लाहौर संग्रहालय में
(c) दिल्ली संग्रहालय में (d) लंदन संग्रहालय में

(18) मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक ओम थानवी को याद आई–
(a) कुलधरा गाँव की (b) नागौर गाँव की
(c) भीनासार गाँव की (d) धौलपुर गाँव की

(19) सिंधु सभ्यता की क्या विशेषता है–
(a) सौंदर्य बोध (b) संस्कृति बोध
(c) सभ्यता बोध (d) नगर बोध

(20) मुअनजो-दड़ो अपने समय में किसका केन्द्र रहा होगा?
(a) सभ्यता का (b) राजनीति का
(c) व्यापार का (d) धर्म का

(21) सिंधु सभ्यता के सौंदर्य बोध को क्या नाम दिया है–
(a) राज पोषित (b) समाज पोषित
(c) धर्म पोषित (d) व्यापार पोषित

(22) सिंधु सभ्यता में कपास उगाए जाते थे। इसका क्या प्रमाण है–
(a) कपास के बीज (b) ऊन
(c) सूती कपड़ा (d) गर्म कपड़ा

(23) लेखक के अनुसार मुअनजो-दड़ो का नगर कितने हजार साल पूर्व का है–
(a) 1000 साल (b) 2000 साल
(c) 3000 साल (d) 5000 साल

(24) रखलदास बनर्जी मुअनजो-दड़ो पर किस आए थे?
(a) सन् 1922 में (b) सन् 1923 में
(c) सन् 1924 में (d) सन् 1925 में

उत्तर– (1) (b) (2) (d) (3) (c) (4) (b) (5) (c) (6) (7) (d) (8) (b) (9) (c) (10) (c) (11) (c) (12) (a) (13) (14) (b) (15) (d) (16) (a) (17) (c) (18) (a) (19) (20) (a) (21) (b) (22) (c) (23) (d) (24) (a)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) आप लोगों की देखा-देखी सेक्शन की घड़ी भी ..... हो गई। (सुस्त/गतिशील)

(2) 'सिल्वर वैडिंग' के कथानायक ..... को अपना आद मानते थे। (किशन दा/गिरीश)

(3) मनोहर श्याम जोशी का जन्म ..... में हुआ। (9 अगस सन् 1933 को राजस्थान के अजमेर/15 अगस्त, सन् 19 को राजस्थान के अजमेर)

(4) किशन दा ने यशोधर बाबू को ..... उधार भी दिए। रुपए/पचास रुपए)

(5) 'सिल्वर वैडिंग' में भूषण ने अपने पिता को उपहा ..... दिया। (ऊनी ड्रेसिंग गाउन/ऊनी स्वेटर)

(6) 'सिल्वर बैडिंग' कहानी में प्रमुख पात्र यशोधर (वाई.डी.पंत) की शादी के ..... का वर्णन है। (पच्चीस सालगिरह/पैंतालीसवीं सालगिरह)

(7) यशोधर बाबू ने दफ्तर से लौटते हुए रोज ..... जाने रीति अपनाई। (बिड़ला मंदिर/सांई मंदिर)

(8) यशोधर बाबू मूल रूप से ..... के रहने वाले (गोरखपुर/कुमाऊं)

(9) दिनमान साप्ताहिक हिंदुस्तान पत्रिका के संपादक जोशी का निधन ..... को हृदय गति रुक जाने से हुआ। (3 मार्च, सन् 2006/15 मार्च, सन् 2008)

(10) यशोधर बाबू का तीसरा बेटा स्कॉलरशिप ले ..... चला गया। (अमेरिका/इंग्ल

(11) लेखक आनंद यादव की माँ धूप में ..... थाप रही थ (कंडे/ई

(12) सौंदलगेकर ..... भाषा के शिक्षक थे। (अंग्रेजी/मरा

(13) आनंद यादव का पूरा नाम ..... था। (आनंद रतन यादव/अजय रघु याद

(14) 'जूझ कहानी' लड़ते-जूझते किसान मजदूरों के ..... की झांकी है। (संघर्ष/मित

(15) 'जूझ' कहानी में लेखक के घर कोल्हू ..... के बाद शुरू होता था। (दशहरे/दीवाली)

(16) देसाई के बाड़े का बुलावा दादा के लिए ..... की बात थी। (सम्मान/अपमान)

(17) 'जूझ' कहानी में लेखक अध्यापक ..... की प्रेरणा से कवि बन गए। (सौंदलगेकर/आनंद कुमार यादव)

(18) 'जूझ' ..... गद्य की विधा के अंतर्गत आती है। (कहानी/जीवनी)

(19) मंत्री मास्टर ..... पढ़ाते थे। (गणित/मराठी)

(20) शर्त के अनुसार पाठशाला जाने से पहले आनंदा को सवेरे ..... तक खेत में काम करना होता था। (11 बजे/12 बजे)

(21) कहानी 'जूझ' एक ..... की झांकी है। (एक ग्रामीण किसान की शिक्षा प्राप्ति के लिए लालायित पुत्र के संघर्ष/एक शिक्षक के शिक्षा प्राप्ति के लिए लालायित पुत्र के संघर्ष)

(22) आनंदा के कक्षा अध्यापक का नाम ..... था। (मंत्री/वी. पंत)

(23) मुअनजो-दड़ो में पच्चीस फूट ऊंचे चबूतरे पर ..... (एक बौद्ध स्तूप/एक मंदिर)

(24) मुअनजो-दड़ो में लगभग ..... कुएँ थे। (सात सौ/सात हजार)

(25) ओम थानवी ने राजस्थान के जयपुर से निकलने वाले पत्रिका समूह के साप्ताहिक पत्र ..... से अपने पत्रकार जीवन की शुरुआत की। (इतवारी/मंगलवारी)

(26) मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना ..... नगर के साथ की गई है। (चंडीगढ़/बीकानेर)

उत्तर– (1) सुस्त (2) किशनदा (3) 9 अगस्त 1935 (4) पचास रुपये (5) ऊनी ड्रेसिंग गाउन (6) पच्चीसवीं सालगिरह (7) बिड़ला मंदिर (8) कुमाऊं (9) 30 मार्च 2006 (10) अमेरिका (11) कंडे (12) मराठी (13) आनंद रतन यादव (14) संघर्ष (15) दीवाली (16) सम्मान (17) सौंदलगेकर (18) कहानी (19) गणित (20) 11 बजे (21) एक ग्रामीण किसान की शिक्षा प्राप्ति के लिए लालायित पुत्र के संघर्ष (22) मंत्री (23) एक बौद्ध स्तूप (24) सात सौ (25) इतवारी (26) चंडीगढ़।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए–

(1) 'अ'	'ब'
(1) आनंद यादव	(a) बड़ा बौद्ध स्तूप
(2) किशनदा	(b) जूझ
(3) मंत्री नामक मास्टर	(c) कुंवारे
(4) सबसे ऊंचा चबूतरा	(d) कक्षा अध्यापक

उत्तर– (1) (b) (2) (c) (3) (d) (4) (a).

(2) 'अ'	'ब'
(1) सिल्वर वैडिंग	(a) मराठी साहित्यकार
(2) जूझ	(b) यात्रा वृत्तांत
(3) अतीत में दबे पांव	(c) लंबी कहानी
(4) डॉ. आनंद यादव	(d) उपन्यास के अंश

उत्तर– (1) (c) (2) (d) (3) (b) (4) (a).

(3) 'अ'	'ब'
(1) मनोहर श्याम जोशी	(a) बैठने लगा
(2) पुरानी दीवार घड़ी	(b) और हड़प्पा
(3) पांचवी में	(c) सिल्वर वैडिंग
(4) मुअनजो-दड़ो	(d) 5 बजकर पच्चीस मिनट

उत्तर– (1) (c) (2) (d) (3) (a) (4) (b)

(4) 'अ'	'ब'
(1) ओम थानवी	(a) शरीर से दुबला-पतला
(2) मिलकर लाओ	(b) खेतिहर और पशुपालक
(3) वसंत पाटिल	(c) पकाओ-खाओ
(4) सिंधु घाटी सभ्यता	(d) अतीत में दबे पांव

उत्तर– (1) (d) (2) (c) (3) (a) (4) (b).

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) किशनदा का वास्तविक नाम क्या था?
(2) यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा किस स्कूल से पास की थी?
(3) रोजी-रोटी की तलाश में आए यशोधर पंत को किसने शरण दी।
(4) यशोधर बाबू अपनी पत्नी तथा बच्चों से क्या चाहते थे?
(5) किशनदा यशोधर को क्या कहकर बुलाते थे?
(6) 'जूझ' उपन्यास के हिन्दी अनुवादक का नाम लिखिए।
(7) आनंद यादव का मन किस बात के लिए तड़पता था?
(8) लेखक आनंद यादव और उसकी मां किसके पास गए?
(9) पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?
(10) मंत्री मास्टर लेखक को क्या कहकर पुकारने लगे?
(11) 'जूझ' कहानी मुख्यत: लेखक की किस प्रवृत्ति को उजागर करती है?
(12) ईख से गुड़ ज्यादा निकले इसलिए गांव के अन्य किसान क्या करते थे?
(13) कागज और पेंसिल न होने पर लेखक कविता कैसे लिखते थे?
(14) सिंधु सभ्यता की ईंटों की बनावट का अनुपात क्या था?
(15) सिंधु सभ्यता की खुदाई से प्राप्त गेहूं का रंग कैसा है?
(16) सिंधु सभ्यता की खुदाई में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति अब किस संग्रहालय में है?

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(17) मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर से की गई है?
(18) सिंधु घाटी की सभ्यता में कौन से फल उगाए जाते थे?
(19) मुअनजो-दड़ो नगर कितने हजार साल पुराना है?
(20) मुअनजो-दड़ो से प्राप्त महाकुंड की लंबाई, चौड़ाई व गहराई कितनी है?
(21) मुअनजो-दड़ो की गलियाँ तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?
(22) अजायबघर में तैनात व्यक्ति का क्या नाम था?

उत्तर- (1) कृष्णानंद पांडे (2) यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा रैमजे स्कूल (3) रोजी-रोटी की तलाश में आये यशोधर पंत को किशन दा ने शरण दी (4) यशोधर बाबू अपनी पत्नी तथा बच्चों से अपनापन चाहते थे, झूठा दिखावा छोड़कर भारतीय रीति रिवाज मानना चाहते थे। (5) किशनदा यशोधर को भाऊजी कहकर बुलाते थे (6) जूझ उपन्यास के हिंदी अनुवादक का नाम आनंद यादव है (7) आनंद यादव का मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था (8) लेखक आनंद यादव और उसकी माँ दत्ताजी राव देसाई के पास गए (9) पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले अपने माँ से कही (10) मंत्री मास्टर लेखक को आनंदा कहकर पुकाने लगे (11) जूझ कहानी लेखक की संघर्षमयी प्रवृत्ति को उजागर करती है। (12) ईख से गुड़ ज्यादा निकले इसलिए गाँव के अन्य किसान ईख को खेतों में ज्यादा दिन रहने देते हैं (13) कागज और पैंसिल न होने पर लेखक लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर लिखते थे (14) सिंधु सभ्यता की ईंटों की बनावट का अनुपात 4:2:1 था (15) सिंधु सभ्यता की खुदाई से प्राप्त गेहूँ का रंग काला था (16) सिंधु सभ्यता की खुदाई में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति अब दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में है (17) मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना चंडीगढ़ नगर से की गई है (18) सिंधु घाटी की सभ्यता में अंगूर फल उगाए जाते थे (19) मुअनजो-दड़ो नगर 4 हजार साल पुराना है (20) मुअनजो-दड़ो से प्राप्त महाकुंड की लम्बाई 11.88 चौड़ाई व गहराई 243 है (21) मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को राजस्थान का ख्याल आया (22) अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम अली नवाज था।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) यह घड़ी मुझे शादी में मिली थी। हम पुरानी चाल के हमारी घड़ी पुरानी चाल की। अरे यही बहुत है कि अब तक राइट टाइम चल रही।
(2) लेखक मनोहर जोशी ने यशोधर बाबू को किशनदा का मानव पुत्र कहा है।
(3) सिल्वर वैडिंग' यह उत्सव विवाह के 25 वर्ष होने पर मनाया जाता है।
(4) यशोधर बाबू को बेटे भूषण की 'शब्जी लेने जाव वाली बात चुभ गई।
(5) यशोधर बाबू की शादी 6 फरवरी 1957 को हुई थी।
(6) यशोधर बाबू की पत्नी अक्सर बच्चों का ही साथ देत
(7) यशोधर बाबू गोल मार्केट से सेकेट्रिएट तक स्कूटर से जाते थे।
(8) श्री मनोहर श्याम जोशी को साहित्य अकादमी पुरस्क सम्मानित किया गया है।
(9) यशोधर बाबू जीवन में मौज-मस्ती के पक्षधर थे।
(10) यशोधर बाबू ने पाजामा कुर्ते पर ऊनी ड्रेसिंग पहना।
(11) मनोहर श्याम जोशी ने हम लोग, बुनियाद, मुंगेरीला हसीन सपने, हमराही एवं जमीन-आसमान जैसे धारावा लिखे।
(12) 'जूझ' कहानी गोदान उपन्यास का अंश है।
(13) मंत्री नामक मास्टर प्राय: छड़ी का प्रयोग नहीं करते
(14) लेखक आनंद यादव ने कक्षा पांचवी में दाखिला लि
(15) सौंदलगेकर मास्टर कविता बहुत ही अच्छे ढ पढ़ाते थे।
(16) लेखक ने पढ़ाई के लिए सबसे पहले अपनी म बात की।
(17) कविताओं के साथ खेलते हुए लेखक आनंद को दो शक्तियाँ प्राप्त हुई।
(18) लेखक के पिता का नाम रत्नाप्पा था।
(19) कवि भी अपने जैसा ही एक हाड़-माँस, क्रोध-लोभ एक मनुष्य ही होता है।
(20) मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर ले को राजस्थान का ख्याल आया।
(21) सिंधु घाटी की सभ्यता मुख्यत: खेतिहर और पशुप सभ्यता थी।
(22) सिंधु घाटी सभ्यता में संतरे और अमरूद फल ज जाते थे।
(23) सिंधु घाटी सभ्यता में पत्थर और तांबे का प्रयोग होता था।
(24) मिस्र और सुमेर में चकमक और लकड़ी के उप इस्तेमाल होते थे।
(25) मुअनजो-दड़ो में सूत की कताई-बुनाई के साथ रंगा कार्य भी होता था।
(26) सिंधु सभ्यता में मुख्य सड़क के दोनों ओर खुली नालियां समानांतर दिखाई देती हैं।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) असत्य (10) सत्य (11) स

(12) असत्य (13) सत्य (14) सत्य (15) सत्य (16) सत्य (17) सत्य (18) असत्य (19) सत्य (20) सत्य (21) सत्य (22) असत्य (23) असत्य (24) सत्य (25) सत्य (26) सत्य।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सिल्वर वैडिंग का आयोजन क्यों हुआ था?

उत्तर- 6 फरवरी सन् 1947 को यशोधर बाबू की शादी हुई थी। यशोधर बाबू की शादी के 25 वर्ष पूरे होने की खुशी में सिल्वर वैडिंग का आयोजन किया गया था।

प्रश्न 2. सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है?

उत्तर- यशोधर बाबूकी कहानी को दिशा देने में किशन दा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मेरे जीवन पर मेरे बड़े भाई साहब का प्रभाव है। वे बड़े शिक्षाविद् हैं। उन्होंने हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। उन्हें कई विषयों को गहन ज्ञान है। परिवार वाले उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे, परंतु उन्होंने साफ मना कर दिया तथा शिक्षक बनना स्वीकार किया। आज वे विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर हैं। उनके विचार व कार्यशैली ने मुझे प्रभावित किया। मैंने निर्णय किया कि मुझे भी उनकी तरह मेहनत करके आगे बढ़ना है। मैंने पढ़ाई में मेहनत की तथा अच्छे अंक प्राप्त किए। मैंने स्कूल की सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेना शुरू कर दिया। कई प्रतियोगिताओं में मुझे इनाम भी मिले। मेरे अध्यापक प्रसन्न है। मैं बड़े भाई की सरलता व सादगी से बहुत प्रभावित हूँ।

प्रश्न 3. जब सब्जी लेकर यशोधर बाबू घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी?

उत्तर- सब्जी लेकर यशोधर अपने घर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था- बाई.डी.पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ, घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर, मोटर-साइकिलें थीं तथा लोग विदा ले दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थी। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

प्रश्न 4. यशोधर बाबू किससे जुड़े थे और क्यों?

उत्तर- यशोधर बाबू बचपन में ही माता-पिता के देहांत हो जाने की वजह से जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। वे सदैव पुराने लोगों के बीच रहे, पले, बढ़े, अत: वे उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित थे और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध थे।

प्रश्न 5. यशोधर बाबू की पत्नी अपने बच्चों का साथ क्यों देती है?

उत्तर- यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित थे और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध हैं। जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित थी, वे बेटे के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती है और बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती थी।

प्रश्न 6. अपने आसपास के सुविधाजनक और आधुनिक साधनों के बारे में लिखिए, इन साधनों को बुजुर्ग क्यों पसंद नहीं करते हैं?

उत्तर- परिवर्तन प्रकृति का नियम है। बदलना ही समय की पहचान है। आज घर का परिवेश बिल्कुल बदल चुका है। एकल परिवार प्रणाली प्रचलन में आ चुकी है। यद्यपि यह सुविधाजनक है, किंतु इसके बुरे परिणाम भी सामने आ रहे हैं। लोगों में असुरक्षा की भावना बढ़ी है। विद्यालय आज आधुनिक रूप धारण कर चुके हैं, लेकिन यह स्वरूप बुजुर्गों को बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रहा। कारण स्पष्ट है कि आधुनिकता के नाम पर इन विद्यालयों में पाश्चात्य संस्कृति का खुलकर समर्थन किया जा रहा है। शिक्षा और परिवार में परिवर्तन के नाम पर संस्कृति का परित्याग होता जा रहा है।

प्रश्न 7. यशोधर बाबू ने किशनदा से जिन जीवन मूल्यों को पाया था, वह आपके लिए भी कैसे उपयोगी हो सकते हैं?

उत्तर- यशोधर बाबू ने किशनदा से अनेक जीवन मूल्यों को पाया था। वह किशनदा के व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित थे ओर उन्होंने किशनदा के कई गुणों को अपनाया। जैसे ऑफिस में काम काज मन लगाकर करना, अपने सहयोगियों के साथ प्रेम व आत्मीयता के संबंध कायम रखना, सुबह-सुबह टहलने की आदत डालना, पहनने-ओढ़ने का शालीन तरीका अपनाना, किराए के मकान में रहना और रिटायर हो जाने पर गाँव वापस चले जाना। आदर्शता की बातों को दोहराना और उन पर कायम रहना, हमेशा मुस्कुराना आदि जैसे जीवन मूल्यों को उन्होंने किशनदा से सीखा और उन्हें अपने जीवन में उतारा। हम भी ऐसे जीवन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे, क्योंकि यह सारे जीवन मूल्य सर्वोत्तम सद्गुण हैं और सद्गुणों से परिपूर्ण जीवन ही सार्थक और श्रेष्ठ जीवन है।

प्रश्न 8. यशोधर बाबू के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- यशोधर बाबू 'सिल्वर वैडिंग' नामक कहानी के मुख्य पात्र व कहानी के नायक हैं। कहानी में लेखक ने यशोधर पंत के पूरे जीवन पर प्रकाश डाला है।

@IP_BOARD_25 (Telegram)

1. यशोधर बाबू का बालपन– बचपन में यशोधर बाबू के माता-पिता का देहान्त हो गया था, तब वे अपनी विधवा बुआ के पास रहने लगे। उन्होंने अल्मोड़ा के रैमजे स्कूल से मैट्रिक पास किया। इस प्रकार उनका बाल्यकाल कठिनाइयों व अभावों में व्यतीत हुआ।

2. कुमाऊँ संस्कृति के पोषक– मैट्रिक पास कर जब वे दिल्ली आए तो उनका सम्पर्क कृष्णानंद पांडे से हुआ जिन्हें वे बड़े भाई के नाते किशनदा कहते थे। वे कट्टर कुमाऊँनी पंडित थे। इसलिए कुमाऊँ संस्कृति उनके रग-रग में समा गई थी, जिसको वे मृत्युपर्यन्त छोड़ नहीं सके।

3. किशनदा के पट्ट शिष्य– यशोधर बाबू जब दिल्ली आए, तो किशनदा के क्वार्टर में रहने लगे। धीरे-धीरे वे किशनदा के प्रिय बन गए। किशनदा ने उनकी नौकरी लगवाई। उनके रिटायर होने के बाद तथा उनकी मृत्यु के बाद भी वे उन्हीं के पद चिन्हों पर चलते रहे।

4. परम्परावादी– किशनदा की संगति ने यशोधर बाबू को परम्परावादी बना दिया। वे उन्हीं की भाँति पूजा-पाठ, भजन आदि करने लगे।

5. द्वन्द्वग्रस्त व्यक्तित्व– यशोधर बाबू प्राचीन और आधुनिक संस्कृति के द्वन्द्व से ग्रस्त व्यक्ति के रूप में उभरे हैं।

प्रश्न 9. फ्रिज के संबंध में यशोधर बाबू के क्या विचार हैं?

उत्तर- यशोधर बाबू का बड़ा बेटा भूषण उनके क्वार्टर को अपना घर बना लेता है, वह इस क्वार्टर में घर की सभी चीजें जैसे- फ्रिज आदि लेकर आता है। यशोधर बाबू को यह खुशी है कि आज उसके घर में सभी सुविधाएँ हैं परंतु भूषण का यह अत्यधिक खर्च उनको अच्छा नहीं लगता।

प्रश्न 10. सौंदलगेकर के अध्यापन की दो विशेषताएँ लिखिए, जिन्होंने लेखक के मन में कविता के प्रति रुचि जगाई।

उत्तर- सौंदलगेकर का अध्यापन- सौंदलगेकर एक योग्य अध्यापक थे। वे कक्षा में पढ़ाते समय कविता पाठ में रम जाते थे। वे गाकर कविता पाठ करते थे। उनका गला सुरीला था, उसमें छंद की बढ़िया चाल और उसके साथ ही रसिकता थी। वे पुरानी-नई मराठी कविताओं के साथ-साथ अंग्रेजी कविताएं भी सुनाते थे। उनमें श्रोता छात्रों को भाव-विभोर कर देने की अनुपम क्षमता थी।

सौंदलगेकर का काव्य विषयी ज्ञान- मास्टर सौंदलगेकर जब अभिनय करते हुए अपने मधुर कण्ठ से कविता पाठ करते थे, तब छात्र मंत्रमुग्ध से हो जाते थे। उन्हें छन्दों की लय, गति, ताल की अच्छी समझ थी। वे बीच-बीच में अन्य कवियों की रचनाएँ तथा उनके साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण भी सुनाते थे।

प्रश्न 11. कविता लिखने के बाद लेखक किसे अ... कविता सुनाते थे?

उत्तर- कविता लिखने के बाद लेखक किशनदा को अ... कविता सुनाते थे।

प्रश्न 12. 'जूझ' कहानी के प्रमुख पात्र की दो विशे... लिखिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी के प्रमुख पात्र आनंदा के स्वभाव... दो विशेषताएँ -

(1) उसे अब अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती थी। वह अ... आप से खेलना सीख गया था। पहले से उलट वह अकेला ह... अच्छा मानने लगा था। अकेले रहने से उसे ऊँची आवाज... कविता गाने, अभिनय करने या नाचने की स्वतंत्रता का अनु... होता था जो उसे असीम आनंद से भर देते थे।

(2) उसे ऐसा लगता था कि कोई-न-कोई हमेशा साथ में ... चाहिए।उसे किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते ... हँसी-मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था। कि... के प्रति लगाव के बाद उसे अकेलेपन से ऊब नहीं होती। ... वह स्वयं से ही खेलना सीख गया।

प्रश्न 13. 'जूझ' कहानी के लेखक के जीवन संघर्ष के ... बिंदुओं पर प्रकाश डालिए जो आपके लिए प्रेरणादायी ...

उत्तर- 1. खेती के काम में जूझ– लेखक अभी बच्चा ही ... लेकिन उसे खेत में पानी डालना, फसल काटना, पशुओं ... चराना आदि सभी काम करने पड़ते थे। इस कारण वह पाँच ... में फेलहो गया था। उसका स्कूल जाना बन्द कर दिया गया ... अब तो वह दिन-रात खेती के काम की चक्की में पिसता रह... था। पढ़ाई जारी रखने के लिए जूझ- लेखक पढ़ना चाहता ... लेकिन उसके पिता उसको पढ़ाना नहीं चाहते थे। अपनी पढ़... को दुबारा शुरू करने के लिए उसको काफ़ी जूझना पड़... अपनी माँ और दत्ता जी राव के समर्थन से उसे पुनः पढ़ने ... अवसर मिला।

2. स्कूल में बच्चों से जूझ– जब वह स्कूल गया, तो ब... उसका मजाक उड़ाते थे। उन परिस्थितियों का भी उसने भ... भाँति सामना किया।

3. पढ़ाई में जूझ– स्कूल में पढ़ाई करते समय उसको क... जूझना पड़ता था। वह सुबह से ग्यारह बजे तक खेती का ... करता था। शाम को छुट्टी के बाद भी उसको खेती में ... पड़ता था।

प्रश्न 14. 'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालि...

उत्तर- शीर्षक का तात्पर्य– 'जूझ' का अर्थ होता है जु... लड़ाई। जब व्यक्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या समस्या... जूझता है तो उस समस्या व परिस्थिति से उसकी एक प्रका...

...ड़ाई होती है, जिसे 'जूझ' कहते हैं। मानव अपने जीवन में ...दैव परिस्थितियों व समस्याओं से जूझता रहता है।

...र्षक का औचित्य– लेखक ने अपनी आत्मकथा का ...र्षक 'जूझ' उचित ही रखा है। लेखक बचपन से ही पग-पग ...र समस्याओं से जूझता रहा। उसे बचपन में खेती-बाड़ी का ...ठोर काम करना पड़ा। इस कारण उसको पढ़ाई से वंचित ...होना पड़ा। लेखक कहता है, "खेती के काम की चक्की की ...पेक्षा मास्टर की छड़ी की मार अच्छी लगती थी। लेखक को ...पुनः स्कूल जाने पर वहाँ भी परिस्थितियों से जूझना पड़ा। इस ...प्रकार यह शीर्षक कथा नायक की जूझने की क्षमता को उजागर ...करता है।

...प्रश्न 15. क्या आपने कभी कविताएँ लिखी हैं? यदि हाँ तो ...इसकी प्रेरणा आपको किससे मिली?

...उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

...प्रश्न 16. 'जूझ' कहानी के आधार पर आपको कौन- ...कौन से जीवन मूल्य ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है।

...उत्तर- 'जूझ' में लेखक यह कहना चाहता है कि व्यक्ति को ...संघर्ष से नहीं घबराना चाहिए। समस्याएँ तो जीवन में आती ही ...रहती हैं। हमें इन समस्याओं से भागना नहीं चाहिए, बल्कि ...उनका मुकाबला करना चाहिए। संघर्षों से जूझने के लिए ...आत्मविश्वास स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर, सामाजिक स्तर ...र, विद्यालय के माहौल के स्तर पर, आर्थिक स्तर पर आदि ...इस तरह के कई स्तर पर उसका संघर्ष दिखाई देता है। स्पष्ट है ...कि यह शीर्षक कथानायक के पढ़ाई के प्रति जूझने की भावना ...को उजागर करता है।

प्रश्न 17. मुअनजोदड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश की याद आई और क्यों?

उत्तर- सड़कों और गलियों का विस्तार– मोहनजोदड़ो के ...पूरे शहर में सड़कों व गलियों का जाल बिछा हुआ है, जिन्हें ...आज भी भली-भाँति देखा जा सकता है। यहाँ की सारी सड़कें ...सीधी या आड़ी हैं। यहाँ के सड़क नियोजन से आजकल के ...वास्तुकारों ने भी प्रेरणा ली है। चण्डीगढ़, जयपुर, इस्लामाबाद ...के सैक्टर वहाँ से मिलते-जुलते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में सड़कों व ...गलियों की व्यवस्था आवश्यकता के अनुरूप की गई है।

सड़कों के प्रकार– यहाँ पर लम्बाई-चौड़ाई की दृष्टि से कई ...प्रकार की सड़कें हैं। बड़ी सड़कों की चौड़ाई तैंतीस फीट है, ...जिसमें दो बैलगाड़ी एक साथ आ-जा सकती हैं। ये बाजार व ...मुख्यत स्थानों को जोड़ती हैं। छोटी सड़कें अधिक हैं, जो ...बस्तियों में पहुँचती हैं। इनकी चौड़ाई क्षेत्र के अनुसार अलग-...अलग है। इनकी औसत चौड़ाई फीट है।

...सड़कों तथा गलियों में निर्मित घर-मोहनजोदड़ो की सड़कें व ...गलियाँ व्यवस्थित हैं, मुख्य सड़क की ओर घरों की पीठ है, बस्ती के अंदर छोटी सड़कें व गलियाँ निर्मित हैं। घरों के दरवाजे अन्दर गली की ओर खुलते हैं। सड़कों और गलियों के दोनों ओर ढकी हुयी नालियाँ हैं।

प्रश्न 18. यह कैसे कहा जा सकता है कि मुआनजोदड़ो शहर ताम्रकाल के शहरों में सबसे बड़ा और उत्कृष्ट था?

उत्तर- 'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ में लेखक ने वर्णन किया है कि सिन्धु सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजोदड़ो की नगर-योजना आज भी नगर-योजनाओं से इस प्रकार भिन्न थी कि यहाँ का नगर नियोजन बेमिसाल एवं अनूठा था। यहाँ की सड़कें चौड़ी और समकोण पर कटती हैं। कुछ ही सड़कें आड़ी-तिरछी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था भी उत्तम है। इसके अलावा इसकी अन्य विशेषताएँ थी।

(1) यहाँ सुनियोजित ढंग से नगर बसाए गए थे।
(2) नगर निवासी की व्यवस्था उत्तम एवं उत्कृष्ट थी।
(3) यहाँ की मुख्य सड़कें अधिक चौड़ी तथा गलियाँ संकरी थी।
(4) मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर नहीं खुलते थे।
(5) कृषि को व्यवसाय के रूप में लिया जाता था।
(6) हर जगह एक ही आकार की पक्की ईंटों का प्रयोग होता था।
(7) सड़क के दोनों ओर ढँकी हुई नालियाँ मिलती थीं।
(8) हर नगर में अन्न भंडारगृह और स्नानागार थे।
(9) यहाँ की मुख्य और चौड़ी सड़क के दोनों ओर घर है, जिनका पृष्ठभाग सड़क की ओर है।

इस प्रकार मोहनजोदड़ो की नगर योजना अपने-आप में अनूठी मिसाल थी।

प्रश्न 19. मुअनजोदड़ो की सभ्यता को 'लो प्रोफाइल' सभ्यता क्यों कहा गया है?

उत्तर- लेखक ने मुअनजोदड़ो की सभ्यता को 'लो प्रोफाइल' सभ्यता इसलिए कहा है कि संसार के अन्य स्थानों पर खुदाई करने के राजतंत्र को प्रदर्शित करने वाले महल, धर्म की ताकत दिखाने वाले पूजा स्थल, मूर्तियाँ तथा पिरामिड मिले हैं। मोहनजोदड़ो में ऐसी कोई चीज नहीं मिली है जो राजसत्ता धर्म के प्रभाव को दर्शाती है।

प्रश्न 20. पुरातत्ववेत्ताओं ने किस भवन को 'कॉलेज आफ प्रीस्ट्रस' कहा है?

उत्तर- माना जाता है कि भवन में बरामदों के साथ अनेक छोटे-छोटे कमरे होंगे। पुरातत्व शास्त्री मानते हैं कि धार्मिक अनुष्ठानों में ज्ञानशालाएँ साथ-साथ सटाकर बनाई जाती थी, इसलिए इसे कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स कहते हैं। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि यह राज्य सचिवालय, सभा भवन या कोई सामुदायिक केंद्र रहा होगा।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 21. क्या प्राचीन काल में रंगाई का कार्य होता था? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- प्राचीन काल में रंगाई का कार्य होता था इसका प्रमाण मोहनजोदड़ो सभ्यता के समय की खुदाई में यह बात। भी उजागर हुई कि यहाँ भी रबी की फसल बोते थे। सरसों, कपास, जौ की खेती के यहाँ खुदाई में पुख्ता सबूत मिले हैं। दुनिया में सूत के दो सबसे पुराने कपड़ों में से एक का नमूना यहाँ पर मिला था, खुदाई में यहाँ कपड़ों की रंगाई करने के लिए एक कारखाना भी पाया गया था। इससे यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन समय में भी रंगाई का कार्य होता था।

प्रश्न 22. किन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता में राजतंत्र नहीं था?

उत्तर- सिंधु सभ्यता व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी, इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का, इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा, लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।

प्रश्न 23. 'अतीत में दबे पांव' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर- 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता में लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में अतीत अर्थात् भूतकाल में बसे सुंदर सुनियोजित नगर में प्रवेश करके लेखक वहाँ की एक-एक चीज से अपना परिचय बढ़ाता है। ❑

इकाई-6 अभिव्यक्ति और माध्यम

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) टी.वी. पर प्रसारित खबरों में सबसे महत्वपूर्ण है-
(a) विजुअल (b) बाईट
(c) नेट (d) उपर्युक्त सभी

(2) रेडियो समाचार की भाषा ऐसी हो-
(a) जिसमें सामासिक और तत्सम शब्दों की बहुलता हो।
(b) जिसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो।
(c) जो समाचार वाचक आसानी से पढ़ सके
(d) जिसमें कठिन शब्द हों

(3) वर्तमान छापाखाना का आविष्कार हुआ-
(a) भारत (b) चीन
(c) जर्मनी (d) अमेरिका

(4) रेडियो माध्यम है-
(a) दृश्य (b) श्रव्य
(c) दृश्य और श्रव्य (d) इनमें से कोई नहीं

(5) भारत में पहला छापाखाना खुला-
(a) 1500 में (b) 1556 में
(c) 1580 में (d) 1599 में

(6) पत्रकार के प्रकार होते हैं-
(a) तीन (b) पांच
(c) सात (d) नौ

(7) इनमें से पत्रकार का प्रकार नहीं है-
(a) पूर्णकालिक (b) अंशकालिक
(c) फ्री लांसर (d) संवाददाता

(8) समाचार लेखन की शैली है-
(a) सीधी पिरामिड शैली (b) आढ़ी पिरामिड शैली
(c) तिरछी पिरामिड शैली (d) उल्टी पिरामिड शैली

(9) संवाददाताओं के बीच काम का विभा[जन] कहलाता है-
(a) लाईव (b) बाईट
(c) बीट (d) रिपोर्टिंग

(10) विशेष लेखन की सूचनाओं के निम्न में से हैं-
(a) साक्षात्कार (b) मंत्रालय के सूत्र
(c) प्रेस कांफ्रेंस (d) उपर्युक्त सभी

(11) रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव किन बा[तों] पर निर्भर करता है-
(a) कहानी घटना प्रधान न हो
(b) कहानी की अवधि ज्यादा न हो
(c) पात्रों की संख्या सीमित न हो
(d) उपर्युक्त सभी

(12) रेडियो नाटक में निम्न में से क्या अनिवार्य है?
(a) अभिनय (b) दृश्य
(c) संवाद (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (1) (d) (2) (b) (3) (b) (4) (b) (5) (b) (6) ((7) (d) (8) (d) (9) (c) (10) (a) (11) (b) (12) (c).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) भारत में पहला छापाखाना .... में खुला (मुंबई/गोव
(2) मुद्रण की शुरुआत .... में हुई। (चीन/जर्मन
(3) वर्तमान छापाखाना की शुरुआत .... में हुई। (गुटेनबर्ग/न्यूटन
(4) उल्टा पिरामिड शैली को .... हिस्सों में बाँटा जा[ता] है। (तीन/पां
(5) समाचार लेखन के .... प्रकार हैं। (छह/दस)
(6) समाचार लेखन .... पिरामिड शैली है। (उल्टा/सीधा)
(7) 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ .... को प्रतिबिंबित करता है। (जनमत/तानाशाही)
(8) एक सफल साक्षात्कारकर्ता में .... होना चाहिए। (पर्याप्त ज्ञान/सुंदरता)
(9) स्तंभ लेखन लेखन का प्रमुख रूप है। (विचारपरक/सकारात्मक)
(10) संपादकीय को .... की आवाज माना जाता है। (आम जनता/अखबार)
(11) .... कविता की अनजानी दुनियाँ का उपकरण है।
(12) कहानी का केन्द्रीय बिन्दु .... होता है।

उत्तर- (1) गोवा (2) चीन (3) गुटेनबर्ग (4) तीन (5) छह (6) उल्टा (7) जनमत (8) ज्ञान (9) सकारात्मक (10) जनता (11) छंद व मुक्त छंद (12) कथानक

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए-

'अ'	'ब'
(1) इंटरनेट की शुरूआत	(a) 1826
(2) भारत में इंटरनेट	(b) शब्दों का स्थायित्व
(3) पत्रकारिता का पहला दौर	(c) 1995
(4) मुद्रित माध्यम की विशेषता	(d) 1969
(5) विशेष रिपोर्ट का प्रकार	(e) इंडेक्स

उत्तर- (1) (d) (2) (c) (3) (a) (4) (b) (5) (e).

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये-

(1) रेडियो के समाचार की कौन-सी संरचना शैली होती है?
(2) एच टी एम एल का फुल फार्म क्या है?
(3) मुद्रित माध्यम की प्रमुख विशेषता क्या है?
(4) डेड लाइन किसे कहते हैं?
(5) उल्टा पिरामिड शैली के कौन-कौन से हिस्से हैं?
(6) लाइव क्या है?
(7) समाचार लेखन के कितने प्रकार हैं?
(8) पत्रकारों के तीन प्रकारों के नाम लिखिए।
(9) कौन-सा स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है?
(10) बीट क्या है? लिखिए।
(11) कविता के संबंध में 'प्ले विद द वर्ड' किसने कहा?
(12) कविता के लिए चित्रभाषा पर किसने जोर दिया?

उत्तर- (1) उल्टा पिरामिड शैली (2) Hyper Text Markup Language (3) छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है (4) समय सीमा के (5) इस शैली के तीन हिस्से हैं (6) किसी घटना का ज्यों का त्यों प्रत्यक्ष वर्णन लाइव कहलाता है (7) 6 प्रकार हैं (8) (1) पूर्ण कालिक (2) अंश कालिक (3) फ्रीलांसर (9) स्तंभ लेखन विचारपरक लेख का प्रमुख रूप है जनमत को प्रतिबिंबित करता है (10) कम्प्यूटरी तथा अंकीय संचार में प्रयुक्त सूचना की आधारभूत इकाई है (11) डब्ल्यू. एच. ऑर्डिन (12) राफेल

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) इंटरनेट अंतरक्रियात्मकता और सूचनाओं का विशाल भंडार है।
(2) भारत में छापाखाना की शुरुआत मिशनरियों की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए खोला गया।
(3) मुद्रित भाषा की विशेषता अलिखित भाषा का विस्तार है।
(4) मौखिक भाषा अनुशासन की मांग करती है।
(5) रेडियो मूलत: एकरेखीय माध्यम है।
(6) उल्टा पिरामिड शैली को तीन भागों में बाँटा गया है।
(7) रेडियो और टी.वी. की भाषा में कठिन शब्दों की बहुलता होती है।
(8) भारत में कम्प्यूटर शिक्षा बढ़ रही है।
(9) BBC, CNN और वाशिंगटन पोस्ट विश्व के प्रमुख शहरों के नाम हैं।
(10) पत्रकारों के पांच प्रकार होते हैं।
(11) पत्रकारीय लेखन की भाषा सरल होती है।
(12) समाचार लेखन के सात प्रकार होते हैं।
(13) नाटक की मूल विशेषता समय का बंधन है।
(14) नाटक के आंदोलनों के विकास में रेडियो नाटक की कोई भूमिका नहीं रही है।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) असत्य (5) सत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) असत्य (10) असत्य (11) सत्य (12) असत्य (13) असत्य (14) असत्य।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. समाचार के लेखन और प्रस्तुति में क्या अंतर है?

उत्तर- समाचारों की लेखन शैली, भाषा और प्रस्तुति में आपको कई अंतर देखने को मिलते हैं। सबसे सहज और आसानी से नजर आने वाला अंतर तो यही दिखाई देता है कि जहाँ अखबार पढ़ने के लिए है, वहीं रेडियो सुनने के लिए और टी.वी. देखने के लिए और टी.वी. देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 2. जनसंचार माध्यम की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- जनसंचार द्वारा समाज की बौद्धिक सम्पदा का हस्तांतरण संभव होता है। जनसंचार द्वारा विभिन्न विषयों पर आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराई जाती है, ताकि अनेक समस्याओं का हल तुरंत खोजा जा सके। जनसंचार द्वारा संदेश तीव्रगति से भेजा जाता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. जनसंचार माध्यम के प्रमुख दोष लिखिए।
उत्तर- जनसंचार के दोष निम्न हैं-
(1) मनुष्यों के साथ व्यक्तिगत संपर्क कम होता जाता है।
(2) इंटरनेट व टेलीविजन पर मनुष्यों का समय अधिक व्यतीत होता है।
(3) अन्य व्यक्ति के साथ गुणवत्ता बिताने के लिए बहुत कम समय है।

प्रश्न 4. जनसंचार माध्यम के प्रमुख प्रकार लिखिए।
उत्तर- जनसंचार माध्यम के प्रमुख रूप हैं- समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट। इन माध्यमों के जरिये जो भी सामग्री आज जनता तक पहुँच रही है। राष्ट्र के मानस का निर्माण करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी पत्र-पत्रिकाएँ या प्रिंट मीडिया ही है।

प्रश्न 5. प्रिंट माध्यम क्या है?
उत्तर- यदि किसी सूचना या संदेश को लिखित माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में प्रिंट मीडिया का बहुत ही बड़ा योगदान है। प्रिंट मीडिया के माध्यम समाचार पत्र और पत्रिकाएँ हैं। मैगजीन, जर्नल, दैनिक अखबार को प्रिंट माध्यम के अन्तर्गत रखा जाता है।

प्रश्न 6. प्रिंट माध्यम की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- मुद्रित माध्यमों के तहत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि हैं। मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता या शक्ति यह है कि छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। उसे आप आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। पढ़ते हुए उस पर सोच सकते हैं।

प्रश्न 7. प्रिंट माध्यम की प्रमुख सीमाएं लिखिए।
उत्तर- प्रिंट माध्यम की प्रमुख सीमाएँ निम्न हैं-
(1) भारत की संप्रभुत्ता, अखंडता, राज्यों की सुरक्षा और लोक कल्याण से संबंधित प्रेस अधिनियम।
(2) न्यायालय की अवमानना और मानहानि से संबंधित प्रेस को प्रभावित करने वाले अधिनियम।
(3) शिष्टाचार और सदाचार के हित में प्रेस को प्रभावित करने वाले अधिनियम।
(4) प्रेस सेवा संबंधी अधिनियम।
(5) प्रेस को संचालित करने वाले अधिनियम।
(6) प्रेस पर नियंत्रण रखने वाले अधिनियम।

प्रश्न 8. डेडलाइन किसे कहते हैं?
उत्तर- डेडलाइन का अर्थ होता है किसी रिपोर्ट को या कार्य को करने की अंतिम समय सीमा।

प्रश्न 9. रेडियो की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- रेडियो मनोरंजन का सबसे अच्छा माध्यम है। यह श्रोताओं को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करता है। इस पर संगीत का वैविध्यपूर्ण खजाना श्रोताओं के लिए उपलब्ध है। शास्त्रीय उपशास्त्रीय भक्ति लोक तथा फिल्म संगीत रेडियो पर उपलब्ध संगीत के लोकप्रिय प्रकार हैं।

प्रश्न 10. रेडियो के प्रमुख दोष अथवा सीमाएं लिखिए।
उत्तर- यदि रेडियो सिग्नल एक माध्यम में गुजरता है जो रेडियो सिग्नलों के लिए पूरी तरह से पारदर्शी नहीं है तो अवशोषण हानि होती है। इसकी तुलना पारदर्शी ग्लास से गुजरने वाले प्रकाश सिग्नल से की जा सकती है। विवर्तन पथ में कोई वस्तु दिखाई देने पर विकर्षण नुकसान होता है।

प्रश्न 11. उल्टा पिरामिड शैली क्या है?
उत्तर- उल्टा पिरामिड शैली से हमारा तात्पर्य समाचार लेखन से है। समाचार को पढ़ते समय आपने महसूस किया होगा समाचार के आरंभ में ही उस विषय की पूरी जानकारी दे दी जाती है। फिर घटते क्रम में धीरे-धीरे उन खबरों को आगे बढ़ाते हुए अंत किया जाता है। यह समाचार का सबसे महत्वपूर्ण भाग है जिसके अंतर्गत समाचार का सम्पूर्ण सार नहीं होता।

प्रश्न 12. रेडियो के समाचार लेखन की बुनियादी बातें लिखिए।
उत्तर- समाचार वाचन के लिए तैयार की गई कापी साफ-सुथरी और टाइप्ड कॉपी हो। कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए अंकों को लिखने में सावधानी रखनी चाहिए।

प्रश्न 13. टेलीविजन की खबरों के विभिन्न चरणों के नाम लिखिए।
उत्तर- फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, डाई एंकर, फोन-इन, एंकर विजुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर पैकेज।

प्रश्न 14. फ्लेश या ब्रेकिंग न्यूज क्या है?
उत्तर- फ्लेश ब्रेकिंग न्यूज आपको ताजा समाचार जो अभी-अभी घटना होती है, उसे ताजा समाचार बनाकर उसे फ्लेश ब्रेकिंग न्यूज कहा जाता है।

प्रश्न 15. एंकर बाईट क्या है? लिखिए।
उत्तर- किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के विषय में प्रत्यदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाकर और सुनाकर खबर को प्रमाणिकता प्रदान की जाती है, इसे ही पत्रकारिता के क्षेत्र में एंकर बाइट कहते हैं।

प्रश्न 16. लाइव के बारे में लिखिए।
उत्तर- लाइव टेलीविजन वास्तविक समय में प्रसारित होने वाला एक टेलीविजन प्रोडक्शन है, जैसा कि वर्तमान में होता है। एक माध्यमिक अर्थ है, यह इंटरनेट पर टेलीविजन स्ट्रीमिंग का उल्लेख कर सकता है, जब सामग्री या प्रोग्रामिंग लगातार चलाई जाती है।

प्रश्न 17. रेडियो और टीवी की भाषा में कौन सी सावधानी रखनी चाहिए।
उत्तर- निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।
(1) क्या, क्यों, अर्थात् लेकिन आदि शब्दों का प्रयोग करके अनावश्यक विस्तार नहीं देना चाहिए।
(2) अधिक लम्बे तथा घुमावदार वाक्यों से बचना चाहिए।
(3) कर्मवाच्य की अपेक्षा कृत्तवाच्य का प्रयोग करना चाहिए।
(4) संस्कृतनिष्ठ शब्दों के स्थान पर बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न 18. इंटरनेट की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- इसकी पहली विशेषता यह है कि सभी को एक साथ जोड़ना इंटरनेट के माध्यम से आज एक व्यक्ति किसी भी स्थान से किसी अन्य व्यक्ति से जुड़ सकता है। वो अपनी बात या संदेश प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप में कर सकता है या पहुँच सकता है। आज के समय इंटरनेट के माध्यम से कोई भी व्यक्ति या संगठन किसी भी स्थान से किसी अन्य व्यक्ति से जुड़ सकता है।

प्रश्न 19. इंटरनेट की प्रमुख सीमाएं अथवा दोष लिखिए।
उत्तर- इंटरनेट के प्रमुख दोष हैं-
1. समय की बर्बादी- जो लोग इंटरनेट को अपने ऑफिस के काम के लिए और जानकारी लेने के लिए उपयोग करते हैं उनका समय भी बर्बाद होता है। इसका उपयोग समय के अनुसार करना चाहिए।
2. इंटरनेट फ्री नहीं होता- इंटरनेट का कनेक्शन तभी हमें लेना चाहिए जब हमें इसकी जरूरत हो, क्योंकि लगभग सभी इंटरनेट प्रदान करने वाली कंपनियाँ इंटरनेट का भारी चार्ज लेते हैं।
3. इंटरनेट की लत और स्वास्थ्य प्रभाव- दुनिया में वह शराब की लत हो या किसी और चीज की शरीर के लिए ठीक नहीं है। कई ऐसे लोग होते हैं जो इंटरनेट के बिना न खाते हैं और ना पीते हैं। एक जगह बैठने के कारण वजन बढ़ना, पैरों और हाथों में दर्द आदि बीमारी भी हो रही है।
4. ई-मेल की चोरी- इंटरनेट से लोगों की निजी जानकारी और ई-मेल आदि को चुरा लिया जाता है।
5. पहचान की चोरी, धोखाधड़ी- आप जिस भी वेबसाइट पर अपना अकाउंट रजिस्टर करते हैं उनमें से लगभग 50-60% कंपनियाँ आपके निजी जानकारियों को बेचती है या उनका दुरुपयोग करती है।

प्रश्न 20. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?
उत्तर- इंटरनेट पत्रकारिता ऑनलाइन लेखन प्रक्रिया है। जिसमें पत्रकार अपने लेख को इंटरनेट के माध्यम से लोगों तक पहुँचाता है। जब हम किसी न्यूज या लेखन सामग्री को आनलाइन, इंटरनेट के जरिए लोगों तक पहुँचाते हैं, उसका आदान प्रदान करते हैं तो इसे ही इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं।

प्रश्न 21. एक अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य कौन-कौन सी बातें हैं?
उत्तर- किसी आलेख को लिखते समय उप-शीर्षक देना पाठक के लिए काफी मददगार होता है। एक आलेख को कम से कम तीन बार पढ़ना चाहिए, ताकि उसका अर्थ अच्छे से स्पष्ट हो। किसी टॉपिक पर खुद लिखने से पहले हमें मुख्य बिन्दुओं को नोट कर लेना चाहिए यानि हम जो बात लेख के माध्यम से कहना या बताना चाहते हैं उसका संदर्भ नोट करें। उसके बाद एक क्रम से आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 22. पत्रकारीय लेखन क्या है?
उत्तर- समाचार माध्यमों से काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

प्रश्न 23. पत्रकारीय लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए?
उत्तर- पत्रकारीय की भाषा को सीधा, सरल, सहज होना चाहिए ये ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसका मूल उद्देश्य भाषा ज्ञान का प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक खबर को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना है। पत्रकारीय की अच्छी भाषा वही है, जिसमें बात साफ, सरल और सहज तरीके से लोगों तक पहुँच सके।

प्रश्न 24. समाचार लेखन के छह प्रकार कौन-कौन से हैं?
उत्तर- (1) क्या (घटना या स्थिति)
(2) कब (समय)
(3) कहाँ (स्थान)
(4) क्यों (कारण)
(5) कौन (घटना का कारक/करने वाला)
(6) कैसे (विवरण)

प्रश्न 25. फीचर कैसे लिखें?
उत्तर- एक उत्तम फीचर उसे ही माना जाता है जो उचित विषय पर आधारित हो, आकर्षक रूप में तथ्यों को प्रस्तुत करे, शैली में शालीनता हो तथा पत्र-पत्रिका में अपनी पहचान बनाये रखे।

प्रश्न 26. विशेष रिपोर्ट कैसे लिखें?
उत्तर- विषय निष्ठता- रिपोर्ट का संबंधित प्रकरण पर ही केंद्रित होना अपेक्षित है। यदि किसी विषय विशेष पर रिपोर्ट लिखी जाना है तो उससे संबंधित तथ्यों, कारणों और सामग्री आदि तक ही सीमित रखना चाहिए। इसमें प्रकरण को एक सूत्र की तरह प्राप्त तथ्यों में पिरोया जाए, जिससे प्रकरण अपने आप में स्पष्ट होगा।

प्रश्न 27. संपादकीय लेखन क्या है?
उत्तर- संपादकीय पृष्ठ को समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण

@MP_BOARD_25 (Telegram)

पृष्ठ माना जाता है। इस पृष्ठ पर अखबार विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय रखता है। इसे संपादकीय कहा जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने लेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्हें संपादकीय लेखन कहा जाता है।

प्रश्न 28. स्तंभ लेखन क्या है?

उत्तर- स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रूझान वाले होते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें विचार व्यक्त करने की उसे पूरी स्वतंत्रता रहती है।

प्रश्न 29. संपादक के नाम पत्र क्या है? समझाइये।

उत्तर- संपादक को एक पत्र अपने पाठकों से चिंता के मुद्दों के बारे में एक प्रकाशन को भेजा गया पत्र है। आमतौर पर पत्र प्रकाशन के लिए अभिप्रेत होते हैं। कई प्रकाशनों में संपादक को पत्र पारंपरिक मेल या इलेक्ट्रॉनिक मेल के माध्यम से भेजे जाते हैं।

प्रश्न 30. एक सफल साक्षात्कार कर्ता के कौन-कौन से गुण होते हैं?

उत्तर- एक सफल साक्षात्कार कर्ता में 3 गुण पाए जाते हैं-

(1) दो व्यक्तियों के मध्य सम्बन्ध।

(2) एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने का साधन।

(3) साक्षात्कार से सम्बन्धित दोनों व्यक्तियों में से एक व्यक्ति को साक्षात्कार के उद्देश्य के विषय में जानकारी होना चाहिए।

प्रश्न 31. विशेष लेखन क्या है?

उत्तर- अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ,व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

प्रश्न 32. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है?

उत्तर- एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती है, लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओ, मुद्दों और समस्याओं का बारीकि से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

प्रश्न 33. विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर- विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र- खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य विज्ञान, पर्यावरण शिक्षा, जीवन शैली, रहन-सहन जैसे क्षेत्र विशेष लेखन हेतु महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

प्रश्न 34. विशेष लेखन की सूचनाओं के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर- विशेष लेखन की सूचनाओं के क्षेत्र अर्थ, व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य आदि हैं।

इकाई-7 अपठित बोध

(1) देवी अथवा प्रात: स्मरणीय जैसे अलंकार अहिल्याबाई को छोड़कर इतिहास के अन्य शासक के नाम नहीं लगाए गए। मालवा की होल्कर रियासत में मालवाधिपति देवी श्री अहिल्याबाई होलकर जैसी एकमात्र सामंत हुई जो सामान्य परिवार में हुई मगर देश की महत्वपूर्ण रियासत की स्वामिनी बनने का जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ। बावजूद इसके आखिर तक सामान्य ही बनी रही। होलकर राजवंश के आरंभिक वर्षों में होलकर की गद्दी पर बैठकर होल्कर राज के शासन अत्यंत कुशलता क्षमता निस्पृहता और हर्ष भाव से चलाने वाली देवी अहिल्याबाई होल्कर का स्थान भारत के शासकों में अद्वितीय रहा है। उन्होंने जिस उदार भूमिका से शासन सूत्र संभाला और धीरता, वीरता, साहस और पटुता के साथ उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और युद्ध क्षेत्रों पर अद्वितीय तरीके से शासन किया वह भारत के इतिहास में पवित्र धरोहर के रूप में स्थापित है। आज भी पुण्य श्लोका लोकमाता देवी श्री अहिल्याबाई होल्कर के धर्ममय और लोक सेवा परायण जीवन तथा कार्यों की पुण्य स्मृति हमें अभिभूत और प्रेरित करती रहती है।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(2) देवी अहिल्याबाई का शासन इतिहास की धरोहर क्यों कहा गया है?

(3) 'निस्पृहता' का समानार्थी लिखिए।

(4) ''धैर्य'' का विशेषण रूप लिखिए।

उत्तर- (1) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक ''लोकमाता देवी श्री अहिल्याबाई होलकर''

(2) अहिल्याबाई ने उदार भूमिका से शासन सूत्र संभाला। बड़े ही धैर्य, वीरता और साहस के साथ उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और युद्ध क्षेत्रों पर शासन किया। इसलिए उनका शासन इतिहास का धरोहर कहा जाता है।

(3) इच्छा शक्ति

(4) धैर्यवान।

(2) समय का पर्याय काल तीन भागों में बांटा गया है भूत, वर्तमान एवं भविष्य काल। आज अर्थात् वर्तमान जो है वह आने वाले समय के लिए भूत की संज्ञा प्राप्त करता है और जो भविष्य के नाम से जाना जा रहा है और वह अपने आने-वाले कल के लिए वर्तमान का रूप ले लेगा। समय या वक्त को पकड़ा या रोका नहीं जा सकता है। मानव को निर्धारित समय पर अपना काम कर लेना चाहिए वरना वक्त बीत जाने के बाद सिर्फ पछतावा करने के अलावा हाथ में कुछ नहीं रहता। यह विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है प्रत्येक सत्र में एक निश्चित कक्षा की परीक्षाएँ निर्धारित होती है उस परीक्षा में प्रवेश करने की तैयारी पहले से आरंभ कर लेनी चाहिए और उस परीक्षा को निर्धारित समय पर देना चाहिए। यदि विद्यार्थी परीक्षा देने से वंचित हो जाए तो वह अगली कक्षा में प्रवेश नहीं कर पाएगा और अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत की कहावत चरितार्थ हो जाएगी। जीवन में अच्छे अवसर बार-बार नहीं आते हैं। अवसर को हाथ से जाने नहीं देना ही बुद्धिमानी है और यह समय की पाबंदी से ही संभव है। मानव मात्र को वक्त से पहले ही अपने लक्ष्य या कर्म को योजना बनाकर संपन्न कर लेना चाहिए।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(2) गद्यांश में प्रयुक्त कहावत लिखिए।

(3) गद्यांश के अनुसार बुद्धिमानी क्या है?

(4) गद्यांश में प्रयुक्त एक शब्द युग्म लिखिए।

उत्तर- (1) गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक- 'समय का महत्व' है।

(2) कहावत ''अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत''।

(3) अवसर को हाथ से जाने नहीं देना ही बुद्धिमानी है और यह समय की पाबंदी से ही संभव है।

(4) जीवन में अच्छे अवसर बार-बार नहीं आते।

(3) वर्तमान दौर में किसी भी आयु वर्ग को असफलता सहज स्वीकार्य नहीं होती, किन्तु यह स्थिति किशोरावस्था और युवावस्था में बेहद संवेदनशील होती है जब किसी युवा को लगता है कि वह अपने अभिभावकों के स्वप्न को साकार नहीं कर पाएगा तो वह नकारात्मक सोच में डूब जाता है। इस तरह की परिस्थिति उसे कहीं न कहीं कोई नकारात्मक कदम उठाने के लिए विवश करती है। ये सच है कि युवावस्था उम्र का संक्रमण काल है। इस समय उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खास तौर से कैरियर, जॉब, रिश्ते, व्यक्तिगत समस्याएँ आदि। हर युवा को चाहिए कि यदि उसकी जिंदगी में किसी प्रकार की परेशानी है जो बेचैन करती है तो उसे अपने दोस्तों, परिवार वालों के साथ शेयर करे। यदि समस्या है तो समाधान भी है। कभी कोई घातक कदम उठाने की कोशिश न करें। याद रखिए कि हमारी जिंदगी सिर्फ हमारी नहीं है उसके साथ कई लोगों की उम्मीदें और भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। कठिनाई का सामना करके उसे हल किया जाता है। पलायन किसी समस्या का समाधान नहीं है।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(2) युवाओं पर सामान्य तौर से क्या दबाव होता है?

(3) 'रक्षक' शब्द का विलोम गद्यांश से लिखिए।

(4) पलायन का समानार्थी लिखिए।

उत्तर- (1) युवावस्था एवं वर्तमान चुनौतियाँ।

(2) युवाओं पर सामान्य तौर पर कैरियर जॉब, रिश्ते तथा व्यक्तिगत समस्याएँ आदि बातों का दबाव रहता है।

(3) भक्षक

(4) निकलना या प्रस्थान करना।

(4) भारत की भौगोलिक संरचना के कारण यहाँ की जलवायु में विविधता देखने को मिलती है। भारत जो तीन ओर पूर्व पश्चिम व दक्षिण में क्रमश: बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर से घिरा है वही उत्तर में हिमालय की बर्फीली पर्वत चोटियाँ मस्तक उठाए है फलस्वरूप कहीं अधिक ग्रीष्म तो कहीं अधिक शीत तो कहीं अधिक वर्षा ऋतु होती है। जलवायु की विविधता के कारण यहां के लोगों की जीवनशैली, भाषा भी प्रभावित होती है। प्रत्येक राज्य की अपनी अलग भाषा मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड आदि है। उनकी संस्कृति भिन्न है। प्रारंभ में विदेशी आक्रमणों के कारण यहाँ अनेक धर्म सनातन धर्म के अतिरिक्त इस्लाम, यहूदी, जैन, पारसी, बौद्ध आदि हैं। इन विविधताओं के बावजूद भारत में राष्ट्रीय एकता प्रत्येक राज्य में दृष्टिगोचर होती है। भारत भूमि को माता की संज्ञा दी गई है। कहा भी गया है कि जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है। भारत के प्रत्येक राज्य विभिन्न विविधताओं के कारण उत्पन्न समस्याओं में मदद के लिए परस्पर तैयार रहते हैं। सभी धर्म भाषा व जाति के लोग

@MP_BOARD_25 (Telegram)

एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और राष्ट्र की रक्षा-सुरक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आते हैं।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
(2) जलवायु विविधता का क्या परिणाम होता है?
(3) सनातन का समानार्थी लिखिए।

उत्तर- (1) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक राष्ट्रीय एकता है।
(2) भारत की जलवायु में विविधता के कारण लोगों की जीवनशैली और भाषा भी प्रभावित होती है।
(3) नित्य, हमेशा, निरन्तर, शाश्वत आदि।

(5) भारतीय संस्कृति में पर्व का अत्यधिक महत्व है। पर्व किसी संस्कृति के वह अंग हैं जिनके बिना वह संस्कृति अधूरी रह जाती है। पर्व हमें ऐसा अवकाश प्रदान करते हैं कि हम अपने जीवन के विषय में अच्छा सोच सकते हैं। जिंदगी की भाग दौड़ के बीच में हमें ऐसे पल प्रदान करते हैं जब हम अपने विषय में कुछ अच्छा सोच सकते हैं। जीवन प्रवाह को सही दिशा देने वाले पर्व ही होते हैं। जीवन व्यवहार की समस्त कटुताएँ भी पर्व के द्वारा ही समाप्त हो जाती है। ये जीवन में ऊर्जा प्रदीप्त करते हैं रिश्तों में मधुर रस घोलते हैं प्रेम सद्भावना जीवन में नियोजित करते हैं तथा ज्ञान, आचरण, विश्वास को परिमार्जित करने का प्रयास करते हैं। अत: सभी धार्मिक, राष्ट्रीय पर्वों को उल्लास के साथ मर्यादा में रहकर मनाना चाहिए। यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि हमारे आनंद के कारण किसी और को किसी भी तरह की तकलीफ न पहुँचे। अपने आनंद में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करना अपने आनंद को बांटना ही किसी भी पर्व का असली उद्देश्य होना चाहिए।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) पर्व का असली उद्देश्य क्या है? लिखिए।
(3) 'परिमार्जित' का समानार्थी लिखिए।

उत्तर- (1) शीर्षक - पर्व की उपयोगिता या पर्व का महत्व
(2) अपने आनंद और खुशी में अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित करना और अपने आनंद को बांटना ही पर्व का असली उद्देश्य है।
(3) धोया या मांजा हुआ।

(6) स्वच्छता हमारी दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग है स्वच्छ शरीर में स्वच्छ आत्मा का निवास होता है। स्वच्छता का संबंध स्वस्थ रहने से भी है। हमारा नारा है - स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत। स्वच्छता घर की नहीं वरन् आसपास के परिवेश की भी आवश्यक होती है। अक्सर हम अपना घर तो साफ रखते हैं पर बाहरी परिवेश की गंदगी के लिए दोष सरकार पर लगाते हैं। जबकि वह गंदगी भी हमारे द्वारा फैलाई गई होती है। अत: स्वच्छता अभियान के अंतर्गत साफ सुथरा माहौल बनाना ही इस अभियान का मकसद है। स्वच्छता अभियान भारत सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है दूरदर्शन, आकाशवाणी द्वारा इसका प्रचार किया जा रहा है। अभियान का क्रियान्वयन एक चुनौती है परंतु यदि हमारा जनमानस और छात्र भी एकजुट होकर इस अभियान में जुट जाए तो इस अभियान को कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) स्वच्छता अभियान की कामयाबी के लिए क्या आवश्यक है?
(3) 'लघु' का विलोम गद्यांश में से लिखिए।

उत्तर- (1) स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत या स्वच्छता अभियान।
(2) स्वच्छता अभियान की कामयाबी के लिये साफ सुथरा माहौल बनाना तथा जन-मानस में इस कार्य के प्रति जागरूकता फैलाना जरूरी है। छात्र भी एकजूट होकर अभियान को सफल बना सकते हैं।
(3) लघु का विलोम - वृहद।

(7) अभी कुछ समय पहले ही संयुक्त परिवार हमारी संस्कृति की विशेषता हुआ करता था। (संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि जिसमें एक ही घर में एक साथ कई पीढ़ियों के लोग रहते हैं। जिस परिवार में तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ-साथ निवास करते हैं जिनकी रसोई पूजा एवं संपत्ति सामूहिक होती है। संयुक्त परिवार को यदि आज की आवश्यकता कहा जाए तो गलत न होगा। ऐसे परिवार में मिल जुल कर रहने की भावना की प्रधानता होती है इसमें सभी लोग एक दूसरे का सहारा बनते हैं। लेकिन आधुनिक समय में ऐसे परिवार का चलन कम हो गया है जिससे कई समस्याएँ पैदा हो रही हैं। इस पूरे संदर्भ में एक बात बहुत अच्छी है कि युवा पीढ़ी का ध्यान इसके समाधान की ओर गया है। उसे लगता है कि संयुक्त परिवारों का टूटना अच्छे संस्कारों पर ग्रहण लगने के समान है। अत: इस परंपरा को पुनर्जीवित करना जरूरी है ताकि समस्याओं का समाधान हो सके उन्हें अकेलेपन से मुक्ति मिल सके तथा बच्चों को स्वस्थ और आनंदमयी वातावरण मिल सके।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) आधुनिक युवा पीढ़ी की अब संयुक्त परिवार के बारे में क्या सोच है?
(3) संयुक्त परिवार को कैसे परिभाषित किया जा सकता है?

उत्तर- (1) शीर्षक - संयुक्त परिवार।
(2) आधुनिक युवा पीढ़ी की सोच यह है कि संयुक्त परिवारों के टूटने के कारण बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं मिलते हैं और वे अकेले रहते हैं।
(3) जिसमें एक ही घर में एक साथ कई पीढ़ीयों के लोग रहते हों। जिस परिवार में तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ-साथ निवास करते हैं जिनकी रसोई, पूजा और संपत्ति सामूहिक होती है।

(8) एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी वस्तु की खोज करता है किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत है। वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हों गई वह पूर्वज की भांति सभ्य भले ही बन जाए संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अधिक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अशिक सभ्य भले ही कह सकें, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) संस्कृत व्यक्ति किसे कहा गया है?
(3) 'ज्ञान' शब्द का विशेषण लिखिए।

उत्तर- (1) शीर्षक- संस्कृत व्यक्ति।
(2) जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नये तथ्य का दर्शन किया। वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।
(3) 'ज्ञान' का विशेषण - ज्ञानी।

(9) जीवन और जगत को सुखी और शांत बनाने के लिए माधुर्य से अधिक लाभदायक वस्तु और क्या हो सकती है। श्रोता और वक्ता दोनों को आनंद विभोर कर देने वाला यह मधुर भाषण समाज की पारस्परिक मान-मर्यादा, प्रेम-प्रतिष्ठा और श्रद्धा विश्वास का आधार स्तंभ है। इनके अभाव में समाज कलह, ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य का घर बन जाता है। मधुर बोलने वाले मनुष्य का समाज में आदर होता है मधुरभाषी के मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द सुनने वाले का जी लुभाता है। ऐसा लगता है मानो उसके मुंह से फूल झड़ रहे हों। मीठे वचन सुनने वाले को ही आनंद नहीं आता बल्कि वक्ता भी आत्मा का आनंद अनुभव करता है। वक्ता को एक विशेष लाभ यह है कि उसके मन की अहंकारी, दंभपूर्ण और गौरवपूर्ण भावनाएँ अपने आप ही समाप्त हो जाती है। अहंकारी व्यक्ति मधुर भाषी हो सकता है। मधुर वाणी से मनुष्य में नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि गुणों का उदय होता है। जिनसे जीवन प्रकाशपूर्ण और शांत बन जाता है। क्रोध उसके पास नहीं आता। मधुर वाणी एक अनमोल वरदान है।

प्रश्न- 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
2. मधुर बोलने से क्या लाभ है?
3. गद्यांश में प्रयुक्त कौन सा शब्द कठोरता का विलोम है?

उत्तर- (1) शीर्षक - मधुर वाणी या माधुर्य से लाभ।
(2) मधुर बोलने वाले मनुष्य का समाज में आदर होता है। मधुर भाषी वक्ता भी आत्मानंद का अनुभव करता है। उसके मन की अहंकारी दंभपूर्ण और गौरवपूर्ण भावनायें समाप्त हो जाती हैं।
(3) कठोरता का विलोम - मधुरभाषी या मधुरवाणी।

(10) स्वामी विवेकानन्द जी का चिंतन भारतीय जीवन-तत्वों के सारभूत तत्वों को प्रस्तुत करने वाला है। उनकी प्रासंगिकता इस समय इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है कि वह हमारी आज की जिज्ञासाओं का समीचीन समाधान प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने शिकागो के सुप्रसिद्ध विश्व धर्म सम्मेलन में जो व्याख्यान दिए थे वह आज हमारे लिए एक ग्रंथ का काम करता है। वे सांप्रदायिकता हठधर्मिता और वीभत्स धर्मांधता का विरोध करते हैं। उन्होंने एक ऐसे सुखद भविष्य के प्रति अपनी आशावादिता को प्रकट किया है जिसमें मनुष्य की पारस्परिक कटुताओं से मुक्त होकर यह संसार एक समुन्नत मानवीय चेतना से परिपूर्ण होगा। उनके विचारों की स्पष्टता और उनकी वाणी के ओज ने उन्हें संपूर्ण विश्व के युवाओं का चहेता बना दिया। हर युवा उन्हें पढ़ना उन्हें जानना चाहता है। उनका मानना था आलस्य की

©MP_BOARD_25 (Telegram)

हमारे जीवन में कोई जगह ही नहीं होनी चाहिए। अहंकार और ईर्ष्या को सदा के लिए नष्ट कर दो। काम, काम और सिर्फ काम ही एकमात्र मूलमंत्र होना चाहिए।

प्रश्न– 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

2. विवेकानंद जी का विरोध किसके प्रति था?

3. गद्यांश में प्रयुक्त शब्द 'समीचीन' का समानार्थी लिखिए।

उत्तर– (1) शीर्षक - स्वामी विवेकानन्द।

(2) विवेकानन्द का विरोध सांप्रदायिकता, हठधर्मिता और वीभत्स धर्मान्धता के प्रति था।

(3) समीचीन का समानार्थी - उचित।

अपठित काव्यांश

(1) "जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढे दाम,
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।

प्रश्न– (1) नाव में पानी बढ़ने पर क्या करना चाहिए?
(2) घर में संपत्ति बढ़ने पर क्या करना बुद्धिमानी है?
(3) उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– (1) नाव में पानी बढ़ने पर दोनों हाथों से उलीचना चाहिये अर्थात् बाहर निकालना चाहिए।

(2) घर में संपत्ति बढ़ने पर दान करना ही बुद्धिमानी है।

(3) नाव में पानी बढ़ जाये और घर में धन-संपत्ति बढ़ जाये तो दोनों हाथों से उलीचना चाहिये। धन संपत्ति का दान करना चाहिये।

(2) कल जो हमारी सभ्यता पर हँसे थे अज्ञान से,
आज लज्जित हो रहे हैं अधिक अनुसंधान से।
जो आज प्रेमी हैं हमारे भक्त कल होंगे वही,
जो आज व्यर्थ विरक्त हैं, अनुरक्त कल होंगे वही।

प्रश्न– (1) हमारी सभ्यता पर लोग क्यों हँस रहे थे?
(2) अनुरक्त का विलोम लिखिए।
(3) आज कौन लज्जित हो रहे हैं?

उत्तर– (1) हमारी सभ्यता पर अज्ञान के कारण लोग हँस रहे थे।

(2) अनुरक्त का विलोम - विरक्त

(3) कल जो लोग अज्ञान के कारण हम पर हँस रहे थे, वे लोग हमारे अधिक अनुसंधान से लज्जित हो रहे हैं।

(3) "हम अनिकेतन हम अनिकेतन
हमते रमते राम हमारा, क्या घर,
क्या दर कैसा वेतन,
अब तक इतनी यों ही काटी,
अब क्या सीखे नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा,
हाथों चुन-चुन कंकड माटी,
टाट फकीराना है अपनाए बाघांवर सोहे अपने तन।"

प्रश्न– (1) उक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) कवि अपने आपको अनिकेतन क्यों कहता है?
(3) उक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– (1) हम अनिकेतन

(2) क्योंकि कवि ने अभी तक अपना घर नहीं बनाया है। अभी तक समय ऐसे ही बिताया है।

(3) कवि कहते हैं कि हम तो रमते राम हैं। हमारा घर-बार नहीं है। कंकड़ माटी से घर बनाने की नयी परिपाटी नहीं सीखी। हमारा रहन-सहन फकीरों जैसा है।

(4) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

प्रश्न– (1) कई दिनों से चक्की उदास क्यों थी?
(2) उक्त पंक्तियाँ कौन सी प्राकृतिक आपदा की ओर इशारा करती है?
(3) उक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– (1) कई दिनों से चक्की पर अनाज नहीं पिसा गया था इसलिये चक्की उदास थी।

(2) अकाल जैसी प्राकृतिक आपदा की ओर इशारा करती है।

(3) अकाल के कारण कई दिनों तक चूल्हा भी नहीं जला और चक्की अनाज न पिसने के कारण उदास रही। कानी कुतिया भी भूखी उसके पास सोयी। कई दिनों तक दीवारों पर छिपकलियाँ घूम रही थी। खाना न मिलने के कारण चूहों की हालत भी पस्त हो रही थी।

(5) "माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
ज्ञान अर्पित प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित,
चाहता हूँ कि धरती तुझे कुछ और भी दूँ।।"

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक क्या होगा?
(2) कवि भारत माँ को क्या अर्पित करना चाहता है?
(3) देश की धरती का हम पर क्या ऋण है?

उत्तर– (1) शीर्षक धरती माता या समर्पण या भारत माता।

(2) कवि भारत माँ को अपना मस्तक अर्पण करना चाहता है।

(3) देश की धरती पर हमारा जन्म हुआ। धरती पर उगे हुए अनाज आदि से हमारा पालन पोषण हुआ।

(6) "गगन-गगन तेरा यश फहरा
पवन, पवन तेरा बल गहरा
क्षिति-जल-नभ पर डाल हिंडोला
चरण, चरण संचरण सुनहरा
ओ ऋषियों के वेश
प्यारे भारत देश।"

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) आप अपने देश को प्यार क्यों करते हैं?
(3) उक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– (1) शीर्षक - भारत देश है।

(2) क्योंकि यह हमारी जन्म भूमि है और सब कुछ हमने इसी देश से प्राप्त किया है। हमारा जीवन इसका है।

(3) भारत देश का यश पूरे संसार में फैला हुआ है। यहाँ का आकाश, जल, पवन, पौधे, खेती आदि अनुकूलित हैं। स्वच्छ ऋषियों का वंश वाला भारत देश।

(7) "जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको,
पर पीछे-पीछे अक्ल जगी मुझको,
जी लोगों ने तो बेंच दिये ईमान,
जी आप न ही सुनकर ज्यादा हैरान,
मैं सोच-समझकर आखिर,
अपने गीत बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ।"

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) कवि को गीत बेचने में शर्म क्यों नहीं आती?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर– (1) शीर्षक - मैं गीत बेचता हूँ।

(2) लोगों ने अपने ईमान बेच दिये। इसलिए कवि को गीत बेचने में शर्म नहीं आती।

(3) कवि कहते हैं, गीत बेचने में शर्म आयी। पर लोगों ईमान बेचते देख मुझे अकल आयी। आप सुनकर हैरान मत होना। क्योंकि मैं सोच समझकर ही अपने गीत बेचता हूँ। ❑

इकाई–8 पत्र – लेखन

(1) जिला शिक्षा अधिकारी को उनके अधीन सहायक शिक्षक के रिक्त पद पर नियुक्त किए जाने हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर–

प्रति,
श्रीमान उपसंचालक महोदय,
शिक्षा विभाग,
भोपाल (म.प्र.)

विषय– सहायक शिक्षक के पद हेतु आवेदन-पत्र।

मान्यवर,

उक्त विषय में निवेदन है कि आपके द्वारा दैनिक स्वदेश में 22 जून, 2021 को प्रकाशित विज्ञप्ति क्र. 0/1235/760 के संदर्भ में, मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरी जानकारी एवं योग्यता निम्नानुसार है-

(1) नाम	- रजत
(2) पिताजी का नाम	- सत्यनारायण
(3) जन्म दिनांक	- 23 अगस्त, 1994
(4) जाति	- कायस्थ
(5) स्थायी पता	- 986, सुभाष नगर, इन्दौर
(6) शैक्षणिक योग्यता	- बी.एससी.

मेरे द्वारा दी गई उपर्युक्त जानकारी पूर्णत: सत्य है। आशा है, आप मुझे सेवा का अवसर प्रदान कर कृतज्ञ करेंगे।

धन्यवाद

दिनांक ..... विनीत
रजत

(2) अपने मित्र को हायर सेकेंडरी परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर–

318, जवाहर मार्ग
सागर (म.प्र.)

दिनांक .....

प्रिय मित्र अर्पित,

नमस्ते।

मैं यहाँ पर आनन्दपूर्वक हूँ। आशा है तुम भी वहाँ पूर्णरूपेण सकुशल एवं स्वस्थ होंगे।

विगत दिनों समाचार-पत्र स्वदेश में प्रकाशित हाईस्कूल का परीक्षाफल पढ़ने को मिला। तुम्हारे पूर्व पत्र में तुम्हारा रोल

@MP_BOARD_25 (Telegram)

नम्बर था, मैंने परीक्षा फल देखा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। सर्वप्रथम तो मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। वास्तव में तुम्हारे जैसा कर्मठ एवं अनुशासनप्रिय छात्र ही दूसरों को सही दिशा और प्रेरणा दे सकता है। आगे की पढ़ाई की योजना लिखें।

माता-पिता को चरण-स्पर्श, छोटों को स्नेह।

पत्रोत्तर दीजिए।

आपका अभिन्न मित्र
श्रीधर शर्मा
कक्षा-12वीं

(3) स्थानीय समाचार पत्र के संपादक को रचना के प्रकाशन हेतु निवेदन का पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रति, दिनांक .....
श्रीमान संपादक महोदय,
दैनिक भास्कर,
भोपाल म.प्र.

विषय- रचना प्रकाशन रविवारीय परिशिष्ट हेतु।

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि मैं दैनिक भास्कर "समाचार पत्र नियमित रूप से पढ़ती हूँ। मुझे लिखने का शौक है। मैं रविवारीय परिशिष्ट "अभिव्यक्ति" के लिये अपनी कहानी "स्वाभिमान" प्रेषित कर रही हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इसे परिशिष्ट में स्थान देकर प्रकाशित करने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय
स्मिता शर्मा
भोपाल

(4) अपने मित्र को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर एक बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर-

दिनांक

प्रिय मित्र प्रज्ञा,

सप्रेम नमस्कार

कल मुझे जैसे ही पता लगा कि तुमने वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है,मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। परमात्मा से प्रार्थना है कि तुम्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसी प्रकार सफलता प्राप्त होती रहे।

एक बार फिर बहुत-बहुत बधाई हो, प्रिय मित्र घर सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को मेरा स्नेह देना।

तुम्हारी प्रिय
निरुपमा

(5) अपने जिले के जिला अधिकारी को अपने क्षेत्र की सिंचाई सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए एक आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रति,
श्रीमान जिलाधीश महोदय,
जिला-भोपाल
भोपाल (म.प्र.)

विषय- सिंचाई सुविधा में विस्तार करने विषयक।

मान्यवर,

सेवा में नम्र निवेदन है कि भोपाल जिले में सिंचाई सुविधा का अभाव है। आज पर्यन्त जो सुविधाएँ दी गई हैं वे पर्याप्त नहीं है। इसी कारण यह क्षेत्र कृषि उपज के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। 'नलकूप' आजकल सिंचाई के वरदान साबित हो रहे हैं। यदि ग्रामवार इच्छुक कृषकों को नलकूप खनन हेतु ऋण सुविधा दी जाए तो जिले को बिना अतिरिक्त खर्च के कृषि उपज बढ़ाने में सफलता मिलेगी।

कृपया मेरे सुझाव पर ध्यान देते हुए संभावनाओं का पता लगाकर इसे यथासंभव मूर्त रूप देने की कृपा करेंगे।

दिनांक .....

भवदीय
मयूरेश
जिला भोपाल

(6) अपने मित्र को विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में रचना के प्रकाशन की बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रिय मित्र सुमित,

नमस्ते।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है तुम भी स्वस्थ एवं कुशल होगे। तुम्हारी पढ़ाई भी अच्छी चल रही होगी। अभी कुछ दिन पूर्व हमारे मित्र नितिन से ज्ञात हुआ कि विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में तुम्हारी रचना "मेरा देश महान" प्रकाशित हुई है। यह जानकर बहुत खुशी हुई। हार्दिक बधाई स्वीकारें। आगे भी लेखन यात्रा जारी रखना।

माता-पिता को चरण स्पर्श।

छोटों को स्नेह।

आपका मित्र
मोहन

(7) आपके क्षेत्र के पोस्ट मास्टर साहब को नियमित डाक वितरण न होने का शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रति,
पोस्ट मास्टर महोदय,
पोस्ट ऑफिस
तिलक नगर
इन्दौर म.प्र.

विषय- अनियमित डाक वितरण विषयक।

मान्यवर,

सेवा में नम्र निवेदन है कि हमारे नगर में नियमित डाक वितरण नहीं हो रहा है। डाकिया रोज नहीं आ रहा है। हमारे जरूरी पत्र हमें बहुत देर से प्राप्त हो रहे हैं। हम सभी तिलक नगर के निवासी बहुत परेशान हो रहे हैं। आपसे निवेदन है कि इस समस्या का उचित समाधान करें।

दिनांक .....

भवदीय
समीर शर्मा
124 तिलक नगर, इन्दौर

(8) छात्रावास से अपने पिताजी को पत्र लिखते हुए परीक्षा हेतु अपनी संतोषजनक तैयारी की जानकारी दीजिए।

उत्तर-

शासकीय छात्रावास
शिवपुरी, मध्यप्रदेश।
दिनांक .....

पूज्य पिताजी,

प्रणाम।

आपका पत्र मिला। मैं अभी वार्षिक परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हूँ। हमारे विद्यालय के सभी शिक्षक तन्मयता से संपूर्ण विषयों का अभ्यास करवा रहे हैं। मैंने अपना विषयवार समय चक्र बना लिया है। प्रात:काल जल्दी उठकर पढ़ाई करता हूँ। कठिन विषयों की पढ़ाई अधिक समय तक करता हूँ। कोचिंग वाले सर भी पूरी सहायता करते है। सभी विषयों की 1-1 बार पुनरावृत्ति हो चुकी है। पिछले 2-3 वर्षों के प्रश्न-पत्र भी हल कर रहा हूँ। अपना पूरा ध्यान तथा शक्ति पढ़ाई पर ही केन्द्रित कर दी है। मेरे परिश्रम तथा आपके और माताजी के आशीर्वाद से परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करूँगा। ऐसी आशा है। माताजी को प्रणाम। छोटी को प्यार।

आपका पुत्र
राकेश

(9) नगर पालिका अध्यक्ष को जल की अनियमित आपूर्ति के संबंध में शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रति,
श्रीमान सहायक यंत्री महोदय,
नगर निगम, खण्डवा
खण्डवा (म.प्र.)

विषय- जल की अनियमित आपूर्ति विषयक।

मान्यवर,

सेवा में विनम्र निवेदन है कि गत 15 दिनों से काटजू नगर कॉलोनी में नियमित जल प्रदाय में बाधा आ रही है। कभी बिजली की पूर्ति नहीं होती, कभी जल दबाव कम होता है, कभी बहुत कम समय के लिए जल आपूर्ति की जाती है, कभी 4-4, 6-6 घण्टे देरी से जल प्रदाय किया जाता है, कभी पाइप लाइन में खराबी आ जाती है, तो कभी यंत्र योजना लड़खड़ा जाती है।

श्रीमान ये सभी समस्याएँ स्थायी हैं, इनका उपचार योजना से बहुत कम समय में होना चाहिए तथा ये समस्याएँ बाधक न बनें, इस हेतु समय-समय पर निरीक्षण किया जाना चाहिए। कृपया नियमित, पर्याप्त जलापूर्ति कराकर क्षेत्र की जनता को जलसंकट से राहत दिलाकर उपकृत करें।

दिनांक ..... भवदीय,
सुरेन्द्र
1234, काटजू नगर
कॉलोनी,
खण्डवा (म.प्र.)

(10) अपने नाना जी को गांव से वापस आने पर अपनी मधुर स्मृतियों का एक पत्र लिखिए।

उत्तर-

दिनांक 5, श्रीराम नगर
ग्राम दतोदा
जिला-उज्जैन

पूज्यनीय नानाजी,

सादर प्रणाम।

मैं कल ही गांव से अपने घर आ गया। पर मेरा मन अभी भी गांव में ही है, ऐसा लगता है। सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर आपके साथ प्रात: भ्रमण पर जाने का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। वृक्षों पर चहचहाते पक्षी और सृजन की सुनहरी धूप वातावरण को प्रसन्न कर रही थी।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

वापस आने पर नानी के हाथ का स्वादिष्ट नाश्ता और गाय के ताजे दूध का स्वाद अभी भी जुबान पर है। शाम को गांव के मित्रों के साथ नदी में तैरना और फिर खूब खेलना मन को भा गया।

मन करता है अभी तुरंत गांव जाकर शुद्ध हवा का आनंद लूं तथा आपके और नानीजी के साथ रहूँ।

मैं वादा करता हूँ कि अगली छुट्टियों में जरूर गांव आऊँगा।

नानीजी को प्रणाम। मेरे सभी दोस्तों को अभिवादन।

आपका नाती

शुभम

इकाई–9 निबन्ध लेखन

निम्नलिखित विषयों पर सारगर्भित निबंध लिखिए–

(1) कोरोना से बचाव एवं सावधानियाँ अथवा

कोविड–19

प्रस्तावना– विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोनावायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है, जो मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है किन्तु आज कोरोना के संक्रमण से पूरी दुनिया हताश है।

कोरोना वायरस क्या है– कोरोना वायरस का संबंध ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से सर्दी, जुकाम, साँस लेने में तकलीफ जैसी समस्या होती है। इस वायरस का शुरुआती संक्रमण दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान में शुरु हुआ। इसके पूर्व इसे कभी नहीं देखा गया था। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है, अत: इसके प्रति सतर्क रहना अति आवश्यक है। WHO के अनुसार बुखार, खाँसी, साँस लेने में तकलीफ इसके प्रमुख लक्षण हैं। अभी तक इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए कोई टीका नहीं बना है।

कोरोना वायरस अब चीन में ही नहीं दुनिया के अन्य देशों में भी तीव्र गति से फैल रहा है। कोविड–19 नाम का यह वायरस अब तक लगभग 70 देशों को अपनी चपेट में ले चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

कोरोना के लक्षण– कोविड–19/कोरोना वायरस में पहले बुखार के बाद सूखी खाँसी होती है। फिर एक हफ्ते बाद साँस लेने में परेशानी होने लगती है। किन्तु इन लक्षणों का हमेशा यह अर्थ नहीं होता कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और कभी–कभी व्यक्ति की मौत तक हो जाती है। जिन लोगों को खास कर बुजुर्गों को जिन्हें पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके लिए गंभीर स्थिति हो सकती है।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तो–

(1) तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

(2) अपनी रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाने हेतु काढ़े का प्रयोग करें।

(3) जब तक ठीक न हो जाएँ दूसरों से दूरी बना कर रखें।

(4) डॉक्टरों द्वारा लक्षणों को कम करने हेतु दी जाने वाली दवाइयों का सेवन सावधानी पूर्वक करें।

कोरोना वायरस से बचने के उपाय– स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए निम्न दिशा–निर्देश जारी किए हैं–

(1) हाथों को बार–बार 20 सेकंड तक साबुन से धोना चाहिए।

(2) अल्कोहल आधारित हैंरब (सैनिटाइजर) का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

(3) खाँसते और छींकते समय नाक और मुँह को रुमाल या टिशु पेपर से ढँक कर रखें।

(4) जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।

(5) अंडे और मांस के सेवन से बचें।

(6) जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

(7) मास्क का प्रयोग करें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से रोकने के उपाय

(1) सार्वजनिक वाहन जैसे– बस, ट्रेन या टैक्सी से यात्रा करने से बचें।

(2) अनावश्यक घर से बाहर जाने से बचें।

(3) सार्वजनिक स्थान पर जाने से बचें तथा अन्य लोगों की भीड़ में सतर्क रहें।

(4) संक्रमित इलाके या व्यक्ति के संपर्क में रहें तो स्वयं को दूसरों से दूर रखें।

उपसंहार– कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेचैनी देखने को मिलती है किन्तु कोरोना का वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकता। अत: सावधानी ही बचाव है। कोरोना वायरस के इलाज हेतु वैक्सिन विकसित करने पर काम चल रहा है। इस वर्ष के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जायेगा। कुछ अस्पतालों में एंटीवायरस दवा का भी परीक्षण चल रहा है। इसके अतिरिक्त सरकार ने अफवाहों से बचने और स्वयं की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं, जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सके।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(2) प्रदूषण–कितना घातक अथवा प्रदूषण समस्या और निदान या पर्यावरण संरक्षण

1. प्रस्तावना– वर्तमान में बढ़ती हुई भौतिकता ने अनेक प्रकार की सुख–सुविधाओं के प्रति आकर्षण पैदा कर दिया है। परिणामस्वरूप मनुष्य प्रकृति के सन्तुलन को भूलकर अविवेकपूर्ण रूप से प्रकृति का दोहन कर रहा है– जिनका परिणाम प्रदूषण है।

प्रदूषण उद्योग की देन है। पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ है– अनचाही धीमी गति से आने वाली मृत्यु, जीवन शक्ति का ह्रास और बीमारियों की संक्रामकता। प्राणीमात्र की अनर्गल जनसंख्या वृद्धि ने इस महाविनाश को ओर नजदीक ला खड़ा किया है।

2. प्रदूषण के रूप– प्रदूषण अनेक प्रकार का होता है–

(1) वायु प्रदूषण (2) जल प्रदूषण (3) हवा प्रदूषण (4) मिट्टी प्रदूषण (5) ध्वनि प्रदूषण आदि।

इन सभी प्रदूषणों के कारण मानव जीवन एक अभिशाप बनता जा रहा है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हमारी ज्ञानेन्द्रियों को (आँख–दृश्य शक्ति, कान–श्रव्यशक्ति, नाक–घ्राण शक्ति, जिह्वा–स्वाद और त्वचा–स्पर्श शक्ति) प्रदूषण के कारण निष्क्रिय होते देख रहे हैं।

3. प्रदूषण नियंत्रण– प्रदूषण की समस्या विश्वव्यापी है। सारा विश्व प्रदूषण के कारण चिंतित हो उठा है, क्योंकि मानव जाति के विनाश के लिए प्रदूषण का राक्षस मुँह फैलाए सामने खड़ा है। संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में सन् 1972 में पर्यावरण सुधार हेतु (स्टाकहोम) स्वीडन में पहला सम्मेलन हुआ। 109 सूत्रीय कार्यक्रम तैयार किया गया। एक ही पृथ्वी के सिद्धांत को माना गया है। भारतीय संविधान की नीति–निदेशक सिद्धांतों में पर्यावरण का उल्लेख है। सन् 1980 में सबसे पहले इस ओर ध्यान दिया गया। मध्यप्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जहाँ विधिवत् पर्यावरण की घोषणा की गई। प्रतिवर्ष 5 जून को विश्वव्यापी पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

एक वृक्ष अपने पचास साल के जीवन में 2.5 लाख रु. की ऑक्सीजन, फल, फूल, खाद, औषधि, भूमि संरक्षण के द्वारा 3.5 लाख का लाभ पहुँचाता है और पाँच लाख का प्रदूषण नियंत्रण का कार्य करता है। क्या ऐसे हितकारी वृक्षों का संरक्षण आवश्यक नहीं है। आज की आवश्यकता है कि प्रत्येक नागरिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए सचेष्ट प्रयास करे।

4. उपसंहार– जल को प्रदूषित करने वाले उद्योगों पर कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए। अन्य उद्योग जो वायू प्रदूषण फैला रहे हैं, उन्हें राष्ट्रघाती मानकर उन पर कार्यवाही की जानी चाहिए। 2 दिसम्बर, 1984, की भोपाल गैस त्रासदी प्रदूषण जनित सामूहिक हत्याओं की एक कड़ी है। पेड़, प्राणियों और मनुष्यों के सच्चे साथी हैं।

(3) मनोरंजन के साधन

1. भूमिका– मनुष्य के लिए जितनी जरूरत भोजन (Food), पानी और घर की होती है, उतनी ही आवश्यकता मनोरंजन की भी होती है। संस्कृत भाषा के सुप्रसिद्ध (Famous) कवि कालिदास ने कहा था कि मनुष्य प्रकृति (Nature) से ही उत्सव–प्रिय (Fond of Festival) होता है। अर्थात् मनुष्य अपनी अन्य जरूरतों के साथ–साथ मनोरंजन के साधन (Source and Tools) जुटाना आवश्यक समझता है।

2. आज के साधन– प्राचीन काल में (In the anciet times) तरह–तरह के त्यौहारों (Festivals) का जन्म अवश्य ही इसलिए हुआ होगा कि लोग लगातार एक प्रकार का कार्य करते–करते ऊब (Boredom) महसूस करते होंगे और मन को फिर से ताजा (Fresh) करने के लिए किसी न किसी उपाय की जरूरत हुई होगी।

समय बीतने के साथ त्यौहारों का स्वरूप (Form) बदल गया और हर त्यौहार किसी न किसी धर्म, जाति या स्थान से जुड़ कर रह गया। फिर जरूरत हुई ऐसे साधनों की जिसका आनन्द सभी उठा सके। मनोरंजन के आज के साधन मनुष्य के इसी प्रयास (Effort) का नतीजा है।

मनोरंजन के प्रमुख साधनों में आज हमारे पास हैं– रेडियो, समाचार पत्र (Newspapers), पत्रिकाएँ (Magazines), दूरदर्शन (Television) सिनेमा, कम्प्युटर मेला, थियेटर नृत्य (Dances), वाद्य यंत्र (Musical Instruments) तथा कई प्रकार के खेल।

आज हम घर में बैठे–बैठे पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ सकते हैं और आराम से बैठ कर टी.वी. और कम्प्यूटर पर अपने मनपसंद

कार्यक्रम देख सकते हैं और किसी व्यक्ति से सम्पर्क कर सकते हैं। सिनेमा भी आजकल वीडियो सी.डी. के द्वारा घर पर ही देखा जा सकता है। कुछ लोग व्यायाम और खेलों से भी मनोरंजन करते हैं।

3. लाभ– आज हमारे पास मनोरंजन के इतने अधिक सामान हो गये हैं कि हमें अब इसके लिए किसी खास स्थान या समय का इन्तजार नहीं करना पड़ता। मनोरंजन के ये साधन हमारी दिमागी थकान दूर करके फिर से अपने काम में लगन से लग जाने के लिए हमें स्वस्थ बना देते हैं।

ये साधन हमारे समय की बचत तो करते ही हैं, हमें शिक्षा भी प्रदान करते हैं। हम घर बैठे इनके द्वारा देश-विदेश के लोगों से सम्पर्क कर नई-नई जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

4. उपसंहार– आवश्यकता के अनुसार मनोरंजन आवश्यक है। इससे व्यक्ति में जीवन के प्रति उत्साह तो बढ़ता ही है, आपसी प्रेम और भाईचारा भी बढ़ता है। अत: स्वस्थ मनोरंजन के और नये साधनों की खोज करना जरूरी है।

(4) भ्रष्टाचार की समस्या

1. प्रस्तावना– भ्रष्टाचार से तात्पर्य अनुचित एवं अनैतिक कार्य-व्यवहार से है। आज हमारा सारा आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भ्रष्टाचार का पर्याय बन गया है। आज राजनीति में तो मंत्री, मुख्यमंत्री यहाँ तक कि प्रधानमंत्री तक भ्रष्टाचार के दलदल में फँस चुके हैं। सारे कार्यालय, चपरासी से लेकर उच्च पदासीन अधिकारीगण तो इस दलदल में डूब ही चुके हैं।

2. भ्रष्टाचार का स्वरूप– अधिक लाभ कमाने के चक्कर में नकली माल बेचना, मिलावट करना, नकली माल खरीदना। चुनाव में जीतने, कुर्सी हथियाने, मनचाहा फैसला पाने, अधिक पैसा कमाने के लिए अनुचित धन प्राप्त करना आदि कार्यों के लिए बोला गया झूठ, लेन-देन, चोरी, तस्करी, काला बाजारी आदि भ्रष्टाचार की परिधि में आते हैं।

3. वर्तमान भ्रष्टाचार के कतिपय उदाहरण– आज खाद कांड में पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहरावजी के पुत्र फँसे हैं तो स्वयं राव सा. हवाला कांड, पूर्व मुख्यमंत्री बिहार लालूप्रसादजी यादव चारा काण्ड में फँसे हैं, पूर्व संचार मंत्री सुखराम से भ्रष्टाचार के करोड़ो रुपये बरामद हुए हैं, कोई लॉटरी कांड में फँसा है, तो कोई तेंदूपत्ता कांड में कोई खंडवा तालाब की जमीन के मामले में फंसा है, तो कोई अवैध वन कटाई में, कहीं पुल बनाने में भ्रष्टाचार हो रहा है तो कहीं सड़क बनाने में, मकान बनाने में सीमेंट की जगह रेत का भाग जरूरत से ज्यादा है। आज समाज में भ्रष्टाचार के उदाहरणों का अंबार लगा हुआ है।

4. उपचार/समाधान– भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने के लिए आवश्यक है कि कड़े कानून बनाए जाएँ, दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, नागरिक अपना कर्त्तव्य समझें समय पर कर चुकाएँ। राष्ट्र और समाज में ईमानदारी और कर्त्तव्यपरायण सेवकों को पुरस्कृत किया जाए। पर्याप्त वेतन और पर्याप्त रोजगार के अवसर युवाओं को प्रदान किये जाएँ।

5. उपसंहार– यदि हम अपने इस महान राष्ट्र की प्रगति चाहते हैं तो हमें जीवन से भ्रष्टाचार समाप्त करना होगा। हमें दृढ़तापूर्वक भ्रष्टाचार निवारण करना होगा। सरकार को भ्रष्टाचारियों को कठोर दंड देना चाहिए और जनता को ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए।

शिक्षा का प्रसार किया जाए और जनता को अधिकारों से परिचित कराया जाए और प्रशासन में पारदर्शिता एवं समय सीमा में कार्य करने की पद्धति लागू की जाए, तभी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कराया जा सकेगा।

(5) स्वावलम्बन

1. प्रस्तावना– ईश्वर ने हमें अनमोल मानव शरीर दिया है। गोस्वामी तुलसीदास जी का यह कथन बहुत ही स्वाभाविक है, "बड़े भाग मानुष तन पावा।" मानव को भगवान ने एक अलौकिक शक्ति एवं क्षमता प्रदान की है, वह है चिन्तन करने तथा विचारानुसार कार्य सम्पादन करने की क्षमता। यह एक ईश्वरप्रदत्त उपहार है। अब वह इस उपहार का कितना सदुपयोग करता है अथवा कितना दुरुपयोग करता है, यह सब उसी के ऊपर आश्रित है। यह प्रश्न विचारणीय है कि मानव शरीर का सदुपयोग एवं दुरुपयोग किस प्रकार होता है? तो इसका एकमात्र उत्तर है, श्रम करके एवं स्वावलम्बी बनकर मनुष्य मानव शरीर का सदुपयोग करता है तथा आलसी एवं कायर बनकर दुरुपयोग।

2. स्वावलम्बन सुखी जीवन की आधारशिला– स्वावलम्बन सुखी जीवन की आधारशिला है। स्वावलम्बी इंसान के लिए सुख के समस्त साधन खुल जाते हैं। अपना श्रम सीकर बहाकर संध्या समय जब मजदूर श्रान्त होकर भोजन करने बैठता है तो उसे रूखे - सूखे भोजन में भी अमृत-तुल्य स्वाद का अनुभव होता है। स्वयं उपार्जित धन चाहे कितना भी अल्प हो, अपरिमित आनन्द एवं आत्म-संतोष प्रदान करता है। स्वावलम्बन आत्मविश्वास को जागृत करता है।

स्वाभिमान को उसकी अस्मिता का भी आभास कराता है। स्वावलम्बी इंसान किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए किसी अन्य का मुँह नहीं ताकता।

3. पराश्रित मानव की दशा– पराश्रित मानव मनचाही वस्तु को प्राप्त करने में असफल ठहरता है। उसका जीवन कुण्ठित एवं निराशा के कुहरे से आवृत्त रहता है। यह भाव-शून्य हो जाता है। दूसरों पर निर्भर रहने वाले मानव की सोचने-समझने की क्षमता का ह्रास हो जाता है।

4. स्वावलम्बन में बाधा के कारण– स्वावलम्बन में बाधा का प्रमुख कारण मानव का प्रमाद है। आलस्य ही 'मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु' मानव आत्मनिर्भर हुए बिना सुखपूर्वक जीवनयापन नहीं कर सकता। आलस्य में निमग्न रहकर दैव-दैव की रट लगाने से तो दैव सहायता करने से रहे। दैव उसी की सहायता करते हैं, जो अपना काम स्वयं सम्पादित करने के लिए कमर कसकर तैयार रहते हैं। अँग्रेजी में एक कहावत इस सन्दर्भ में अवलोकनीय है- God helps those who help themselves.

अर्थात् भगवान उन्हीं की सहायता करते हैं जो स्वयं अपनी सहायता आप करते हैं।

5. स्वावलम्बी समाज अनुकरणीय– जो समाज स्वावलम्बी होता है वह अनुकरणीय माना जाता है। स्वावलम्बी मानव महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित होता है। महात्मा गाँधी, लालबहादुर शास्त्री आदि ऐसे अनेक महापुरुष हैं जिन्होंने बाल्यकाल से ही स्वावलम्बन का आश्रय ग्रहण करके अपने जीवन को बुलन्दियों तक पहुँचा दिया।

6. स्वावलम्बन का बहुआयामी स्वरूप– आज यदि प्रत्येक मानव स्वावलम्बी बनने का प्रयास करे तो समाज की समस्त विषमताएँ समाप्त हो जाए। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति का स्रोत स्वावलम्बन ही है।

आत्मनिर्भर बनने के लिए सरकारी नौकरियों की आवश्यकता नहीं है, अपितु समाज में आज भी अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ कार्य करके मानव धन अर्जित कर सकता है। युवक आज नौकरियों के पीछे अंधे की भाँति दौड़ लगा रहे हैं। भारत की निर्धनता के पीछे इस भावना का प्रमुख हाथ है। युवक ऊँची नौकरी के सपने तो देखता है, परन्तु अपने खेतों को नई तकनीक से उर्वर बनाने के सम्बन्ध में नहीं सोचता। वह अशिक्षित की तुलना में अधिक धन उपार्जित कर सकता है।

7. भारत के निमित्त स्वावलम्बन परमावश्यक– हमारे देश के मानवों के हृदय में स्वावलम्बन की भावना का जाग्रत होना नितान्त आवश्यक है। स्वावलम्बन सुख का अक्षय कोष है। हमें बालकों के मन-मानस में स्वावलम्बन की भावना का बीजारोपण बाल्यकाल से ही करना चाहिए। व्यर्थ में समय नष्ट करने की अपेक्षा छोटा-मोटा कार्य करना उत्तम है। श्रमशील मानव अपने भाग्य के भरोसे बैठकर आँसू नहीं बहाता है। श्रमशीलता से ही स्वावलम्बन की ओर कदम बढ़ाए जा सकते हैं। हमारे देश के ह्रास का प्रमुख कारण स्वावलम्बन से दूर भागना है। हम व्यर्थ बैठकर गप्प, वाद-विवाद में समय तो नष्ट कर सकते हैं, परन्तु कार्य करने का नाम सुनकर हमें लकवा-सा मार जाता है। इस भावना का पनपना बहुत ही दु:खदायी है। इससे मानव का चारित्रिक पतन भी होता है।

8. उपसंहार– अपने आप भाग्य निर्माण करने वाला राज मिस्त्री स्वयं भाग्य की इमारत तैयार करता है। खुद ऊँची दीवार बनाता है और मनोनुकूल निर्मित न होने पर उसे धराशायी करके पुन: स्वयं की इच्छानुकूल तैयार कर लेता है। जैसा मन को रुचिकर लगा, कड़ा श्रम किया तथा कर लिया अपना भाग्य बुलन्द। स्वावलम्बन के माध्यम से ही मनुष्य के मन-मानस में आत्मबल जागृत होता है। अपना राजा वह स्वयं होता है।

(6) युवा एवं स्वरोजगार योजना

आज बेरोजगारी बढ़ती हुई महंगाई की तरह एक भयानक समस्या है। जीवन-स्तर लगभग तय हो चुका है। लोकतंत्र ने आम आदमी को स्वप्नों से संबद्ध किया है, उनमें परिकल्पनाओं का स्वर्ग, महाकाया और जीने की महती आकांक्षाएं पैदा की हैं। उसके लिए रोजगार चाहिए। नई पीढ़ी तो स्वप्नों की पीढ़ी है जो बहुत कुछ करना चाहती है। उसमें जोश है, कुछ कर पाने की तमन्ना है और शक्ति है। जरा कल्पना कीजिए जीवन के सुंदर स्वप्न बुनने वाला जब बेकारी की दहलीज पर खड़ा सूखे आसमान पर चटकती धरती की ओर देखेगा, तब उसके अंतर्मन पर क्या बीत रही होगी। उसके सृजित आत्मविश्वास, उम्मीद और स्वप्नों पर क्या बीत रही होगी। क्या उसके सामने स्याहा अंधेरा समुद्र की तरह उछाले नहीं ले रहा होगा।

वह बराबर अपने से प्रश्न करता होगा कि सोलह-सत्रह वर्ष अध्ययन की भेंट क्यों किए? क्यों उसने जीने के स्वप्न बुने ? कौन है उसके लिए जिम्मेदार? अब वह क्या करे? कौन-सी दिशा की ओर आगे बढ़े। चारों तरफ 'नो वेकेंसी' की तख्ती लटकी हुई है। समाज को उसकी जरूरत नहीं है। राज्य को

@MP_BOARD_25 (Telegram)

उसकी जरूरत नहीं है, परिवार के लिए वह भार है। उसकी कितनी दयनीय स्थिति है। उसी योग्यता, क्षमता, शक्ति, सूझबूझ और अक्ल सब धराशायी हो चुकी है। वह निकम्मा है। वह शक्तिहीन है, वह विवेकहीन है और वह अपाहिज है। सारी दुनिया उसकी शत्रु है। वह किसी भयावह षड्यंत्र में फंस चुका है। उसे षड्यंत्र में फंसाया गया है। फंसाने वाला कौन है? यहां उसका सशंकित मन और परास्त बुद्धि अपने शत्रु को तलाश करने का काम शुरू करती है। अब उसकी अपनी सारी शक्ति शत्रु को तय करने में लग जाती है।

महत्वाकांक्षा और स्वप्नों को संजोए नवयुवक को अचानक जब तपती हुई रेतीली धरती पर अकेला छोड़ दिया जाता है, तब वह आक्रोश, आशंका, अनस्तित्व, वर्जना, कुंठी आदि के दलदल में फंसने लगता है।

मैं भी बराबर इन्हीं परिस्थितियों से गुजरने लगा था, मेरे सामने अंधेरा था बेकारी के दैत्य की छाया मुझे या तो निगल जाने का प्रयास कर रही थी अथवा वह मुझे अपराध की दुनिया में धकेल देना चाहती थी। धनहीन जीवन कैसा नरक है, यह वही जान सकता है जिसने उसे भोगा है। धन नहीं तो कुछ नहीं है। जीवन निःस्सार है। स्वयं उस व्यक्ति को अपने जीवन से घृणा होने लगती है। जटिल आक्रोश उसे नास्तिक बना डालता है और वह सोचने लगता है कि वह किसी पूर्व नियोजित षड्यंत्र का शिकार हुआ है।

नौकरी कहीं मिली नहीं। सड़क इंस्पैक्टरी करते-करते मन झुंझला उठा। करूं तो क्या करूं? कैसे करूं? जी में आया डिग्री को फाड़ दूं और अपराध की दुनिया में उतर जाऊं। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे से कम योग्यता रखने वाले कैसे नौकरी पाकर मौजूं छान रहे हैं। उनके यहां ऊपरी आमदनी से आनंद हो रहा है। घूस नाम से उसका मन विद्रोही हो उठता था, उसकी मुट्ठियां तन जाती थीं।

तभी मेरा परिचय बैंक मैनेजर दुआ से हो गया, वे मेरे मित्र बन गए। वह मुझे हतोत्साह देखकर एक दिन कहने लगे मित्र यदि तुम बुरा नहीं मानों तो एक बात कहूं। मैंने हां कर दी। उन्होंने मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा कि मैं कोई काम शुरू कर दूं। प्रश्न उठा कि क्या काम? जहां बैंक मैनेजर रहता था, वहाँ नई कॉलोनी अभी बस ही रही थी। मैनेजर ने मुझे सुझाव दिया कि वहां मैं जनरल स्टोर की दुकान खोल लूं। पहले मैं चौका, मैंने उनकी ओर घूर कर देखा। आखिर मैंने प्रथम श्रेणी में बी.कॉम किया था वह दुकान किसलिए? क्या जनरल स्टोर खोलने के लिए किया था। मैं बार-बार यह सोचता था और हर झुंझलाहट से भर उठता था।

कब तक उनके प्रस्ताव को टालता? मेरे सामने और कोई रास्ता भी नहीं था। मैनेजर मित्र, मुझे बैंक से ऋण दिलवा रहे थे। अंततोगत्वा मुझे उनकी बात माननी पड़ी। मैंने विक्रम जनरल स्टोर के नाम से दुकान खोल दी। हारे मन से दुकान शुरू की। मैं मन ही मन अपनी इस मूर्खता पर लानत भेजता रहा।

समय बीतता गया। पता ही नहीं चला कि उम्दा वस्तु और उचित दाम का जादू कॉलोनी वालों को इतना मोह जाएगा कि छह-सात माह में दो हजार मासिक आमदनी होने लगेगी। अब मेरे मन में दुकान के प्रति झुकाव पैदा हुआ। मैं खरीददारी को रुख समझकर उनके अनुसार कार्य करने लगा। मेरी समझ में अब उपभोक्ता की प्रकृति आने लगी थी। उपरोक्ता संस्कृति को मैं समझने लगा। फलतः दुकान चल निकली।

मेरी समझ में बेकारी की समस्या का हल आ गया। हम क्यों नौकरी के पीछे दौड़ें ? क्यों नहीं स्व-रोजगार की ओर कदम बढ़ाएं। स्व-रोजगार का यह प्रयास मुझ में नई शक्ति भरने लगा। मैं फिर से अपने में ताजगी का अनुभव करने लगा। मेरे में न अब कुंठा रही और न फिजूल का आक्रोश। आज नौकरी के प्रति लोगों में पहले जैसा झुकाव नहीं रह गया। शिक्षित व्यक्ति की यह समझ में आने लगा कि वह प्राप्त शिक्षा का अपने व्यवसाय या कार्य में प्रयोग कर खासा लाभ उठा सकता है। जो निस्संदेह नौकरी की अपेक्षा कालांतर में अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

(7) स्वास्थ्य का महत्व

प्रस्तावना– मानव जीवन का सच्चा सुख उसके स्वास्थ्य में निहित है। स्वस्थ मानव ही संसार में हर प्रकार के सुख भोग सकता है। उत्तम स्वास्थ्य के कारण वह जटिल-से-जटिल कार्य भी सरलता से कर सकता है।

स्वस्थ मनुष्य में अदम्य साहस, उत्साह और धर्म की भावना प्रचुर मात्रा में भरी होती है। उसमें आत्मविश्वास होता है, जिस कारण उसका हृदय सदैव फूलों के समान खिला रहता है।

स्वास्थ्य अनमोल खजाना– इसके विपरीत जिन व्यक्तियों के पास स्वास्थ्य रूपी खजाना नहीं होता है, वह धनवान होते हुए भी अपने जीवन को भार समझते हैं। उनके लिए घर में बने स्वादिष्ट व्यंजन जहर के समान होते हैं। वह स्वादिष्ट व्यंजन को खाना तो चाहता है, लेकिन अस्वस्थ होने के कारण खा नहीं पाता। अतः शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिये हमें नित्य प्रति व्यायाम करना चाहिये।

स्वास्थ्य के लिये व्यायाम– व्यायाम से आशय शरीर के अंगों के समुचित विकास से है। व्यायाम करने से शरीर के सभी अंग

मजबूत होते हैं। शरीर में नयी स्फूर्ति उत्पन्न होती है तथा पाचन क्रिया भी ठीक रहती है।

नित्य प्रति व्यायाम करने से शरीर में रक्त का निर्माण होता है और रक्त का संचार तेजी से विकसित होता है। शरीर हष्ट-पुष्ट तथा मन प्रसन्न रहता है।

व्यायाम अनेक प्रकार से किए जा सकते हैं, जैसे दण्ड-बैठक लगाना, कुश्ती करना, दौड़ लगाना, जिम्नास्टिक करना, घुड़सवारी करना, यहां तक कि साइकिल चलाना, तैराना- आसन व प्राणायाम करना भी अच्छा व्यायाम है।

खेल और स्वास्थ्य– खेल खेलना भी व्यायाम का एक उत्तम साधन है। मस्तिष्क से काम करने वालों के लिए प्रातः घूमना, सूर्य नमस्कार करना आदि लाभकारी व उपयोगी व्यायाम हैं। इस प्रकार व्यायाम के द्वारा मनुष्य हमेशा स्वस्थ रहता है। स्वस्थ मनुष्य संसार के सुन्दर एवं मन को आकर्षित करने वाले पर्यटन स्थलों को सरलता से देख सकता है।

स्वस्थ शरीर में जीवन का सुख– इस प्रकार यदि सुख के साथ जीना है तो शरीर को स्वस्थ रखना परम आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिये हमें प्राकृतिक चीजों से नाता जोड़ना होगा। अप्राकृतिक चीजों को त्यागकर ही हम स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

उपसंहार– मद्यपान, अन्य प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन, गरिष्ठ भोजन करना, दूषित जलवायु में रहना-ये सब चीजें हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती हैं। अतः हमें इनसे बचकर अपने जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए।

(8) नारी शिक्षा का महत्व

किसी ने ठीक ही कहा है- ''बिना पढ़े नर पशु कहलावै'' अर्थात् यहाँ पर नर का अर्थ है मनुष्य और मनुष्य, पुरुष एवं नारी दोनों के लिए कहा गया है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा होता है। शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छे या बुरे की पहचान कर सकता है, अच्छाई और बुराई को पहचान कर निर्णय ले सकता है। आज भी अधिकांशतः समाज में नारी-शिक्षा को अहमियत नहीं दी जाती। यही कारण है कि अशिक्षित नारी सदैव उपेक्षा की शिकार रही है। घर की चहारदीवारी में बंद नारी कभी सेविका और कभी मनोरंजन का साधन मात्र बन कर रह गई है। परिणामतः इस प्रगतिशील समाज में वो कहीं खो सी गई है। पूरे समाज को जन्म देने वाली नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। नारी पर हर प्रकार से प्रतिबंध लगाने वाले यह भूल जाते हैं। घर के बच्चे पर चाहे वह लड़का हो या लड़की नारी के संस्कारों का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक परिवार का सम्पूर्ण विकास नारी पर निर्भर होता है, इसलिए नारी का शिक्षित होना अति आवश्यक है। हालाँकि भारत में प्राचीन काल से ही नारी की शिक्षा पर बल दिया गया है। ''महाभारत'', ''रामायण'', आदि महाकाव्यों से पता चलता है कि हर क्षेत्र में नारी ने विजय प्राप्त करके धर्म की स्थापना में अपना अमूल्य सहयोग दिया है। किन्तु मध्यकाल में पुनः नारियाँ ना-ना प्रकार के प्रतिबंधों की शिकार हुई। आजादी के संघर्ष में भी नारियों ने कंधे से कंधा मिलाकर पुरुषों का साथ दिया। आज भी नारी जागृत हो चुकी है। नारी की जागृति ने इस पुरुष प्रधान समाज को विवश कर दिया कि वे उसके लिए शिक्षा का द्वार खोल दें। सरकार भी लड़कियों की शिक्षा के लिए प्रयासरत है। दूरदराज के गाँवों में भी स्कूलों एवं कॉलेजों की स्थापना कर एवं शिक्षण संस्थाओं को अनुदान देकर नारी शिक्षण को बढ़ावा दे रही है। आज मुक्त कंठ से यह नारा गूँज रहा है- ''पढ़ी-लिखी लड़की रोशनी घर की''।

नारी शिक्षा का ही परिणाम है कि विभिन्न क्षेत्रों में नारियाँ उत्तम कार्य करके अपनी क्षमता, कार्यकुशलता का परिचय दे रही हैं। शिक्षित लड़कियाँ घर की जिम्मेदारियों का निर्वहन बखूबी कर रही हैं। नारी-शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज में दहेज समस्या, पर्दाप्रथा, शिशु हत्या जैसे कुप्रथाओं में कमी आई है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नारी के बिना नर अधूरा है, दोनों के सहयोग बिना परिवार, समाज या देश का विकास संभव नहीं है। किन्तु अभी भी जागरूकता की आवश्यकता है। शहरी क्षेत्रों में तो हालात थोड़े सुधरे हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत अधिक पिछड़ापन है। जब तक गाँवों में जागरूकता नहीं आयेगी, समाज में शिक्षा का संतुलन बिगड़ता ही जाएगा। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

(9) साहित्य और समाज

1. प्रस्तावना– 'अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।'

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। जिस समाज के पास साहित्य का अभाव होता है, वह बर्बर होता है। साहित्य और समाज का सम्बन्ध कहने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी देश के साहित्य का अवलोकन

@MP_BOARD_25 (Telegram)

कर वहाँ की जनता की मनोवृत्ति का शीघ्र ही पता लगाया जा सकता है। यदि जनता शरीर है तो साहित्य उसका प्राण कहा जा सकता है। उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। जनता का चरित्र साहित्य में झलकता है। श्रीमहावीरप्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा था कि 'साहित्य समाज का दर्पण है।' उन्होंने साहित्य को ज्ञान राशि का संचित कोष कहा है। उसे देखकर वहाँ की जनता के भूत और वर्तमान का पता लग जाता है। साहित्य का निर्माण करने वाले साहित्यकारों का इस प्रकार जनता का जीवन से कितना संबंध है, इसका महत्व स्वयमेव प्रतिपादित हो जाता है।

2. साहित्य की भूमिका– कहते हैं, कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली होती है। तलवार से जो काम नहीं हो सकता, वह एक साहित्यकार अपनी कलम से कर सकता है। जयपुर के राजा जयसिंह और उनके दरबारी कवि बिहारी की उक्ति प्रसिद्ध है। राजा जयसिंह अपनी नई वधू पर इतने आसक्त हो गये कि उन्होंने राजकार्य की अवहेलना करना प्रारम्भ कर दी थी। यह बात राज्य के लिए हानिकारक थी। बिहारी को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने इसी संदर्भ में एक दोहे की रचना की और उसे राजा जयसिंह को सुनाया। दोहा इस प्रकार था–

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहीं विकास एहिं काल।
अली कली ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल।।"

दोहे की ध्वन्यात्मक भाषा का राजा जयसिंह पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उन्होंने तुरन्त विलासिता त्यागकर राज कार्य की ओर ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया। यह है एक कवि और साहित्यकार का प्रभाव।

3. साहित्यकार का दायित्व– हमें भली-भाँति विदित हो गया होगा कि साहित्यकार का समाज की उन्नति/अवनति में कितना प्रभाव है। कार्ल मार्क्स ने जो विचारधारा रूस में दी तो वहाँ क्रांति हो गई। मार्टिन लूथरकिंग ने अपने विचारों से पोप के विरुद्ध यूरोप के धार्मिक जगत में आग लगा दी। जयप्रकाश नारायण ने समग्र क्रांति का विचार देकर सत्ता ही पलट दी। इस प्रकार के क्रांतिकारी विचार वालों की समाज को सदैव आवश्यकता बनीं रहेगी।

4. उपसंहार– आज हमें देश में ऐसे लेखकों की आवश्यकता है, जो जनता को शिक्षित करें। साहित्य के साथ-साथ विज्ञान आदि नए-नए क्षेत्रों में भी पुस्तकों की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति करें। यह सब पढ़े-लिखे लोगों का कर्तव्य है। साहित्यकारों को जनजीवन का चित्रण करना चाहिए एवं समाजोपयोगी साहित्य का सृजन करना चाहिए। मुक्तिबोधजी ने – 'मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ' नामक कविता में साहित्य, साहित्यकार एवं समाज के सम्बन्धों पर गहन एवं स्पष्ट विचार व्यक्त किए हैं।

(10) मेरी यादगार रेल यात्रा

जिन्दगी में रेल यात्रा करना हर किसी को रोमांच से भर देता है। हम हमेशा कामना करते हैं कि हमारी यात्रा सुखमयी हो। भारत की लगभग नब्बे फीसदी लोग रेल से सफर करते हैं। मेरी प्रथम रेल यात्रा मेरे लिए यादगार हैं। मैं इसे कभी नहीं भूल सकती हूँ। वह यात्रा मेरे लिए स्मरणीय अनुभव है। मैं महज 9 साल की थी, जब मैंने अपनी प्रथम रेल यात्रा की थी। मैं रेलवे स्टेशन जाने के लिए बड़ी उत्सुक थी। मैं अपने पापा, मम्मी के साथ रेलवे स्टेशन पहुंची थी। बहुत सारे कुली रेलवे प्लेटफार्म पर आवाज लगा रहे थे। पापा ने एक कुली को बुलाकर ट्रेन में सामान रखने के लिए कहा था। ट्रेन रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ी थी। मैं गुवाहाटी से हावड़ा जा रही थी। ट्रेन की बोगी में घुसकर पापा-मम्मी ने सामान अंदर रखा ओर मैं खिड़की के पास वाले बर्थ पर जाकर बैठ गयी।

ट्रेन के खिड़की के बाहर मैंने खूबसूरत दृश्य देखा। जैसे- पहाड़, पेड़, पौधे, हरे-भरे लहलहाते खेत भी देखें। मेरा मन खुशी से झूम उठा और मां न मुझे कहा कि मुझे अपना हाथ ट्रेन के खिड़की से बाहर नहीं निकालना है। फिर जल्द ही मैं मां के पास जाकर बैठ गयी। पास ही के बर्थ में मेरी उम्र की एक लड़की खेल रही थी। मैं उसके पास चली गयी और हम दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी और और हम अपने गुड़ियों के साथ खेलने लगे थे। फिर मां ने लंच के लिए आवाज लगायी। बीच-बीच में ट्रेन की छूक-छूक आवाज मेरे मन को भा जाती थी।

उसके बाद कुछ खिलौने बेचने वाले लोग ट्रेन पर चढ़े थे। मैंने अपने पापा से जिद्द की मुझे नयी गुड़िया दिला दें। पापा को मेरे जिद्द के समक्ष विवश होना पड़ा और उन्होंने खिलौन दिलवाये। खिड़की से बाहर का दृश्य बेहद खूबसूरत था। मैं बहुत उत्सुकता से चारों ओर देख रही थी। क्योंकि यह रेल यात्रा मेरे लिए प्रथम थी और इसकी सारी मीठी यादें मेरे दिल के बेहद करीब है। मेरे लिए यह सफर रोमांच से भरा हुआ था। खिड़की से बाहर की हरियाली बेहद आकर्षक थी और देखने वालों का मन मोह लेती थी। मेरे बर्थ के पास जो लड़की थी उसका नाम रौशनी था। हम दोनों अंताक्षरी खेल रहे थे और उसके बाद हमने लूडो भी खेला था। शाम होने को आयी थी ट्रेन की खिड़कियों से ठंडी-ठंडी

आ रही थी और उसका आनंद हर कोई ले रहा था।
गरमा गर्म कचोरी और समोसे वाला ट्रेन में आ गया था। मजे से गरमा गर्म कचोरी खाये और पापा ने चाय भी ई थी। फिर माँ ने मुझे कहानियों की किताब पढ़ने के लिए ी और मैंने परियों और जादुई वाली कहानियाँ पढ़ी थी। मन उत्साह से भर चुका था। पापा अखबार पढ़ने में ज्यादा न थे। फिर रात होने को आयी और पापा ने ट्रेन पर ही रात ाने का आर्डर दे दिया था। हमने रोटी, सब्जी और मिठाई ी थी। इसके बाद माँ ने बर्थ पर चादर बिछाई और तकिया दिया और मुझे सोने के लिए कहा। मैं रोशनी के साथ मजे रही थी। फिर रात बहुत हो गयी थी और मम्मी का कहना र मैं सोने के लिए चली गयी। सुबह पांच बजे मेरी नींद ी तो देखा पापा चाय की चुस्कियां ले रहे थे। हालांकि मैं छोटी थी, लेकिन मैंने पापा से मांगकर थोड़ी चाय पी ली। र लम्बा था, लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पल भर में ात हो गया।

अपनी रफ्तार से भाग रही थी। सफर में भूख बड़ी लग जाती फिर गरमा गर्म नाश्ता किया और इस बार थोड़ी मैंने कॉफी ी ली।

संहार– थोड़ी देर में ही ट्रेन अपने आखिरी स्टेशन हावड़ा च रही थी। मन उदास था कि सफर का अंत इतनी जल्दी हो ा है, लेकिन यह सफर मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगा। ट्रेन ने आखिरी गंतव्य स्टेशन तक पहुँच गयी। पापा ने कुली वाई और सामान लेने के लिए उन्हें कहा। मुझे दुःख हो रहा लेकिन फिर मम्मी ने कहा जिन्दगी का हर सफर का अंत तो ा है। मुझे उदास नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसे आगे हमें ल-सी रेल यात्रा करने का मौका मिलेगा।

(11) सह-शिक्षा

ावना– नारी और पुरुष दोनों को शिक्षा लाभ करने का ान अधिकार है, आज महिला शिक्षा के विकास के णामस्वरूप बड़ी संख्या में लड़कियों को शैक्षणिक संस्थाओं प्रवेश करते देखा जाता है। आधुनिक युग में शिक्षा के लक्ष्य र दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल गए हैं, इसलिए शिक्षित और ागरूक माता-पिता अपने बेटों और बेटियों को समान रूप से ने के लिए देखते हैं और दोनों को शिक्षित करने की म्मेदारी लेते हैं। नारी शिक्षा के प्रसार को देखते हुए, केवल हिलाओं के अध्ययन के लिए कुछ विशेष संस्थान भी बनाए ये हैं, लेकिन कुछ अन्य संस्थानों में, लड़कों और लड़कियों दोनों को अध्ययन करने का अवसर मिलता है। उन सभी संस्थानों की शिक्षा प्रणाली को सह-शिक्षा कहा जाता है। संक्षेप में, यह समझा जाना चाहिए कि सह-शिक्षा उन शैक्षिक संस्थानों में प्रचलित है, जहाँ लड़के और लड़कियाँ एक साथ शिक्षा लाभ करते हैं।

सह-शिक्षा का अतीत और वर्तमान– यद्यपि प्राचीन भारत में प्राचीन नारी शिक्षा का व्यापक रूप से प्रचलन नहीं था। उस समय नारी शिक्षा की एक बैठक होती थी। उस समय केवल उच्च-जाति वाली महिलाओं को अध्ययन करने का अवसर मिलता था। यहां तक कि गुरुकुल आश्रम में, सह-शिक्षा प्रचलित थी और लड़कियों, लड़कों की तरह, अध्ययन करने के लिए आश्रम में रहते थे। बेशक, इन आवासीय आश्रम स्कूलों में लड़कियों के रहने के लिए विशेष सुविधाएँ थीं और आश्रम के प्रत्येक कार्यक्रम को सख्त नियमों, अनुशासन, अनुशासन और संयम द्वारा नियंत्रित किया जाता था। मध्य युग में, महिलाओं की शिक्षा हतोत्साहित कर रही थी और सार्वजनिक जागरूकता की भारी कमी थी। आजकल महिलाओं की शिक्षा की आवश्यकता को पूरा किया गया है, इसलिए अब यह देखा जा रहा है कि कई लड़कियां अध्ययन कर रही हैं, चाहे वह विशेष स्कूली लड़कियों के लिए स्थापित हों या उन संस्थानों में जहां सह-शिक्षा प्रचलित है।

विभिन्न स्तरों पर सह-शिक्षा– स्वतंत्रता के बाद के भारत में, शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए हैं, स्तर अलगाव के संदर्भ में, उन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्राथमिक विद्यालय। माध्यमिक विद्यालय और उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय हमारे देश के प्राथमिक विद्यालयों में सह-शिक्षा मुख्य आधार है। मध्य स्तर तक यह व्यवस्था बहुत बदल जाती है। आजकल कई लड़कियों के हाई स्कूल और कई लड़कों के हाई स्कूल कई छोटे शहरों और बड़े गांवों में स्थापित किए जा रहे हैं। हालांकि, कई उच्च विद्यालय सह-शिक्षा प्रणाली ग्रामीण क्षेत्रों में लागू हैं। इसी प्रकार, उच्च शिक्षा के लिए प्रमुख शहरों में एक या अधिक महिला कॉलेज हैं। इसके बावजूद, कई प्रतिष्ठित कॉलेजों में सह-शिक्षा अभी भी प्रचलित है। सह-शिक्षा प्रणाली भारत में लगभग विश्वविद्यालयों में प्रचलित है।

सह-शिक्षा के खिलाफ कुछ विचार – यद्यपि आधुनिक युग में महिलाओं की स्वतंत्रता और महिला सशक्तिकरण के बारे में बहुत सारी बातें हुई हैं, लेकिन बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक अभी भी संरक्षणवाद के दायरे में डूबे हुए हैं। उनका यह रवैया

@MP_BOARD_25 (Telegram)

महिलाओं की शिक्षा और सह-शिक्षा दोनों के विपरीत हैं। वे आधुनिक युवा पुरुषों और महिलाओं के नैतिक अपराध के लिए सह-शिक्षा प्रणाली को दोषी मानते हैं। उनके विचार में, सह-शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप, युवा पुरुष और महिंलाएँ शिक्षा की मुख्य धारा से विचलित हो रहे हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे के साथ अंतरंगता प्राप्त करते हैं और विभिन्न सुखों और हंसी के बीच अपने कीमती समय को बर्बाद करते हैं। इस तरह के अपवाद विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालयों के उच्च वर्गों और कॉलेज जीवन के शुरुआती चरणों में प्रचलित हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इस समय लड़के/लड़कियों का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास तेज होता है और उनकी कई गतिविधियाँ मानसिक रूप से अस्थिर होते हैं, उनके विचारों को रूढ़िवादी और संकीर्णतावादी बताकर उन्हें सही ठहराना संभव नहीं है, क्योंकि आज वास्तविक जीवन में, कई स्कूल और कॉलेज के लड़कों और लड़कियों के व्यवहार पर बहुत अधिक नजर रखी जाती है, फिर भी सह-शिक्षा के कारण सभी को गुमराह किया जाता है। यह निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता है। यह छात्रों की बुद्धिमत्ता, मानसिक और भावनात्मक संतुलन, उनके उदार दृष्टिकोण और सबसे बढ़कर, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और माता-पिता के अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना पर निर्भर करता है।

सह-शिक्षा के पक्ष में कुछ विचार- कई के अनुसार, सह शिक्षा के परिणामस्वरूप युवक/युवती के मन में एक दूसरे के प्रति अनुचित जिज्ञासा समाप्त हो जाती है, क्योंकि उनके बीच दूरी/अंतर बनाने के कारण वे अधिक अराजक हो जाते हैं, सह-शिक्षा के परिणामस्वरूप, उन्हें एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानने और संकीर्णता के बंधन से मुक्त होने का अवसर मिलता है। परिणामस्वरूप वे एक-दूसरे की समस्याओं को समझ सकते हैं और उसके अनुसार व्यवहार कर सकते हैं। बेशक लड़के/लड़कियों के मामले में ऐसा कम देखा जाता है। मानसिक परिपक्वता का अभाव इसका कारण माना जाता है लेकिन उम्र के साथ कई युवक-युवती अधिक जिम्मेदार हो जाते हैं।

निष्कर्ष- वर्तमान में, समाज में हर स्तर पर नैतिक गिरावट का प्रसार स्पष्ट है। आजकल, फिल्मों, टेलीविजन और आधुनिक नाटक में बहुत अधिक आक्रामक, अश्लील और मजाकिया दृश्य हैं जो बड़े पैमाने पर युवा समाज को गुमराह करने में मदद कर रहे हैं। इसलिए माता-पिता के लिए उन्हें नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। इस बात में कोई सच्चाई नहीं है कि इस संबंध में सह-शिक्षा हमेशा प्रभावी होगी। दूसरी ओर सोच जाये तो हर जगह लड़कियों के लिए विशेष शैक्षणिक संस्थान स्थापित करना संभव नहीं है। यह इस तथ्य के कारण है बि लड़कियों की आवश्यक संख्या के बिना विशेष शैक्षणिक संस्थान स्थापित करना महंगा है। जब तक शिक्षा संस्थानों अनुशासन और कठोर अनुशासन नहीं होगा और एक स्वस्थ और शैक्षिक वातावरण नहीं बनाया जाएगा, सह-शिक्षा आने वाले दिनों में कई समस्याएं पैदा करेगी।

(122) जीवन में संगीत का महत्व

प्रस्तावना- संगीत हमारे दिमाग को शांत करता है और हमारे शरीर को आराम देता है। यह कला के सर्वोत्तम रूपों में से एक है। संगीत को सुनना उतना ही शानदार अनुभव हो सकता है गायन और भी अधिक प्राणपोषक हो सकता है। संगीत के मौखिक और गैर-मौखिक दोनों रूप हमारी इंद्रियों को सुखदायक प्रभाव प्रदान करते हैं। संगीत के लाभ बेशुमार हैं यहाँ इसके कुछ लाभ हैं, जिनके लिए हमें वास्तव में आभारी होना चाहिए।

संगीत हमारे दिमाग को शांत करता है- संगीत नकारात्मक विचारों और भावनाओं से छुटकारा पाने में मदद करता है। हमारे दिन के दौरान हमें कई परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जो हमारे तनाव के स्तर को बढ़ाते हैं। छोटी-छोटी चीजें जैसे ट्रैफिक जाम में फंसना, दोस्तों/भाई-बहनों/माता-पिता के साथ विचारों का टकराव या अखबार में पढ़ी गई कोई खबर भी तनाव पैदा कर सकती है। संगीत हमें सुकून देने में मदद करता है। यह हमें इन अनावश्यक चीजों को भूल जाता है जो अन्यथा पूरे दिन हमारे दिमाग पर कब्जा कर सकते हैं और काम में बाधा डाल सकते हैं।

जब भी आप कम महसूस कर रहे हों, तो अपने पसंदीदा गाने को चालू करना या अपनी पसंद का संगीत वाद्य बजाना एक अच्छा विचार है। यह आपके मन में अनावश्यक विचारों से ध्यान भटकाकर और आपकी इंद्रियों को शांत करेगा। यह मूड को तुरंत उत्थान कर सकता है।

संगीत शक्ति को एकाग्रता में सुधारता है- अध्ययनों से पता चलता है कि संगीत आपकी शक्ति को केंद्रित करने के लिए बढ़ावा दे सकता है। जैसा कि हम अध्ययन या काम करने के लिए बैठते हैं, हमारे विचार अक्सर भटकते हैं और हम ध्यान बनाए रखने में असमर्थ हैं। इस तरह एक काम जिसे एक घंटे में किया जा सकता है, उसे दो-तीन घंटे या उससे भी अधिक लग सकता है।

हमारे यहाँ और अब में ध्यान केन्द्रित रखने की शक्ति है। यह हमारे दिमाग को भटकने नहीं देता है और इस हमें इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है कि जो कुछ कर रहे हैं, उसके बारे में सोचने के बजाय क्या करें। हमारे ध्यान अवधि को भी बढ़ाता है।

बेहतर स्व छवि बनाता है- संगीत में हमें अपने भीतर से ...की शक्ति है। यह हमें अपने मन की गहरी यादों में ले ...है और हमें यह समझने में मदद करता है कि हम वास्तव में ...हैं और जीवन में हमारा उद्देश्य क्या है? यह हमारी छुपी हुई ...यों का पता लगाने में भी हमारी मदद करता है। इस प्रकार, ...एक बेहतर आत्म छवि बनाने के लिए एक महान साधन के ...में कार्य करता है। यह आगे हमारे आत्मविश्वास के स्तर को ...ने में मदद करता है।

...डर खत्म करता है- हम में से हर एक किसी न किसी ...से निपट रहा है। जबकि कुछ अपने भविष्य के बारे में ...ते हैं, अन्य अपने पिछले घटनाओं के बारे में जोर देते रहते ...लोग विभिन्न प्रकार की आशंकाओं से भी ग्रस्त होते हैं जैसे ...त सड़क पर चलने का डर, अकेले घर पर रहने का डर, ...ई जहाज से यात्रा करने का डर, किसी सामाजिक कार्यक्रम ...भाग लेने का डर/घबराहट।

...कि इन आशंकाओं में से कुछ क्षणिक हैं, अन्य अंतर्निहित ...कठिन हैं। संगीत भय का सामना करने में मदद कर सकता ...और आपको उन स्थितियों के दौरान बेहतर महसूस करा ...ता है जो आपको चिंतित करती हैं। ऐसे में अपने ईयरफोन ...ने पास रखें। उन्हें प्लग करें और अपने को विचलित करने ...लिए अपना पसंदीदा संगीत बजाएँ और ऐसी परिस्थितियों में ...त रहें।

...त ताकत प्रदान करता है- संगीत लोगों को खुद के ...थ-साथ आसपास के लोगों से बेहतर जुड़ने में मदद करके ...त प्रदान करता है। यह बेहतर आत्म अभिव्यक्ति में ...यता करता है। एक मौखिक रूप से और साथ ही गैर ...खिक रूप से संगीत के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। ...त उन चीजों के लिए मैथुन तंत्र के रूप में काम करता है ...हें हम जाने नहीं दे सकते। ऐसी कई चीजें हमारे ऊर्जा के ...र को नीचे रखती है और हमारी उत्पादकता में बाधा डालती ...संगीत हमें इस तरह की भावनाओं से निपटने में मदद करता ...और इस तरह शक्ति प्रदान करता है। यह हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है और हमारे नियंत्रण की भावना को बढ़ा सकता है। यह स्वस्थ भावनाओं का समर्थन करता है और इसलिए विभिन्न शारीरिक के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना को बढ़ाता है।

निष्कर्ष- संगीत की सबसे अच्छी बात यह है कि इसे कभी भी और कहीं भी सुना जा सकता है। आप सार्वजनिक परिवहन द्वारा या गाड़ी चलाते समय या जब आप जिम में व्यायाम कर रहे हों या घर पर आराम करने की कोशिश कर रहे हों, तब आप इसे सुन सकते हैं। बस अपने पसंदीदा ट्रैक को चालू करें और सकारात्मकता के साथ खुद को उत्साहित करें। स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने के लिए संगीत विभिन्न स्तरों पर काम करता है।

(13) बुजुर्गों की देखभाल

परिचय- 'वृद्ध' एक ऐसी अवस्था है जब मनुष्य की उम्र बढ़ जाती है, वह ऐसे पड़ाव में पहुँचता है जहाँ वो जवानी के समय जितना स्फूर्ति वाला नहीं होता है। बुजुर्ग इस अवस्था में असहाय से हो जाते हैं, जो अपना खुद का ख्याल पूरी तरह नहीं रख पाते हैं। ऐसे समय में उन्हें देखभाल की जरूरत होती है। क्योंकि शरीर में युवा अवस्था जैसी शक्ति नहीं होती है।

वृद्ध सेवा का महत्व- वृद्ध होना हमारे समाज की हकीकत है जिस अवस्था में एक समय के बाद हर किसी इन्सान को गुजरना पड़ता है जो उम्र बढ़ने पर प्राप्त होती है। वृद्धावस्था में समय के साथ-साथ शरीर क्षीण होने लगता है। बुढ़ाने में कई बीमारियों से शरीर घिर जाता है, ऐसे में शरीर असहाय सा हो जाता है। जिन माँ-बाप ने बच्चों को जन्म दिया और पाला-पोसा बूढ़े होने पर उनको बच्चों द्वारा देखभाल की जरूरत होती है। ऐसे समय में उनकी सेवा करना ईश्वरीय सेवा के समान माना जाता है।

वृद्ध सेवा और आज का दौर- आज के आधुनिक दौर में जहाँ सब अलग-अलग रहते हैं। नौकरी की वजह से बुंजुर्गों की देखभाल नहीं हो पाती और कई बुजुर्ग भी अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वह उनकी हर बात माने उनके हिसाब से सब काम करें, जिस वजह से विचारों में मतभेद दिखाई पड़ता है और सब अलग हो जाते हैं।

परिवार में संयुक्त रूप अब कम दिखाई पड़ता है। बच्चे अपने परिवार के साथ अलग रहते हैं। बुजुर्ग माँ-बाप को खुद अपना ख्याल रखना पड़ता है। दोनों पीढ़ी के विचारों और सोच में विभिन्नता दिखाई पड़ती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

जहाँ वृद्ध बदलते वक्त के साथ नहीं चलना चाहते व बच्चों को अपने हिसाब से नियंत्रित करना चाहते हैं, वहाँ परेशानी होती है और बच्चों को भी बड़ों का हर काम में सलाह देना व अनुभव वश निर्देशन देना बंदिश लगता है। दोनों पीढ़ियों की सोच में मेल-मिलाप नहीं हो पाता है।

वृद्ध सेवा सत्कर्म समान– सेवा करना मानवी सत्कर्म के रूप में मानी जाती है। मनुष्य जब वृद्ध होता है तो उसे देखभाल की जरूरत होती है। ऐसे में वृद्धों की सेवा करना परोपकार है। प्राचीन काल से ग्रंथों में भी लिखा गया है बेसहारा की सेवा करना सच्ची सेवा होती है।वृद्ध होने पर माँ-बाप को सहारे की जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में वृद्ध माँ-बाप की सेवा ईश्वरीय सेवा के बराबर होती है। वृद्धों के पास अपने अनुभव का ज्ञान होता है, जिसे ग्रहण करने से जीवन में ज्ञान में बढ़ोत्तरी ही होती है।

वृद्धों का सम्मान करना उनकी जरूरत पड़ने पर सेवा करना अच्छे कर्मों में गिने जाते हैं, जो ईश्वर की सेवा जैसे होते हैं जिससे ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है। वृद्धों के पास ज्ञान का भंडार होता है। अनुभव के रूप में सही-गलत की बाते होती हैं जो मार्गदर्शन स्वरूप होती हैं।

निष्कर्ष– वृद्ध होना मनुष्य की एक अवस्था ही है जो उम्र बढ़ने पर भुगतनी पड़ती है। जीवन का सच है वृद्ध होना। वृद्ध अवस्था में सहायता की जरूरत पड़ती है और जरूरतमंद की सेवा करना महापुण्य का काम होता है। ऐसा माना जाता है कि वृद्धों की सेवा ईश्वर की सेवा होती है।

(14) जल ही जीवन है / जल का अपव्यय

1. प्रस्तावना– ''जल ही जीवन है''। यह कथन सत्य है। मानव तथा अन्य प्राणियों व वनस्पति का अस्तित्व जल पर ही निर्भर है। मनुष्य बिना भोजन के रह सकता है, लेकिन बिना जल के जीवन सम्भव नहीं। पशु-पक्षियों को भी जल चाहिए। वनस्पति का विकास जल पर निर्भर है। सृष्टि में आदिकाल से आज तक जल का महत्व माना गया है। प्राचीनकाल में नदियों व अन्य जल-स्रोतों की पूजा की जाती थी, जो इस बात का प्रतीक है कि जल महत्वपूर्ण प्राकृतिक देन है।

2. जल के उपयोग– जल के अनेक उपयोग हैं। जल का मुख्य उपयोग पीना है, प्यास मिटाना है। जल पाचन-क्रिया में सहायक होता है। जल के कारण ही खेती होती है। भारत जैसे देश में तो खेती को 'मानसून का जुआ' माना गया है। जो फसलें पैदा की जाती हैं, उसके लिए सिंचाई के लिए जल आवश्यक है। जल स्नान करने, वस्त्र धोने के काम आता है। मकान बनाने के काम में भी जल का उपयोग किया जाता है। बिना जल के भोजन बनाना (पकाना) सम्भव नहीं है।

3. जल के लिए निर्भरता– जल के लिए हम प्रकृति पर निर्भ हैं। जल वर्षा द्वारा प्राप्त होता है। यदि भरपूर बारिश हो जाए तो जल का अभाव नहीं रहता है। यदि बरसात कम हो या न हो तो जल-संकट बढ़ जाता है। विगत वर्षों में वर्षा कम होने से मालवा एवं राजस्थान के कई भागों में जलसंकट गहरा गया था पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया था। जल संग्रहण के प्राकृति स्रोत नदी, तालाब, पोखर सूख गए थे। भूमिगत जलस्तर पाताल छू गया था। कई वर्षों से हमने कुएँ, बावड़ी का उपयो बन्द कर दिया था।

अब हमें जल-स्रोतों का महत्व समझ में आया। नदियों स्थान-स्थान पर स्टॉप-डेम बनाकर जल रोकने के प्रया आरम्भ हुए हैं। पुराने कुओं, बावड़ियों का उपयोग प्रारम्भ हु है। नदियों व तालाबों को गर्मी में गहरा किया गया है। भू-जल स्तर ज्यादा नीचा न जाए, इस तरफ ध्यान देना चाहिए। जल से ही विद्युत उत्पादन किया जाता है। विद्युत उत्पादन द्वार औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलता है। उद्योगों के गतिशील रह से उत्पादन बढ़ता है। कृषि की अधिक उपज के लिए जल चाहिएं। कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन बढ़ने से देश का आर्थि विकास होता है। आर्थिक उन्नति होने से लोगों का जीवन-स्त ऊँचा उठता है।

4. जल का दुरुपयोग– दुःख की बात है कि जल का दुरुपयोग भी बढ़ा है। नदियों, तालाबों व कुओं में कचर फेंककर उन्हें हमने ही प्रदूषित किया है। कई जल-स्रोतों के नष्ट करने में मानव का ही हाथ है। जिस वर्ष वर्षा कम हो, उस वर्ष जल का दुरुपयोग रोका जाना चाहिए। कम से कम जल क उपयोग करके अपने दैनन्दिनी कार्य पूरे करने चाहिए। पेयजल का संरक्षण अति आवश्यक होता है।

वर्षा अधिक हो, इसके लिए आवश्यक है कि वनों का संरक्षण हो, वनों का विकास हो। जिस क्षेत्र में वन काट लिए गए हैं वहाँ वर्षा कम हुई है। जिन भागों में सघन वन होते हैं, वहाँ व ज्यादा होती है। अत: अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जा चाहिए। वन-विनाश को रोका जाना चाहिए। भूमि के 3 प्रतिशत भाग पर वन होना चाहिए। अभी मात्र 23 प्रतिशत भा पर ही वन हैं। जल संकट से बचने का एकमात्र उपाय वन-विकास है।

5. उपसंहार– यह जान लेने के बाद कि 'जल ही जीवन है', जल का उपयोग ठीक रीति से करना चाहिए। जल-स्रोतों के माध्यम से जल संग्रहण किया जाना चाहिए। जल प्रदूषित नहीं किया जाना चाहिए। जल के महत्व को समझ कर उसका संरक्षण करना अति आवश्यक है। जल के अभाव में सृष्टि का सर्वनाश सम्भव है। जल को देवता मानकर उसका सम्मान एवं संरक्षण करें।

(15) विवाह में फिजूलखर्ची अथवा विवाह समारोह में बढ़ता दिखावा और फिजूलखर्ची

शादी तो बस ऐसी हो कि न कभी किसी की हुई और न होगी। लोग हमेशा उसे याद रखें। खाना बढ़िया हो, सजावट अच्छी हो, नाच ऐसा हो कि ऋत्विक, शाहरुख और सलमान को मात कर दे। दुल्हन-दूल्हा सुंदर और स्मार्ट हों। दुल्हन और दूल्हे के जेवर कपड़े, बड़े ब्रांड और मशहूर डिजाइनर्स ने बनाए हों। वेन्यू शहर का सबसे बड़ा फाइव स्टार या किसी मशहूर आदमी का फार्म हाउस या किसी एमपी की कोठी हो तो सोने में सुहागा। जब सब कुछ ऐसा होगा तो जाहिर है कि शादी में परोसे जाने वाले व्यंजन भी एक से बढ़कर एक होंगे ही। हो सकता है कि भारत भर में मशहूर खाने-पीने की चीजों को परोसा जाए। और ऐसी शादी में सभी जाने-माने नेता, अभिनेता, उद्योगपति न हो ऐसा कैसे हो सकता है। ये एक ऐसी काल्पनिक शादी का वर्णन किया है, जिसकी चाह आजकल के अधिकांश जोड़ों की होती है। मशहूर शादियों की जो खबरें आती हैं, उनमें कुछ इसी तरह की बातें होती हैं। मीडिया इनके बारे में रात-दिन दिखाता और छापता है। इन्हें किसी आदर्श की तरह पेश किया जाता है। यही नहीं, इस तरह की शादियों में धूम-धड़ाका, आतिशबाजी और कि यहां तक कि गोलीबारी भी जमकर होती है। कई बार इसमें लोगों की जान चली जाती है। और देखते ही देखते खुशी का माहौल मातम में बदल जाता है। शायद पूरी दुनिया में शदियाँ इस तरह से नहीं होती होंगी, जैसी हमारे यहां होती हैं।

एक तरफ हम दहेज का विरोध करते हैं, जिसके कारण माता-पिता नहीं चाहते कि उनके यहां लड़की पैदा हो। भ्रूण हत्या का एक बड़ा कारण दहेज ही है। दूसरी तरफ इस तरह की शादियों को दिखाकर युवाओं के मन में भी ऐसा दिखने और करने की इच्छा पैदा की जाती है। ऐसा कैसे हो गया है कि सादगी आजकल कहीं दिखाई नहीं देती। सादगी का मतलब है कि उस आदमी के पास कुछ दिखाने लायक नहीं है। होता तो क्या न दिखाता। सादगी माने मजबूरी। यों गांधी का नाम जपने में भी हम पीछे नहीं रहते। नाम जपने में आखिर जाता ही क्या है। इधर नाम जपा, उधर परिवार की तथाकथित प्रतिष्ठा के नाम पर शादी में खूब लुटाया। किसकी हिम्मत है जो रोक ले। मेरा पैसा मैं जानूं किसी से कुछ मांगा हो उधार लिया हो तो कोई कुछ कहे भी। लेकिन आज भी बहुत से लोग ऐसे निकलते हैं जो इस तरह के फालतू दिखावे को पसंद नहीं करते। हाल ही में दिल्ली की एक अदालत में एक केस की सुनवाई चल रही थी। इसमें शादी में चलाई गई गोली के कारण दूल्हे के अंकल की मृत्यु हो गई थी। इसी सिलसिले में दोषी को सजा सुनाते हुए माननीय जज ने कहा कि शादियों में गोली चलाने का फैशन बढ़ता जा रहा है। इससे बरातियों या बरात देखने आए लोगों की जान चली जाती है। माननीय जज ने कहा कि शादियों में दिखावे के लिए बेशुमार पैसा खर्च किया जाता है। हमारे यहां की शादी को अगर बिग फैट वेडिंग कहा जाता है,तो क्या यह तारीफ की बात है। दुनिया में भारत में सबसे अधिक भूखे लोग रहते हैं। यहां भूख से सबसे अधिक लोग मरते हैं। यह आश्चर्य की बात है कि क्यों हमारे यहां के नीतियां बनाने वाले लोग और बुद्धिजीवी इस बारे में नहीं सोचते। इन अवसरों पर अतिथियों की संख्या क्यों नहीं निर्धारित की जाती। ऐसे आयोजन के समय एक डिश परोसने का नियम क्यों लागू नहीं किया जा सकता। ऐसे आयोजनों में खाने की भी खूब बरबादी होती है। माननीय जज की चिंता बिलकुल सही है। उनकी तरह ही बहुत से लोग सोचते हैं, मगर कुछ कर नहीं पाते। करें भी कैसे ? भारत में शादी का व्यवसाय अरबों रुपये का है। इसमें सिर्फ खान-पान ही नहीं-मेंहदी, लेडीज संगीत, बैचलर पार्टी आदि न जाने कितनी तरह की चीजें शामिल हैं। शादी के सीजन के दौरान इन दिनों शादी में उपयोग में आने वाली चीजों को बेचने के लिए ब्राइडल मेलों का चलन भी बढ़ चला है। रणवीर सिंह और अनुष्का शर्मा की फिल्म बैंड बाजा बारात शादी की विभिन्न गतिविधियों और इवेंट मैनेजमेंट कम्पनियों के बढ़ते जोर का एक छोटा-सा उदाहरण थी। एक समय में शादी बहुत निजी मामला था मगर अब वह कम्पनियों के हाथों में आ गया है। हालांकि हम सभी जानते हैं कि एक बार शादी के पंडाल से बाहर निकलने के बाद शायद ही किसी को याद रहता हो कि शादी कैसी थी। मगर लोगों को लगता है कि जितना ज्यादा खर्च होगा, जितना अधिक दिखावा होगा, शादी उतनी ही बेहतर मानी जाएगी। इसे गलतफहमी के अलावा और क्या कहा जा सकता है। यही नहीं, वही पुराना तर्क ज्यादा याद आता है कि जिसके पास खर्चने को है वह तो खर्च कर देता है। मगर जिसके पास नहीं है, उसका रास्ता बेहद कठिन हो जाता है। उससे भी वही मांग होती है। मांग शुरू भी यहां से होती है कि आने वालों की खातिर आप ठीक से करिए। इस ठीक की कोई परिभाषा नहीं होती। जितना भी किया जाए, कम होता है। बरातियों में कभी कोई तो कभी कोई रूठा ही रहता है और इसकी सारी जिम्मेदारी लड़की वालों पर डाल दी जाती है। पहले एक दावत से काम चल जाता था। अब तो खाने के अलावा चाट-पकौड़ी, तरह-तरह के पेय, फल, उत्तर भारतीय, दक्षिण

@MP_BOARD_25 (Telegram)

भारतीय, पंजाब, बंगाल, मुगलई, शाकाहारी, मांसाहारी, पश्चिमी देशों आदि के खाने एक ही शादी में परोसे जाते हैं। कई बार तो हालत यह हो जाती है कि कोई एक-एक चम्मच भी खाए तो पेट पूरा भर जाए मगर खाने की चीजें खत्म न हों। इसलिए ऐसा कानून बनाया जाए जहां शादी में एक ही डिश परोसने की इजाजत हो। जो इस कानून को न माने फिर वे कोई भी हों, उन पर कठोर कार्रवाई की जाए।

(16) जीवन में बचत का महत्व

जीवन में बचत अथवा संचय का उतना ही महत्व है जितना कि आमदनी का। मनुष्य की आमदनी कितनी ही अधिक हो, परंतु यदि उसमें संचय की प्रवृत्ति नहीं है तो उसे समय-समय पर अनक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भारत में प्राचीन काल से ही बचत करना अच्छी आदतों में से एक माना जाता है। यह सत्य भी है, क्योंकि आज की गईबचत भविष्य में हमारे काम अवश्य आती है। बचत छोटी भी हो सकती है और बड़ी भी, परंतु बचत करनी अवश्य चाहिए।

अधिकतर लोग बचत को सिर्फ धन से संबंधित मानते हैं परंतु ऐसा नहीं है। बचत धन की भी होती है और प्राकृतिक संसाधनों की भी। हम सभी का यह दायित्व है कि हम सभी हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित उपयोग ना करें।

इसका उदाहरण इस प्रकार से है कि यदि आप अपने घर में बिजली के उपकरणों का उपयोग आवश्यकता पड़ने पर ही करते हैं और आवश्यकता पूरी होने के पश्चात् उस उपकरण को बंद कर देते हैं तो यह भी बचत की श्रेणी में ही आता है।

आप अपने घर से कम दूरी तक जाने के लिए गाड़ी अथवा मोटरसाइकिल जैसे वाहनों का उपयोग ना करें। इसके स्थान पर आप पैदल जा सकते हैं। यदि दूरी थोड़ी ज्यादा है तो आप साइकल का उपयोग भी कर सकते हैं। इससे भी प्राकृतिक संसाधन जैसे पेट्रोल और डीजल की बचत होगी।

विद्यार्थी को अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। विद्यार्थी के लिए उसका समय ही उसका धन है। इसीलिए उसे समय की बचत करनी चाहिए। समय की बचत करके उस बचाए गए समय को अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। यह भी बचत का एक प्रकार है।

अब बात आती है धन से संबंधित बचत की। धन को बहुत सावधानी से खर्च करना चाहिए। धन कमाना और धन को संभालना इन दोनों में अंतर होता है। यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक धन कमाता है, परंतु उस धन को संभालने की क्षमता यदि उसमें नहीं है तो वह अपना सारा धन नष्ट कर देता है। इस प्रकार के व्यक्तियों को भविष्य में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अधिक नहीं कमाता, परंतु धन का संचय बहुत अच्छे से करता है तो वह भविष्य की परेशानियों से आसानी से निपट सकता है।

हमारे देश भारत में बचत की परंपरा बहुत पुरानी रही है। हमारे यहां लोगों में बचत करने की आदत बचपन से ही आ जाती है। जब बच्चा छोटा होता है, तभी से वह अपने पैसे गुल्लक में संभालने लगता है, जिसके फलस्वरूप वह भविष्य में भी बचत करता है।

बचत का अर्थ यह भी नहीं है कि आप जरूरत के सामानों में भी कटौती करें। यदि कोई व्यक्ति जरूरत के सामानों में भी अनावश्यक कटौती करता है तो यह बचत नहीं कंजूसी है। जरूरत के सामानों में फल, सब्जियां, अनाज, दूध और उससे संबंधित वस्तुएं आती हैं।

भारत में जीवन बीमा कंपनियों की सफलता से हमें यह ज्ञात होता है कि भारत के लोग कितने अच्छे से बचत करते हैं। बचत के धन से अधिकतर भारतीय अपने और अपने परिवार का जीवन बीमा करते हैं। इस धन का उपयोग बाद में राष्ट्र के कल्याण हेतु ही किया जाता है। बचत की आदत हर किसी में होनी चाहिए, क्योंकि यह हमें भविष्य में सुरक्षा प्रदान करती है। भविष्य में संकट के समय हमारी बचत ही हमारे लिए वरदान सिद्ध होती है। बचत चाहे अमीर हो या गरीब या फिर बच्चा हो या वृद्ध हर व्यक्ति को करनी चाहिए।

@MP_BOARD_25(Telegram)